

स्वीट *Sixteen*

सुधीर मौर्य

Read
Read Publication

सर्वाधिकार सुरक्षित है - इस पुस्तक के किसी भी अंश अथवा सामग्री को बिना अनुमति के पुनर्प्रकाशित या प्रसारित नहीं किया जा सकता। प्रकाशक से बगैर किसी लिखित अनुमति प्राप्त किये, इसकी नकल बनाना, फोटोकॉपी या अन्य सूचना संबंधी माध्यमों से प्रकाशित करना कानूनन अपराध है।

ISBN : 978-81-908664-9-1

कॉपीराइट : लेखकाधीन

संस्करण : प्रथम 2017

मूल्य : 130 रुपये

प्रकाशक : रीड पब्लिकेशन

मुद्रक : आज़ाद ऑफसेट, इलाहाबाद

Published by : Read Publication

Head Office : 202 Mahaveer vihar, behind GCC club, Hot Case, Meera Road, East Thane, Mumbai - 401107 (Maharashtra)

Reginal Office : 1L/3J Tilak nagar, Allahpur, Allahabad - 211006

Email : readpublication@gmail.com , readpublication@hotmail.com

Mobile : 09455400973, 09580399729, 09452313306, 09453730608

Title : Sweet Sixteen

Author : Sudheer Maurya

Cover & Text Design : Dinesh Kushwaha & Creative Team

लेखक सुधीर मौर्य का संक्षिप्त परिचय

जन्म : 01/11/1979 स्थान : कानपुर (उ०प्र०)

माता : श्रीमती शकुंतला मौर्य

पिता : स्व० श्री राम सेवक मौर्य

पत्नी : श्रीमती शीलू मौर्य

शिक्षा : अभियांत्रिकी में डिप्लोमा, इतिहास और दर्शन से स्नातक,
प्रबंधन में पोस्ट डिप्लोमा

सम्प्रति : इंजीनियर एवम् स्वतंत्र लेखन

कृतियां : उपन्यास - 'गली एक कानपुर की', 'अमलताश के फूल',
'माई लास्ट अफेअर', 'वर्जित', 'मन्नत का तारा'.

कहानी संग्रह - 'अधूरे पंख', 'कर्ज और अन्य कहानियां', 'एंजल ज़िया'.

अन्य - 'हो न हो' (नज़्म संग्रह), 'किस्से संकट प्रसाद के' (व्यंग उपन्यास),

'देवलदेवी : एक संघर्ष गाथा' (ऐतिहासिक उपन्यास),

पहला शूद्र (पौराणिक फ़िक्शन उपन्यास).

पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन :

खूबसूरत अंदाज़, अभिनव प्रयास, सोच विचार, युगवंशिका, कादम्बनी,
बुद्धभूमि, अविराम, लोकसत्य, गांडीव, उत्कर्ष मेल, जनहित इंडिया, शिवम, अखिल
विश्व पत्रिका, रूबरू दुनिया, विश्वगाथा, सत्य दर्शन, डिफेंडर, झेलम एक्सप्रेस, जय
विजय, परिंदे, मृग मारीचिका, प्राची, मुक्ता इत्यादि

वेब प्रकाशन :

गद्यकोश, स्वर्गविभा, काव्यांचल, इंस्टेंट खबर, बोलो जी, भड़ास, हिमधारा,
जनहित इंडिया, परफेक्ट खबर, वटवृक्ष, देशबंधु, अखिल विश्व पत्रिका, प्रवक्ता, नाव्या,
प्रवासी दुनिया, रचनाकार, अपनी माटी।

आभार

इस पुस्तक की कहानी का ताना-बाना मेरे दिमाग में एक लड़की से सोशल साइट पर बात करते हुए बना।

उस लड़की ने मुझसे कहा, “क्या मैं कोई ऐसा उपन्यास लिख सकता हूँ जिसका नायक दलित हो?”

उसका सवाल खत्म होते ही मैंने उसे जवाब दिया, “हाँ क्यों नहीं!”

फिर कुछ और बातों के बाद उसने पूछा, “क्या कोई कहानी आपके दिमाग में है?”

मैंने कहा, “अभी तो नहीं।”

इस बात के तकरीबन तीन महीने बाद ये उपन्यास पूरा करने के बाद मैंने उसे पढ़ने के लिए भेजा। तो यह कहानी उसे बेहद पसंद आई पर उसने मेरे द्वारा दिए गये उपन्यास के शीर्षक ‘टूटते खंडहर’ को एडिट करके ‘स्वीट सिक्सटीन’ कर दिया। अब ये उपन्यास रीड पब्लिकेशन से अपने इसी शीर्षक ‘स्वीट सिक्सटीन’ नाम से प्रकाशित हो रहा है।

आभार मेरी उस सोशल साइट दोस्त को जिसकी वजह से मैं एक भीषण सामाजिक मुद्दे पर एक कहानी लिख सका।

समर्पण

उन सभी दोस्तों को,
जिनके नाम लिख पाना मेरे वश में नहीं

नशे का नशतर

“न जाने क्यों आज आपको देखने की इच्छा दोपहर से ही हो रही थी पर शाम ढलते-ढलते मेरी यह इच्छा, इच्छा ही रही। न जाने क्यों मुझे कभी-कभी लगता है कि आपके दिल का दरवाज़ा भी आपके कमरे के दरवाज़े की तरह ज़्यादातर बन्द ही रहता होगा। पर मैं यह दुआ करती हूँ कि मेरी यह सोच गलत निकले और आपके दिल का दरवाज़ा मेरे लिए खुला हुआ हो। . अच्छा मेरे लिए एक दुआ करोगे .. बस इतनी सी दुआ कि मेरी यह दुआ क़बूल हो जाये। अच्छा, अब आप काफी थक गये होंगे, आराम करें। मैं आऊँगी आपका सिर सहलाने, ख़ाब मैं। आज रात ओके. बाय. लव यू.”

- Sixteen ... स्वीट Sixteen

आज जब मैं रात की स्याही बिखरने पर अपने रूम पर आया तो लाईट जलाते ही यह खत मुझे तह किया हुआ कमरे के फर्श पर पड़ा हुआ मिला। मैंने खत को पढ़ा .. एक बार नहीं बल्कि कई बार .. मैंने अन्दाज़ा लगाया कि इसे दरवाज़े और फर्श के बीच की झिरी से कमरे में धकेला गया होगा। पर किसने धकेला होगा यह अन्दाज़ा लगाना मुमकिन नहीं था। सिक्सटीन, स्वीट सिक्सटीन .. इससे यही अन्दाज़ा लगता था कि यह खत लिखने वाली कोई लड़की है। कोई टीन एज .. पर कौन? वैसे भी जिस बिल्डिंग में, जिस कैम्पस में मैं रहता था वहाँ न जाने कितनी टीन एजर्स वाले कैम्पस थे। उन टीन एजर्स में खत लिखने वाली टीन एज को ढूँढ निकालना उतना ही मुश्किल था जितना कि भूसे में से कोई सुई को ढूँढ निकालना। खैर! मैंने खत को किसी किताब के पन्नों के बीच में दबाया। खत लिखने वाली लड़की के बारे में सोचते हुए न जाने कितनी देर खिड़की पर खड़े होकर नीचे कैम्पस में तितलियों की तरह उड़ रही टीन एजर्स लड़कियों को देखता रहा। और ये अंदाज़ा लगाने की नाकाम कोषिष करता रहा कि उनमें खत लिखने वाली लड़की कौन होगी!

लाल रंग की सायकिल चला रही उस लड़की को मैं नाम से जानता था। एक दो बार मैं जब कैम्पस से उसके पास से गुज़रा तो उसे उसकी एक फ्रेंड ने

संजू कहकर पुकारा। मैंने मन ही मन अंदाज़ा लगाया कि उसका नाम संजना होगा और शायद इसीलिए उसका फ्रेंड सर्किल उसे संजू नाम से पुकारता होगा। जब संजू साइकिल चलाते वक्त अचानक ऊपर मुझे देखकर मुस्कराई तो न जाने क्यों मेरे मन में ख्याल उभरा - 'कहीं वो खत लिखने वाली लड़की संजू तो नहीं.?'

उस रात मैं जब बिस्तर पर सोने के लिये गया तो मेरा साथ नींद की जगह उस खत ने ले लिया। मैंने आँखें बन्द करके सोने की कोशिश की तो मेरी आँखों में संजू की वो खूबसूरत आँखें घूमने लगीं जिससे उसने आज शाम साइकिल चलाते वक्त मुझे देखा था। अगर मुझे खत लिखने वाली लड़की संजू थी तो उसने उस खत के आखिरी शब्द बिल्कुल सच लिखे थे - "Sixteen ... स्वीट Sixteen"

यकीनन संजू सोलह साल की खिलती हुई कचनार की कली थी और कलियाँ हमेशा स्वीट ही होती हैं। संजू के विचारों में उलझा हुआ मैं न जाने रात के किस पहर तक अपनी करवटों से बिस्तर पर सिलवटें डालता रहा। पर कहते हैं - व्यक्ति पर कितना भी दर्द टूट पड़े, व्यक्ति कितना भी किसी भी यादों में खोकर बेगाना हो जाय पर रात में एक घड़ी ऐसी भी आती है जब नींद उसे अपने पहलू में ले ही लेती है। मेरे साथ भी ऐसा ही कुछ हुआ। रात का वो न जाने कौन सा पहर था जब मैं संजू सी खिलती कली की यादों की महक से आज़ाद होकर नींद में तकिया लगाकर सो गया। मैं उससे पहले कभी भी खिड़की पर किसी लड़की को देखने के लिए खड़ा नहीं हुआ था। पर शायद वो खत में लिखे अक्षरों की कसक थी या संजू की नाव सी आँखों की कशिश, जो मैं उसे देखने के लिए खिड़की पर अनायास ही आ गया था। मैं जानता था संजू व्हाइट शर्ट और स्काई ब्लू स्कर्ट में सुबह के इस पहर स्कूल जाती है। पर शायद मैंने इससे पहले उसमें इतनी दिलचस्पी नहीं ली थी इसलिए मुझे उसके स्कूल जाने का फिक्स टाइम नहीं मालूम था। मैं काफी देर उसे देखने का लालच लिए खिड़की पर खड़ा रहा पर वो मुझे कहीं नज़र नहीं आई। या तो वो मेरे खिड़की पर आने से पहले ही स्कूल जा चुकी थी या फिर आज वो स्कूल नहीं गई थी। मैं थक कर **दरीचे** से हट गया और अण्डरवियर लेकर बाथरूम में घुस गया।

तैयार होने के बाद जब मैं कॉलेज जाने के लिए बिल्डिंग कैम्पस से रोड की ओर बढ़ रहा था तब भी मेरी आँखें संजू की तलाश में थीं। मेरी आँखों की यह तलाश उस वक्त अधूरी ही रही और मैं ऑटों में बैठ गया। ऑटों ज्यों ही चलने को हुआ वैसे ही एक 'टीन एज' लड़की भाग कर ऑटो में चढ़ी और मुझसे

‘एक्सक्यूज़मी’ कहते हुए ठीक मेरे बगल में बैठ गई। उस सीट पर वो चौथी पैसेजर थी और मैंने खिसक कर उसे बैठने की जगह दे दी। वो लड़की भी मेरे ही बिल्डिंग कैम्पस की थी और संजू की हम उम्र और कचनार की खिलती कली की तरह स्वीट। पर उस लड़की का मैं नाम नहीं जानता था। पहले दिल किया कि उससे उसका नाम पूछ लूँ पर मैंने अपनी इस इच्छा को अधूरा छोड़ दिया। वो लड़की बीच रास्ते में ही उतर गई।

ऑटो वाले को पैसा देते वक्त उसने एक स्माइल मेरी तरफ दी। उसकी इस स्माइल का मैं कोई जवाब दे पाता उससे पहले ही वह पलटकर चल दी। चलती ऑटो से मैंने उसे पीछे से देखा तो उसकी पतली कमर और भरे-भरे नितम्ब उसके स्वीट होने के साथ-साथ बहुत सेक्सी होने की भी गवाही दे रहे थे। उस समय मुझे अपने रूम पर पहुँचने की जल्दी थी। मुझे उम्मीद थी कि मुझे खत लिखने वाली लड़की मेरा इंतज़ार कर रही होगी। या फिर मेरा इंतज़ार करके थक के एक प्रेम भरा खत उसने ज़रूर मेरे कमरे में दरवाज़े और फ़र्श के बीच की झिरी से मेरे लिए पोस्ट किया होगा।

ऑटो से उतरकर मैं तेज़ कदमों से अपने रूम की ओर बढ़ रहा था कि मेरे कदम ठिठक कर रुक गये। अचानक संजू ने मेरे सामने आकर अपनी सायकिल की ब्रेक लगा दी थी। अपना दायाँ पैर ज़मीन पर टिकाकर उसने मुस्कराते होंठों से सिर्फ एक पल के लिए देखा और फिर उसने अगले ही पल पैडल मारकर सायकिल को आगे बढ़ा दिया। मैं अपनी जगह पर स्तब्ध खड़ा उसे जाते हुए देखता रहा। गुलाबी रंग की हॉट पैंट में संजू की रोमहीन और गोरी जांघों को मैं देर तक देखना चाहता था पर मेरी ये इच्छा पूरी न हो सकी। संजू सायकिल के पैडल को तेजी से मारती हुई बिल्डिंग के पीछे जाकर मेरी आँखों से ओझल हो गई।

मेरी उम्मीद को उस वक्त झटका लगा जब मैं दरवाज़े का लॉक खोलकर रूम के अन्दर आया। मेरी नज़र ‘स्वीट सिक्सटीन’ के लिखे खत को रूम के फ़र्श पर तलाशती रही पर आज ये तलाश मुकम्मल नहीं हुई। निराश होकर मैं फ़ेश होने के लिए बाथरूम में घुस गया। लगातार बज रही डोर बेल की वजह से मैं कमर पर तौलिया लपेटे हुए बाथरूम से भागकर कमरे के दरवाज़े पर आया और दरवाज़ा खोलते ही अपने हाल पर शरमा कर झेंप गया। इस वक्त मेरे ऊपर की देह पर कोई कपड़ा नहीं था और तौलिया छोटा होने की वजह से मेरी जाँघें और टाँगे नग्न थी। मेरी इस हालत से बेखबर वो मेरे बगल से होते हुए भीतर आ गई

ओर कुर्सी पर मजे से बैठते हुए बोली, “क्या आप बोर नहीं होते? मैंने कभी आपको कैम्पस में एंजाय करते नहीं देखा!”

एक नज़र खुद पर डालने के बाद मैंने एक गहरी नज़र उस लड़की पर डाली जो आज सुबह मेरे साथ ऑटो में थी। इस वक्त वो गोल गले वाली पिंक टीशर्ट और ब्लू जींस पहने हुए थी। रबड़ की स्लीपर पहने उसके पाँव बेहद गोरे थे और उसके नाखूनों में लाल रंग की नेल पॉलिश उसके पैरों को बेहद आकर्षक बना रहे थे। उसकी पतली कमर और भरे नितम्ब उसकी आकर्षक देह के मुख्य हिस्से थे। हाँ उसके स्तन जरूर उभरे नहीं थे या फिर टीशर्ट थोड़ा बड़े साइज होने की वजह से मुझे उसके स्तनों का उभार सही तरह से नज़र नहीं आ रहा था। मैं उसके रूप और देह के बनाव, गठान में उलझा मूकदर्शक की तरह खड़ा था कि अचानक वो बोल पड़ी -

“अगर आप मेरे सामने इस कपड़ों में अनकॉफर्टबल फील कर रहे हो तो चेंज कर लो। बाई द वे, मैं ये कहने आई थी कि बाहर की खुली हवा का भी लुत्फ लेने का हक है आपको।” फिर एकाएक कुर्सी से उठकर वो दरवाजे की ओर बढ़ते हुए बोली, “ओके मैं चलती हूँ बाहर संजू मेरा इंतजार कर रही है।”

वो लड़की दरवाजा खोलकर जा चुकी थी और मैं उसका नाम तक नहीं पूछ सका था। उसने कहा बाहर संजू उसका इंतजार कर रही है। क्या उसे संजू ने भेजा था? क्या संजू चाहती थी मैं परिसर में बाहर आऊँ? संजू के ख्याल ने मुझे थोड़ा बेचैन कर दिया। सच कहूँ तो उस घाम मैं वास्तव में कमरे से उतरकर बिल्डिंग कैम्पस में टहलने लगा था। मैं जिस बिल्डिंग में रहता था उसे ‘बी विंग’ कहते थे और सामने वाली बिल्डिंग ‘ए विंग’,

इन बिल्डिंग्स और इनमें रहने वालों के बारे में बाद में लिखूँगा। पहले तो संजू और उस लड़की के बारे में लिखना चाहता हूँ जो अभी-अभी मेरे रूम आई थी।

‘ए विंग’ की खुली सीढ़ियों पर संजू और मेरे रूम में आने वाली लड़की आपस में बातें करती हुई बैठी थी। मैं अपनी बिल्डिंग के पास से ही उन्हें देख रहा था। संजू और उस लड़की ने शायद मुझे उन्हें देखते हुए देख लिया था। संजू की बगल में बैठी उस लड़की ने मुझे हाथ से वहाँ आने का इशारा किया और फिर वो दोनों टहलते हुए उस ओर चली गईं जिस ओर बिल्डिंग के केयर टेकर सर्वेन्ट्स के क्वार्टर्स थे। मैं कांपते कदमों के साथ ज्यों ही सर्वेन्ट्स क्वार्टर्स के बगल से गुजरा किसी ने मेरा हाथ पकड़ लिया। चौंक कर मैंने देखा ये वही लड़की थी जो अभी

कुछ देर पहले मेरे रूम में आई थी। मेरी जिंदगी में किसी लड़की ने पहली बार मेरा हाथ पकड़ा था। मैंने जब उससे अपना हाथ छुड़ाने की कोशिश की तो मेरी कलाई पर उसकी पकड़ थोड़ी सख्त हो गई। मैंने इधर-उधर देखा कि कहीं कोई हमें देख तो नहीं रहा है उस वक्त मेरा चेहरा लगभग पीला पड़ चुका था।

मेरी हालत पर वो मेरा हाथ छोड़ते हुए बोली, “मेरा नाम वाटिका है कोई शूर्पनखा नहीं, जो डर के मारे तुम्हारी हालत टाईट हुई जा रही है।” और तभी एक लड़की उसके पीछे से आकर -

“और मेरा नाम संजना है।” संजू आगे बढ़कर मुझसे बोली और फिर वाटिका की ओर देखकर “क्यों परेशान कर रही हो बेचारे को शायद ये शहर में नया है।”

“अरे नहीं संजू पिछले तीन महीनों से तो हम इसे देख रहे हैं फिर ये शहर में नया कैसे हुआ?” वाटिका ने संजू की बात पर अपनी प्रतिक्रिया दी। और फिर तुरंत ही - “आप सुबह कॉलेज ही जाते हैं न! . और कौन से स्टैंडर्ड में हैं?”

“जी, वाटिका जी मैं कॉलेज ही जाता हूँ और मैं बी.ए. फर्स्ट ईयर का स्टूडेंट हूँ.” मैंने सकुचाते हुए कहा। मेरी बात सुनकर मेरे सामने खड़ी वो दोनों टीन एज लड़कियाँ हँस पड़ी। और मैं उन्हें हँसते हुए देखकर ये सोचने लगा कि मैंने ऐसा क्या कह दिया जो ये दोनों यूँ ही खिलखिलाकर हँसने लगी।

काफी देर हँसने के बाद जब संजू की हँसी रुकी तब वो मेरे सीने पर अपनी नाजुक उंगली रखते हुए बोली, “ये क्या हमारे सामने भारतीय नारी की तरह जी-जी करके बात कर रहे हो! अरे ये कोई वाटिका जी नहीं है. इसे हम सब दोस्त कहते हैं. और मुझे सब संजू . आज से तुम भी हमें इसी नाम से पुकार सकते हो। आखिर अब तुम भी हमारे दोस्त हो।”

मैंने अपने सीने पर रखी संजू की उंगली पर नज़र दौड़ाई - वह बिना बढ़े नाखून वाली कोमल गोरी उंगली। मेरे मन में ख्याल आया, संजू ने इसी प्यारी उंगली से मुझे लेटर लिखा होगा। मैं इन ख्यालों में डूबा खामोश था जब वाटिका ने भी अपनी उंगली मेरे सीने पर रखकर कहा, “है न.!”

“क. क. क्या .?” मैं हकलाया।

“दोस्त” वाटिका ने कहा।

“हां” मैं उन दोनों खूबसूरत लड़कियों की खूबसूरत उंगलियों को आँखें नीचे करके अपने सीने पर देखते हुए बोला।

‘हुर्रं रेऽऽ’ वो दोनों लगभग चिल्लाकर बोली।

“फिर अब अपना नाम भी बता दो।” संजू ने कहा।

“कुणाल” मैंने धीरे से कहा। और फिर उन दोनों ने मुझसे बारी-बारी से हाथ मिलाते हुए कहा, “वेलकम कुणाल”

संजना सचान (संजू) और वाटिका पाण्डेय (बंटी) दोनों सोलह साल की बिल्कुल कचनार की खिलती कली की तरह थी। जिनके स्तनों और नितम्बों को दुनिया बनाने वाले ने मानों उनकी कमर से गोश्त निकाल कर लगाया था। जिन्होंने मुझ गाँव से आये हुए एक साधारण लड़के से आगे बढ़कर दोस्ती की थी। खैर,

वो दोनों लड़कियाँ कुछ ही दिनों मेरी इस तरह दोस्त बन गई थी जैसे लड़के के लड़के और लड़कियों की दोस्त लड़कियाँ होती हैं। मेरे कहने का मतलब ये है कि वो दोनों ही टीन एजर्स मुझसे बेहद खुलकर बातें करती और किसी भी चीज को शेयर करने में नहीं हिचकती। अब मैं कहानी बढ़ाऊँ उससे पहले संजू, बंटी और अपने परिवार के बारे में कुछ बताता चलूँ और साथ ही साथ उन बिल्डिंग्स के बारे में भी जहाँ इस वक्त हम रह रहे थे। ये बिल्डिंग्स तीन ब्लाको में बटी थी - A, B और C, C ब्लाक विशेषकर चुने हुए विधायकों के लिए आवंटित थे। हालांकि उनमें से कई विधायक वहाँ नहीं रहते थे। जब वो प्रदेश की राजधानी में आते तो पॉश इलाकों में बनवाये गये अपने आलीशान बंगलों में या तीन सितारा, पांच सितारा होटल में ठहरते। सरकार की तरफ से मिले इन फ्लैट्स में वे कभी-कभार कुछ इस तरह से आते, जैसे चुनाव जीतने के बाद वो चुनाव जिताने वाली जनता के बीच कभी धोखे से पहुँच जाते।

हमारे क्षेत्र के विधायक जो ऊपरी तौर पर हर वक्त खुद को दलित और गरीब घोषित करते रहते थे, वो भी राजधानी में आने पर अपने आलीशान बंगले में ही ठहरते थे। खैर उन विधायकों की इतनी दरियादली भी या फिर समाज में ये दिखाने की गरज कि वो सिर्फ दलित नहीं हैं बल्कि दलितों के सहायक हैं। इस वजह से उन्होंने ये फ्लैट उस दलित को रहने के लिए दे दिया था यानी कि मुझे।

ये फ्लैट मुझे रहने के लिए मिला। इसमें सिर्फ विधायक की दरियादली शामिल नहीं थी बल्कि मेरे पिताजी की चिरौरी भी शामिल थी। मेरे पिताजी विधायक के गाँव की हवेली में बचपन से ही काम करते आ रहे थे। विधायक की ये हवेली मेरे गाँव से कोई सात-आठ किलोमीटर दूर एक कस्बे में स्थित थी। मैंने अपनी इंटर तक की पढ़ाई उसी कस्बे में पूरी की थी और अब बी.ए. करने के लिए शहर आया था और विधायक जी की मेहरबानी से अब मैं इस वी.आई.पी. रिहायशी कालोनी का हिस्सा था। वाटिका पाण्डे यानी बंटी मेरी ही बिल्डिंग ‘A’

ब्लाक में रहती थी। हलांकि उसके पापा विधायक थे और बाकी विधायकों की तरह वो भी अपने किसी बंगले में रहते थे, पर बंटी बेहद आज़ाद ख्याल की लड़की थी इसलिए वो इसी उम्र में अपने माँ-बाप से अलग रहती थी। जबकि वो अभी सिर्फ़ इण्टरमीडिएट की स्टूडेंट ही थी। यहाँ एक बात और बताते चले कि बंटी के पापा जहाँ से विधायक है वो क्षेत्र मेरे वाले विधायक के क्षेत्र से सटा हुआ है। कहने का मतलब बंटी भी तकरीबन उसी एरिया की रहने वाली थी जिस एरिया का मैं। अगर सीधे तौर पर कहे तो मैं और बंटी बेसिकली एक ही जिला के रहने वाले थे। 'B' ब्लाक उन 'A' क्लास के आफिसर्स की रिहायश थी जो आई.ए.एस. या पी.सी.एस. रैंक के थे। संजू के पापा आई.ए.एस. थे, जो पास के किसी शहर में शायद उप जिलाधिकारी थे। वो कभी-कभी यहाँ आते थे और संजू अपनी मम्मी के साथ इस फ्लैट में रहती थी। संजू की मम्मी क्लब और नारी समितियों की सदस्य थी। जिससे वो समाज सेवा की वजह से पूरे दिन घर से बाहर रहती और देर रात तक ही घर लौटती। संजू अपने माँ-बाप की इकलौती संतान थी इसलिए अपने फ्लैट में वो अक्सर अकेले ही होती।

इस कैम्पस में एक 'C' ब्लाक भी था जिसने छोटे-छोटे क्वार्टर्स बने हुए थे। इन क्वार्टर्स में बाकी दो ब्लॉक्स के रख-रखाव और साफ-सफाई के लिए चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी रहते थे। इनमें से एक परिवार मेरे दूर के रिश्ते में थे पर मैं उनसे दूरी बनाकर रहता था। ऐसा इसलिये क्योंकि शायद मुझ पर विधायक निवास में रहने की वजह से खुद को बड़ा समझने का फितूर चढ़ गया था। खैर ये फितूर का मेरे दिल में आना लाज़िमी था क्योंकि अक्सर साधारण आदमियों को जब बड़े लोगों के अच्छे खाने के जूठन भी मिलने लगती है तो वे खुद को बड़े आदमियों के बराबर समझने लगते हैं। यूँ अगर देखा जाये तो बंटी, संजू और मेरी उम्र तकरीबन बराबर थी या यूँ कहे तो, इण्टरमीडिएट के सेकेण्ड ईयर में पढ़ने वाली बंटी और संजू सोलह साल की थी और बी.ए. फर्स्ट ईयर में पढ़ने वाला मैं सत्तरह साल का।

उस शाम जब मैं 'C' ब्लाक मतलब केयर टेकर के क्वार्टर्स के पीछे संजू और बंटी ने मुझसे दोस्ती की तो मैंने भी उनसे दोस्ती कर ली। हम तीनों जल्द ही एक दूसरे के फ्लैट में भी जाने लगे। वैसे भी हमारे खाली पड़े फ्लैट में हमें कोई रोकने-टोकने वाला नहीं था। मैंने बंटी और संजू दोनों से ही दोस्ती की थी पर संजू के लिए मेरे दिल में कुछ और जज़्बात करवट ले रहे थे। संजू के लिए मेरे करवट लेते जज़्बातों की वजह वो खत था जो मैंने अब तक संभाल कर रखा था। मैं और मेरा दिल अब तक यही मानते आ रहे थे कि मुझे वो मुहब्बत भरा

खत संजू ने ही लिखा था। मेरे लिए संजू के हाव-भाव इस बात की ताकीद कर रहे थे कि वो मोहब्बतनामा संजू की नर्म कोमल उंगलियों द्वारा ही लिखा गया होगा। संजू और बंटी दोनों ही कमसिन और बेहद खूबसूरत होने के साथ-साथ आधुनिक और मॉडर्न भी थी। वो लड़कों के बारे में बातें करते वक्त कुछ अलग तरह से चटखारे लेती थी और कभी-कभी मुझसे रोमांटिक बातें करती थी। जबकि हमें दोस्त बने अभी बहुत कम दिन हुए थे। मैं गाँव से आया हुआ एक ऐसा लड़का था जो टीवी और वीडियो में तमाम खूबसूरत हीरोइनों को देखकर बड़ा हुआ था। अब जबकि उन हिरोइनों की तरह ही खूबसूरत लड़कियाँ मेरी दोस्त बन चुकी थी तो मेरी कच्ची उम्र के अंतर्मन में भी कुछ अरमान पलने लगे थे।

संजू और बंटी दोनों ही मेरी दोस्त थी और दोनों ही मुझसे रोमांटिक बातें करती थी। उन दोनों में कौन ज्यादा खूबसूरत है इसका निर्णय ईश्वर भी नहीं कर सकता था तो फिर मैं भला ये निर्णय कैसे कर पाता। अब भले ही बंटी और संजू दोनों ही मेरी दोस्त हो पर मैं संजू के करीब आने की कोशिश कर रहा था। संजू के मेरे करीब आने की वजह वो खत था जो 'स्वीट सिक्सटीन' ने मुझे लिखा था। मैंने कई बार वो खत संजू को दिखाकर उससे पूछने का ये मन बनाया कि क्या ये मुहब्बत भरे अल्फाज़ उसी ने लिखे हैं पर हर बार ये सोचकर कि अगर वो खत बंटी ने लिखा हो तो गड़बड़ हो जायेगी और मैं चाहकर भी संजू से पूछ न सका। पर मैं ये जानना चाहता था कि क्या वाकई वो खत संजू ने लिखा है और इसलिए मैंने उसकी नोटबुक से उस की खत की हैंड राइटिंग की तस्कीद करने की सोची। अपनी इसी कोशिश के लिए उस दिन मैं कॉलेज से हॉफडे ही वापस आ गया था। संजू ने एक दिन पहले ही ढलती शाम में हजरत गंज बहती हवाओं से उड़ रही अपनी कर्ली जुल्फों को संवारते हुए कहा था, "कृणाल कल मैं स्कूल नहीं जाऊँगी क्योंकि कुछ फ्रेंड्स मुझसे मिलने आ रही हैं।"

मैं जानता था संजू अपने घर पर ही होगी। तन्हा या फिर अपनी सहेलियों के साथ। बीते दिनों में मैं संजू के घर पर इतनी बार जा चुका था कि अब उस टीन एज लड़की से मिलने के लिए उसके घर पर जाने में मुझे कोई झिझक नहीं होती। संजू घर पर अकेली थी और शायद अभी-अभी उसने नहाया था, हलांकि इस वक्त दोपहर के दो बज रहे थे। दो-तीन बार डोर बेल बजाने के बाद उसने दरवाजा खोला।

उसने हल्के पीले रंग की बेहद ढीली-ढाली शर्ट पहनी हुई थी जो उसके कमर से होते हुए नितम्बों के नीचे लटक रही थी। उस शर्ट के नीचे उसकी

मखमली जांघें और पिंडलियाँ एकदम बेलिबास थी। अपने कर्ली बालों में फंसी पानी की बूंदों को वह हाथ में लिए गुलाबी तौलिये से पोंछते हुए मुझे देखकर मुस्कराई।

“आंटी घर पर है?” मैंने हर बार की तरह पूछा। हलांकि आज मेरी नज़र इतनी बेशर्म हो गई थी कि संजू के जिस्म से हट ही नहीं रही थी।

“वो तो सुबह से ही अपने सोशल वर्क में निकल गई।” कहते हुए उसने पानी से भीगी हुई तौलिया को जिससे उसने अपने जिस्म को पोंछा था, मेरे कंधे पर बेबाकी से डालकर आदमकद आईने के सामने जाकर खड़ी हो गई।

संजू के जिस्म की महक से महकती उस तौलिया को अपने गले में लपेटकर मैं उसके पीछे जाकर खड़ा हो गया। आईने में नज़र गड़ा कर मुझे अपने साथ खड़ा पाकर वो अचानक पलटकर मुझे देखने लगी। वो अपनी एड़ियों पर इतनी तेजी से घूमी कि उसके पीली शर्ट के अन्दर छुपे हुए उरोज मेरे सीने से रगड़ गये। ये पहला अवसर था जब किसी लड़की के वक्ष मेरे शरीर के किसी अंग के स्पर्श में आये थे। संजू मेरे इतने करीब खड़ी थी कि अब भी उसके ठोस स्तन मेरे सीने से हल्का सा स्पर्श कर रहे थे। उसके गले में पानी की कुछ बूंदें मोतियों की तरह चमक रही थी और कुछ मोती उसकी कर्ली जुल्फों में फूल जैसे फंसे हुए थे। संजू के लम्स उसकी निहायत खूबसूरती और उसके जिस्म के बनाव गठाव ने मुझे ख़ामोश कर दिया था। सच कहूँ तो मैं कुछ कहना ही नहीं चाहता था। मैं तो बस देखना चाहता था उस हुस्न की देवी को जो मेरे इतने करीब थी कि जिसके करीब रहने को कैम्पस का हर लड़का मन्न्ते मांगता था। मैंने लाख कोशिश की अपने होंठों से संजू की बात का जवाब देने की पर मेरे लफ़्ज मेरे गले में ही दफन होकर रह गये।

“ओ.के. मैं लगाती हूँ।” कहकर संजू वहाँ से टीवी की ओर चली गई। जैसे ही संजू का जिस्म मेरे जिस्म से अलग हुआ मैं सूखे पत्ते सा कांप उठा। संजू ने वी.सी.आर. में कैसेट डालकर उसे टीवी से कनेक्ट कर दिया और फिर मुझे नीची नज़रों से देखते हुए अपने बेड पर तकिये के सहारे लेट गई। टीवी पर फिल्म स्टार्ट हो गई थी। मेरी आँखें पहली बार जवां जिस्म को यूँ नग्न देख रही थी। उस फिल्म में जवां जिस्मों की अनोखी हरकतों ने मेरी देह में आग की चीटियाँ उतार दी थी। मैंने देखा इस वक्त संजू का सीना बड़ी तेजी से ऊपर नीचे हो रहा था और उसकी आँखें आधी खुली और आधी बंद है। अचानक उसने अपनी बाहें मेरी ओर फैला दी। उसकी शर्ट की आस्तीने सरक कर कोहनी के ऊपर चली गई और उसकी मदभरी बाहें दमक उठी। मैंने एक नज़र टीवी पर चल रही फिल्म पर डाली और फिर न जाने कब बिस्तर पर आ गया। संजू की फैली हुई बाहें मेरे गले का

हार बन गई और हमें टीवी में चल रही फिल्म को देखने की फुर्सत ही नहीं मिली। उस दिन मैं संजू की राइटिंग उसकी किसी नोटबुक से देखना चाहता था, जिससे मैं स्वीट सिक्सटीन के लिखे खत की पहचान कर सकूँ पर उस स्वीट सिक्सटीन के बदल का रोम-रोम अब मुझे पहचानने लगा था।

उस दिन के बाद मैंने और संजू ने एक-दूसरे को कई बार बिना कपड़ों के प्यार किया। और जब मैं संजू सी खूबसूरत लड़की को अपनी जिंदगी में पाकर हवाओं पर बैठा आसमान की सवारी कर रहा था और मेरी जिंदगी स्वीट सिक्सटीन के साथ हर पल स्वीट सपने देख रही थी तभी स्वीट सिक्सटीन की पहेली वापस उलझ गई।

दोपहर ढल रही थी। बेहद नीरस भी थी। न जाने क्यों आज मैं कॉलेज नहीं गया था। सुबह से अब तक का वक्त कभी खिड़की के पास खड़े होकर कैम्पस के नजारे तो कभी टीवी देखते हुए कट रहा था। पर अब ये दोपहर न जाने क्यों ठहर गई थी और मुझे ऐसा लग रहा था जैसे उसका एक-एक पल सदियों में बदल गया हो।

मैं उस ठहरी दोपहर से उकता कर नीचे आ गया और मेरे कदम अपने आप 'A' ब्लाक की सीढ़ियों की ओर बढ़ गये। मेरे ये बड़े कदम 'A' ब्लाक के फ्लैट नम्बर तीन के सामने जाकर ठहर गये। एक कहावत है - 'व्यक्ति को अपने पैर उतने ही फैलाने चाहिये जितनी चादर हो।' पर मैं ये शायद भूल चुका था। संजू और बंटी से हुई दोस्ती के बाद मैं खुद को उनके बराबर मानने लगा था। मैं अपने जमीनी हालात को कहीं दूर छोड़कर आसमान के सफर में चलने लगा था। मेरा ऐसा करना बेजवह भी नहीं था, इसकी वजहें मौजूद थीं। उस कैम्पस में रहने वाला हर शख्स रईस था और फिर जबकि मेरा निवास भी उसी कैम्पस में था तो यह कामयाबी का फितूर मेरे सिर पर चढ़ गया और बहुत कम उम्मीद थी कि मैं खुद को इस फितूर से दूर रख पाता। संजू और बंटी ने मुझसे दोस्ती करके मेरे पैरों को चादर से बाहर निकालने की आज्ञा दी। संजू के जिस्मानी आकर्षण ने मेरे पाँव जमीन पर न रहने दिये और मैं सब कुछ भूलकर उस **नोखे दोषीजा** के दूधिया पाँव का प्रेमी बन गया।

उम्र के उस मोड़ पर मेरा साहित्य से कोई वास्ता नहीं था। अब जबकि मेरा साहित्य से कोई सम्बन्ध नहीं था तो फिर से सवाल ही पैदा नहीं होता कि मैंने प्रेमचंद की कहानी 'नशा' पढ़ी है। अगर उन दिनों मैंने उस महान कहानीकार

की कहानी 'नशा' पढ़ ली होती तो यकीनन ये कहानी इतनी आगे नहीं जाती। या यूँ कहूँ तो मेरी कोई कहानी ही नहीं होती। खैर, मैं उस दोपहर की बात कर रहा था जब मैं संजू की **देहयास्त्रि** के आकर्षण पाश में बंधा उसके दूधिया पाँवों का प्रेमी बन चुका था पर उस दोपहर न जाने कौन सा नशा मेरे सिर था।

संजू के फ्लैट का दरवाजा बाहर से बंद था जो इस बात की **ताकीद** कर रहा था कि संजू इस वक्त अपने फ्लैट में मौजूद नहीं है। संजू के इस तरह फ्लैट में न मिलने से मेरे चेहरे की मायूसी में इज़ाफ़ा हो गया था और 'A' ब्लाक की सीढ़ियाँ उतरते वक्त मैं अपने पैरों में थकान महसूस करने लगा था। मैं थके कदमों से अपने फ्लैट की ओर बढ़ा पर सिर पर उस वक्त जो नशा था उसने मुझे अपने फ्लैट की जगह बंटी के फ्लैट के सामने पहुँचा दिया था।

दूसरी डोर बेल पर दरवाजा खुला। दरवाजा खोलने वाली बंटी ही थी। अपनी बांहों को उठाकर उसने कंधे पर फैले बालों का जूड़ा सिर पर बांधते हुए उसने मुस्कराकर मेरा स्वागत किया। जब उसने अपनी बाहें ऊपर उठाई तो स्लीवलेस टीशर्ट में उसकी रोमहीन आर्मपिट चमक उठी और उसकी इस चमक की चकाचौंध से चौंकते हुए उसके पीछे-पीछे चलते हुए फ्लैट के अंदर आ गया था। इस वक्त उसने स्लीवलेस व्हाइट टीशर्ट और गहरे लाल रंग की मिनी स्कर्ट पहन रखी थी। ये मिनी स्कर्ट बंटी की कमर में इलास्टिक के सहारे सख्ती से चिपकी हुई थी और उसकी चुस्त टीशर्ट भी उसके जिस्म पर चिपकी थी। इस वक्त बंटी की देह का हर हिस्सा अपने आकार के साथ नुमाया हो रहा था। कि एकाएक वह बोली "फिल्म देखोगे?"

इसे अपनी दुर्बलता कहूँ या बंटी के थिरकते नितंबों की मादकता या फिर संजू के दूधिया पाँव को आज दोपहर न देख पाने की कसक। मेरे होंठों से अस्पष्ट स्वर फूट पड़े, "हाँ लगाओ।"

और फिर वही हुआ जो उस दोपहर संजू के फ्लैट पर हुआ था फर्क बस इतना था आज संजू की जगह बंटी ने ले ली थी। और उस नीरस दोपहर को बंटी के जिस्म की मादक सुगंध ने रंगीन बना दिया। मुझ पर इस रंगीनियत का भरपूर नशा हुआ। अब मुझे इस 'नशे का नशतर' अक्सर लगता था। कभी बंटी के साथ कभी संजू के साथ।

रेशमी पर्दे के पीछे का सच

रेशमी पर्दे पर **कतानियत** के चित्र देखते हुए दिन गुजर रहे थे। उस कैम्पस में मेरे निवास के तकरीबन छः सात महीने बाद ये रूमानी चित्र और भी दिलकश हो गये थे। नया साल दस्तक दे रहा था और सारा कैम्पस इस नये साल के इस्तकबाल के लिए मचल रहा था। बंटी और संजू जो पिछले दो-तीन दिन से कहीं बाहर गई थी वो वापस आ गई थी। जाते वक्त मैंने उनसे पूछा था कि वो कहाँ जा रही हैं? तो उन्होंने कहा था कि कुछ फ्रेंड्स के साथ घूमने की ट्रिप है और वे नये साल के आने से पहले आ जायेंगी।

बंटी और संजू के आने से कैम्पस के इस माहौल में चार चांद लग गये थे। मैं बंटी और संजू दोनों के साथ ही रूमानियत का खेल, खेल रहा था पर मेरी पहली पसंद संजू ही थी। इसकी वजह शायद यह थी कि संजू ही वो पहली लड़की थी जिसने मुझे जिस्मानी सुख दिया था और मैं उसे ही पहला 'लव लेटर' लिखने वाली अनजान स्वीट सिक्सटीन समझता था। हम तीनों जब भी कभी इकट्ठा होते तो हमने कभी भी अपनी बातों से ये जाहिर नहीं होने दिया कि हम सिर्फ दोस्त नहीं रहे बल्कि दोस्ती की सारी हदें लांघ कर बड़ी बेबाकी से हमबिस्तरी कर रहे थे जबकि बंटी समझती थी कि संजू सिर्फ मेरी दोस्त है और यही गलतफहमी संजू को भी थी। और मैं .. मैं उन दोनों खिलती कलियों की खुशबू से कुछ यूँ तरबतर था कि मुझे न अपना होश था न दीन-दुनिया का।

वो तीस दिसम्बर की बेहद ठण्ड वाली घाम थी जब बंटी और संजू मेरे फ्लैट में आ गई थी। आज दोनों ने बिल्कुल एक जैसे कपड़े पहने हुए थे। मैरून कलर के स्वेटर और कार्बन कलर की जींस। यहाँ तक उनके दुधिया पाँव में बिल्कुल एक जैसे व्हाइट शूज़ थे। मैं उन्हें देखकर अभी इसी सोच में था कि अगर आज मौका मिले तो मुझे किसके साथ वक्त बिताना चाहिये कि तभी संजू बोल उठी - “कुणाल हमने कल का प्लान थोड़ा चेंज कर दिया है।”

उसकी बात को मैं समझ नहीं पाया और मेरी ये नासमझी मेरी आँखों में देखकर बंटी ने संजू की बात का अर्थ कुछ यूँ बताया - “कुणाल हमने सोचा है कि हम न्यू ईयर सेलिब्रेशन इस भीड़-भाड़ से दूर कहीं शांत जगह पर करें.”

“हाँ कुणाल इसलिये हम कल शाम अमौली के पास एक फार्म हाउस पर चलेंगे और वहीं होगा अपना न्यू ईयर सेलिब्रेशन।” संजू ने कहा।

“पर यहाँ जो कैम्पस में तैयारी हुई है वो!” मैंने अपनी दुविधा बताई।

“अरे हम केवल तीन ही तो यहाँ से जा रहे हैं बाकी लोग तो यहीं सेलिब्रेशन करेंगे।” संजू ने हँसते हुए कहा।

“तो ठीक है कुणाल” बंटी कहा, “कल शाम तुम तैयार रहना, थोड़ा स्मार्ट बनकर .. अभी हम जाते हैं हमें कुछ तैयारियाँ करनी है।”

“ओके, ठीक है.” मैंने मुस्कराकर कहा।

और दोनों एक साथ ‘गुड बाय’ कहकर जाने लगी। कि तभी दरवाजे पर संजू ने रुककर मेरी ओर मुस्कराकर कहा, “और हाँ कुणाल एक बैग में चेंज करने के लिए कुछ कपड़े जरूर रख लेना।”

संजू की इस बात से मेरे रोम-रोम में सिहरन फैल गई और जब तक मैं सामान्य हुआ वे दोनों वहाँ से जा चुकी थी। 31 दिसम्बर के दिन मेरे पाँव जमीन पर नहीं थे। ये अब तक मैंने या तो फिल्मों में देखा था या फिर कहानियों में पढ़ा था जिसमें पार्टी की रंगिनियाँ, बड़े होटल या फार्म हाउस में परवान चढ़ती है। मैं ये सोच-सोच कर रोमांचित था कि आज रात मैं ऐसे ही एक रंगीन जश्न का हिस्सा बनने जा रहा हूँ। मैंने आज रात के जश्न के लिए अपने लिए दो ड्रेस सेलेक्ट की। एक ड्रेस मुझे संजू ने गिफ्ट की थी और दूसरी बंटी ने। संजू वाली ड्रेस को मैंने बैग में पैक करके रख दिया और जिसे बंटी ने दी थी उसे मैं पहन कर फार्म हाउस पर जाने वाला था।

यकीनन वक्त नहीं ठहरा, वो न कभी ठहरा है और न कभी ठहरेगा। ये जरूर पार्टी में जाने की मेरी बेताबी होगी जो मुझे लग रहा था कि वक्त ठहर गया है। पार्टी में जाने के लिए तैयारियों के चलते मैं कॉलेज भी नहीं गया था और अब मुझे लग रहा था जैसे गयासुद्दीन तुगलक के लिए कभी दिल्ली दूर हुई थी वैसे ही आज की शाम मुझसे दूर थी। जैसे किसी छोटे बच्चे को किसी त्यौहार या फंक्शन में नये कपड़े पहनने की ललक होती है। मैं आज उसी ललक के चलते नहाने के बाद बंटी के दिये हुए कपड़े पहन लिये।

अब नये कपड़े पहनने से भी कभी वक्त की चाल तेज हुई है. नहीं न! और इसी वक्त को काटने की गरज से मैं पैट की जेबों में अपने हाथ डाले हुए प्लैट से निकलकर नीचे कैम्पस में टहलने लगा था। इस वक्त बहुत कम लोग उस कैम्पस में दिखाई दे रहे थे। बस एक दो लोग ही। शायद आज सब के सब नये

साल के इस्तकबाल के कहीं न कहीं तैयारियों में मसरूफ हो। मैंने एक नज़र 'A' ब्लाक की उन सीढ़ियों पर डाली जहाँ अक्सर बंटी और संजू बैठकर गुफ्तगू करती है। फिर मैं उस 'C' ब्लाक की ओर बढ़ गया जहाँ बाकी दो ब्लाक के केयरटेकर लोग रहते हैं और जहाँ मेरी दोस्ती बंटी और संजू से हुई थी।

जैसा कि मैंने पहले ही कहा इस 'C' ब्लाक में रहने वाला एक परिवार मेरे दूर के रिश्ते में था। मैं जब से वहाँ रहने आया था मैं अपने उन रिश्तेदार के यहाँ सिर्फ एक-दो बार ही गया था, वो भी सिर्फ रस्म के तौर पर। सच तो ये था कि मैंने अपना स्टेटस उन लोगों के स्टेटस से काफी ऊपर समझ लिया था। मेरा इरादा आज भी उनके घर जाने का नहीं था। मैं तो बस वक्त गुजारने की गरज से कैम्पस का यूँ चक्कर काट रहा था। पर जब उनके क्वार्टर के सामने से गुजरा तो खिड़की से अन्दर का दृश्य देखकर रूक गया। मेरे उन रिश्तेदार के जिम्मे सुबह और शाम दो वक्त पूरे कैम्पस में झाड़ू मारने का काम था। वो अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ 'C' ब्लाक में बने सर्वेंट क्वार्टर में रहते थे। उनके दो बच्चों में एक लड़का था नौ-दस साल का और एक लड़की बारह-तेरह साल की। वो दोनों बच्चों भी पढ़ने जाते थे पर कहाँ, मैं नहीं जानता। न ही मैंने कभी पूछा था। यहाँ तक मैं उन दोनों बच्चों के नाम भी नहीं जानता था। हाँ मैं अपने उन रिश्तेदार का नाम जानता था। उनका नाम बृज लाल था और मैं रिश्तेदारी की मर्यादा की वजह से उन्हें चाचा कहता था हलांकि उन्हें इस सम्बोधन से बुलाना मुझे हरगिज अच्छा नहीं लगता था।

मैं अभी खिड़की से अन्दर देख ही रहा था कि अपने छोटे भाई और एक किसी और लड़की के साथ हँसी-ठिठोली कर रही काका की लड़की ने मुझे देख लिया और देखते ही तुरन्त बोली, “अरे आईये न भाई . वहाँ क्यों खड़े हैं!” उसके साथ बैठी लड़की जो अब तक किसी बात पर हँसे जा रही थी। उसने भी शांत होकर मेरी ओर देखा और फिर सामने आकर खड़ी हो गई। सलवार कमीज पहने उस लड़की ने अपने सिर के ऊपर दुपट्टा बांध रखा था। ठीक वैसे ही जैसे मुस्लिम लड़कियाँ बांधती है। मैंने सिर्फ एक नज़र उसे देखा और मेरी आँखों से दिल का सम्पर्क होते ही मेरे दिल ने मेरे कान में हौले से कहा - ‘ये लड़की सिर्फ लड़की नहीं बल्कि एक परी है। संसार की सर्वाधिक सुन्दर परी।’ अगरचे उसका रंग सांवला था। हो सकता था मैं उस समय चाचा की लड़की को ‘नहीं, फिर कभी’ कहकर वहाँ से चला जाता पर सिर पर हिजाब बांधे उस लड़की की नाव सी आँखों ने मुझे उस क्वार्टर के अन्दर आने पर मजबूर कर दिया। उन आँखों को

देखकर मेरे दिल ने सोचा ये आँखें झील भी है और ये आँखें नाव भी। मैं इन झील सी गहरी आँखों में अगर डूबने भी लगा तो ये नाव सी आँखें मुझे जरूर बचा लेगी। वो दोशीजा हर जाकिये से यक्ता थी किसी अन्दाज में उसकी उमर संजू और बंटी से ज्यादा न थी। मेरे चाचा का लड़का मेरे लिये पानी लाने चला गया। जरूर मेरे चाची ने उसे अच्छे संस्कार दिये थे।

“भाई बैठिये न!” मेरे चाचा की लड़की ने कमरे के कोने में रखी प्लास्टिक की कुर्सी को अपने दुपट्टे से साफ करके मेरे बैठने के लिए रख दिया। कुर्सी पर बैठते हुये मैंने एक नज़र, एक गहरी नज़र उस परी पर डाली। मेरे चाचा की लड़की ने उस लड़की को मेरा देखना देख लिया इसलिए वो उसका परिचय मुझसे कराने के अन्दाज में बोली, “भाई ये लवी दोरी है, मैं इनसे ही अपनी पढ़ाई के प्रॉब्लम डिस्कस करती हूँ।” फिर वो उस लड़की जिसका नाम उसने लवी बताया था उससे कहा, “दीदी आप भी बैठिये हम चाय लेकर आते हैं।”

“आ..हाँ .. कविता!” लवी उसी चारपाई पर बैठते हुए बोली। जिस पर वो कुछ देर पहले बैठकर मेरे चाचा के बच्चों से हँस-हँस कर बातें कर रही थी। तभी मेरे चाचा का लड़का पानी लेकर आया। मुझे देखकर वो क्वार्टर से बाहर चला गया। शायद उसने बाहर अपने कुछ हम-उम्र लड़कों खेलते देख लिया था। पानी का एक घूंट भर कर मैंने उस परी के जानिब देखा और मुझे अपनी ओर देखते पाकर वो बोली, “आप सही सोच रहे हैं! मैं मुस्लिम हूँ, और मेरा नाम लुबना है और लवी मेरा निक नेम है।”

शायद उसके सिर पर बंधे हिजाब टाइप दुपट्टे और कविता द्वारा उसका नाम लवी बताये जाने से उसने अंदाजा लगाया होगा कि मैं उसे लेकर कुछ न कुछ दुविधा में जरूर हूँ। पर वो ये नहीं जानती थी कि वो इतनी खूबसूरत थी कि जब वो सामने हो तो कोई भी दुविधा किसी को भी हो सकती है।

“जी मेरा नाम कुणाल है। आप तो अभी खुद कम उम्र की है तो फिर आप कविता को पढ़ाई में कैसे हेल्प करती है।” अपना नाम बताकर मैंने उससे पूछा।

“जी मैं ट्वेल्थ में हूँ और आसानी से 8जी स्टैंडर्ड के प्रॉब्लम सॉल्व कर सकती हूँ।”

“ओह नाइस लुबना।”

“आपको अगर लुबना कहने में कोई दिक्कत है तो मुझे लवी कह सकते हैं।”

मैं उसकी बात का कोई जवाब दे पाता उससे पहले कविता चाय लेकर आ गई थी। एक थाली में चाय के तीन कप। साथ में बिस्किट या नमकीन कुछ भी नहीं था। चाय पीते वक्त कविता, लवी से गणित की कुछ समस्यायें पूछती रही और वो बड़ी सरलता से उन्हें सॉल्व करती रही। मैं खामोशी से चाय पीता रहा।

मेरी चाय खत्म हो गई और इसके साथ ही लवी उठ कर खड़ी होते हुए बोली, “अच्छा कविता अब मैं चलती हूँ अम्मी राह देखती होगी। तुम अपने भाई रवि के साथ शाम को घर जरूर आ जाना।” फिर लवी अपने कंधे पर एयर बैग डालते हुए मेरी ओर हाथ जोड़कर बोली “अच्छा कुणाल जी नमस्ते। अब मैं चलती हूँ।”

“नमस्ते” मैंने जवाब देने के साथ उठकर खड़ा हो गया। वो क्वार्टर से बाहर निकल गई और मैं दरवाजे पर खड़ा उसे जाता हुए देखता रहा। जाते वक्त उसने कैम्पस में खेल रहे चाचा के लड़के रवि का सिर अपनी नर्म उंगलियों से सहलाया।

कविता चाय के कप रसोई में रखकर वापस आई तो पूछ लिया “कविता क्या आप लवी दीदी के यहाँ न्यू ईयर सेलिब्रेशन के लिए जा रही हो।”

“हाँ, और आज सेलिब्रेशन है। .. डबल सेलिब्रेशन?.. हाँ, आज लवी दीदी का बर्थडे भी है। सिक्सटीन बर्थडे।” और फिर होंठों ने गोल होकर कहा “स्वीट सिक्सटीन।”

शाम जैसे ही रात की ओर बढ़ी बंटी ने मेरा हाथ पकड़कर मुझे अपने फ्लैट से बाहर ले आई। नीचे एक टैक्सी खड़ी थी जिसमें पीछे की ओर संजू पहले से बैठी हुई थी। बंटी ने मुझे हाथ से इशारा करके पीछे बैठने को कहा, तो मुझे ऐसा लगा जैसे मन की मुराद मिल गई हो। डिकी की तरफ मैंने अपना एयर बैग उछाल कर फेंका और संजू के बगल में बैठ गया। बंटी के आगे बैठते ही टैक्सी वहाँ से चल पड़ी थी। बंटी भले ही मेरा हाथ पकड़ कर टैक्सी तक मुझे लाई हो पर टैक्सी में संजू को देखकर मेरे दिल में एक अजीब सी तमन्ना जागी कि मैं टैक्सी का हर सफर संजू के साथ ही तय करूँ।

इस वक्त टैक्सी कोलतार की सड़क पर भागी जा रही थी और मैं अपनी स्वीट सिक्सटीन मतलब संजू के बगल में बैठा हुआ था। पर संजू विंडो स्क्रीन से बाहर की जानिब इस तरह से मसरूफ़ थी जैसे उसे मेरे बगल बैठने का एहसास ही न हो। इस वक्त ने संजू ने स्लीवलेस कुर्ती पहनी हुई थी। वो अक्सर ऐसी ड्रेससेस पहनती है। और फिर आज तो न्यू ईयर सेलिब्रेशन का मौका है, तो उसका

यूँ सेक्सी ड्रेस पहनना लाज़िमी था। उसकी इस सेक्सी ड्रेस उसकी मांसल जांघें पूरी तरह से नुमाया हो रही थी। मैंने संजू का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए अपना दायां हाथ उसकी बायीं जांघ पर रख दिया। पर मेरे इस स्पर्श का संजू पर कोई असर नहीं हुआ। वो बदस्तूर बाहर देखती रही। आज से पहले जब कभी भी मैंने उसे छुआ था तो उसने हर बार मुझे नीची नजरों से देखा था। पर आज न जाने क्यों मुझे लग रहा था कि वो मेरे पास बैठकर भी मेरे पास नहीं है।

मैं भले ही संजू के अलावा बंटी से दैहिक सुख हासिल कर चुका था पर संजू वो लड़की थी जिसने मुझे पहली बार में सुख दिया था और जब से बंटी की लिखावट उस 'स्वीट सिक्सटीन' वाले खत से नहीं मिली तब से संजू के 'स्वीट सिक्सटीन' होने पर मेरा यकीन और मजबूत हो गया हलांकि ये बात अलग थी उस खत से संजू की लिखावट भी मैच नहीं करती थी। कुछ भी हो संजू को मैं पसंद करता था और उसकी यूँ मेरे लिए बेजारी मेरे लिए नाकाबिले बर्दाश्त थी। मेरा हाथ अब भी उसकी रोमहीन जांघों पर था पर अब भी बाहर देखे जा रही थी, न जाने क्या?

जब उसकी ये बेरूखी, ये ख़ामोशी मेरे लिये जानलेवा बनने लगी तो मैंने उसकी जांघ से हाथ हटाकर उसके उजले कंधे को हल्के से दबाते हुए कहा, "संजू कहाँ खोई हो तुम, किन ख्यालों में हो?"

"आ..हाँ .. कुछ नहीं बस बाहर की रौनक देख रही थी।" संजू ने मेरी ओर देखकर मुस्कराते हुए कहा। पर जानता था संजू के होंठों की हँसी वो हँसी नहीं है जो उसके अल्हड़पन की सहेली है। बड़ी ही फ़ीकी और बनावटी लगी थी मुझे उस वक्त संजू की ये हँसी। कुछ देर मेरी ओर देखने के बाद संजू फिर बाहर की ओर देखने लगी। पूरी तरह ख़ामोश। मैंने संजू से नज़र हटाकर बंटी को देखा, तो वो सीट की पुश्त से सिर टिकाये आँख मूंदे हुए थी। उन दोनों को यूँ इस हाल में देखकर मैंने सोचा क्या ये दोनों वही अलमस्त लड़कियाँ हैं जो कल तक इस न्यू ईयर सेलिब्रेशन को लेकर जमीन-आसमान एक किये हुए थी।

संजू और बंटी की ख़ामोशी ने मुझे भी ख़ामोश कर दिया था। मैंने भी अपनी आँखें टैक्सी की विंडो बाहर की ओर लगा दी और फिर थोड़ी ही देर में न जाने क्यों कर मेरी आँखें भी बन्द हो गईं और मैंने अपना सिर टैक्सी की पुश्त से टिका दिया। आँखें बन्द किये हुए मैं तब तक सीट की पुश्त से सिर टिकाये रहा, जब तक ब्रेक लगने से टायरों के रूकने की आवाज़ नहीं आई। टैक्सी रूकने के बाद भी मैंने अपनी आँखें तब तक नहीं खोली जब तक मेरे बगल और टैक्सी के

आगे के दोनों डोर के खुलने की आवाज़ नहीं आई। संजू और बंटी ने पीछे से डिक्की से अपने बैग्स निकाल लिये थे साथ में मेरा भी। अब मैं टैक्सी से उतरकर नीचे खड़ा था संजू ने अपने कंधे से लटक रहे हल्के हरे रंग के पर्स से पैसे निकालकर टैक्सी का किराया दिया। बंटी ने अपना बैग उठाकर मेरे बैग की ओर इशारा करते हुए मुझसे कहा, “ओय ब्वाय! चलो अपना बैग उठाव और अंदर चलो हम पार्टी एंज्वाय करने आये है यूँ तुम्हारे चेहरे पर बजते हुए बारह देखने नहीं।”

पार्टी तो मैं भी एंज्वाय करने आया था पर न जाने क्यों मेरा दिल थोड़ा उदास हो चला था। उदास तो मुझे संजू भी लग रही थी। नहीं ये गलतफ़हमी थी क्योंकि उसने अपना बैग अपने कोमल हाथों से उठाते हुए कहा, “कुणाल तुम जिस तरह घबरा रहे हो वैसे तो वर्जिन लड़की अपनी वर्जिनिटी लूज़ करने के दिन भी नहीं घबराती।”

फिर वो हँसते हुए बंटी के पीछे चल पड़ी और मैं उसकी बात का मतलब न समझते हुए उसके पीछे चल पड़ा। हालांकि मैंने संजू की बात को ज्यादा दिल पर नहीं लिया क्योंकि संजू और बंटी दोनों ही मुझसे वल्गर और ओपेन बातें किया करती थी। कुछ अपने दिल की उलझन, कुछ बंटी और संजू के कमेन्ट्स की वजह से मैंने उस फार्म हाउस के बाहरी भाग को ज्यादा ध्यान से नहीं देख पाया। हाँ, इतना अंदाजा जरूर लगाया था कि ये काफी बड़ा था और कई एकड़ में फैला हुआ था। अन्दर कदम रखते ही मेरा सामना बेहद आकर्षक सजावट वाली चकाचौंध से हुआ। ये एक बड़ा हॉल था जिसकी फर्श पर मोटा कालीन बिछा हुआ था। हॉल की छत के बीचों बीच हीरों की तरह चमकता विशाल झूमर लटक रहा था। एक तरफ फाइव स्टार होटल की तरह शराब की बोतलें और जाम बड़े करीने से रखे हुए थे। पूरे हॉल में बेहद आकर्षक रोशनियाँ थी। ये रोशनी की चमक इस समय न जाने क्यों मुझे बड़ी नशीली लग रही थी। इस वक्त तक शाम ढल के रात हो चुकी थी। कुछ नौकर बेहद साफ वर्दी में आज की पार्टी की व्यवस्था में लगे हुए थे। एक नौकर मेरा बैग हाथ में लेकर मुझे एक कमरे में ले गया। वह बेहद आलीशान कमरा था जिसके बीचों-बीच काफी बड़ा और खूबसूरत बेड पड़ा हुआ था, जिस पर नर्म मुलायम बिस्तर लगा हुआ था। हॉल में घुसते ही बंटी और संजू मुझे दिखाई नहीं दी। शायद उन्हें भी वहाँ के नौकर मेरी तरह किसी कमरे में ले गये होंगे।

मैं अभी कमरे की हर बेशकीमती चीज को देख ही रहा था कि वहाँ संजू आ गई - “कुणाल रिलैक्स कर लो अभी कुछ देर में पार्टी स्टार्ट होगी और ठीक

आधी रात को हम एक-दूसरे को विश करके अपने-अपने कमरे में आराम करेंगे और फिर सुबह यहाँ से निकल जायेंगे।”

“ओके संजू” मैंने देखा इस वक्त संजू अपने बदन को एक साल से लपेट रखा था। हालांकि उसने सफर में कोई गर्म कपड़ा नहीं पहना था शायद एयरकंडीशनन टैक्सी में वो बिना गर्म कपड़ों के भी कम्फर्टबल थी। टैक्सी में बंटी ने भी गर्म कपड़े नहीं पहने थे पर उसने पूरी बाहों की टीशर्ट और जींस पहन रखी थी। संजू जाते-जाते दरवाजे पर रूक कर बोली, “ओके कुणाल! मैं अभी आती हूँ वैसे पार्टी में बहुत कम लोग रहेंगे। हम तीन के अलावा तीन और लोग जो इस फार्म हाउस के केयर टेकर हैं वे भी रहेंगे।”

संजू की बात सुनकर मैंने सुनकर मुस्कराकर कहा, “ओके डियर, जो हुक्म सरकार का।”

“नो कुणाल, आज रात मैं आपकी डियर नहीं।” संजू ने बांगी आँख दबाकर कहा और फिर अपनी बात से मेरी उलझन बढ़ाकर वहाँ से चली गई। रूम में अटैच्ड बाथरूम में फ्रेश होने के बाद मैं जैसे ही बाहर आया, तो अवाक रह गया और झेंप कर खड़ा हो गया। मेरे झेंपने की वजह ये थी कि इस वक्त मेरे बदन पर मेरी कमर पर बंधा सिर्फ एक तौलिया ही था और कमरे में सोफे पर दो अनजान महिलायें बैठी थी। वो आपस में बातें कर रही थी और मेरे यूँ इस तरह बाथरूम से बाहर आने पर चुप होकर मुझे देखने लगी थी। मैंने अपने ऊपर उन दोनों की सख्त निगाहें महसूस की और अगले ही पल अपने आधे से ज्यादा बिना कपड़ों के शरीर को अपनी अभद्रता समझकर तुरन्त बोला, “सॉरी मैम! वो क्या है मैं अपने कपड़े अन्दर बाथरूम में ले जाना भूल गया और फिर आप!” मेरी बात पूरी होने के पहले ही उन दो महिलाओं में से एक बोली, “इट्स ओके कुणाल! कोई बात नहीं, हम तो ये बताने आये थे कि बाहर पार्टी स्टार्ट हो गई है सो आप रेडी होकर बाहर आ जाइये।”

बस इतना कहकर वो और उसके साथ वाली महिला जो लगभग पैंतीस साल की बेहद खूबसूरत और आकर्षक थी मुझे देखती हुई रूम से बाहर चली गई। जाते वक्त वो महिला दरवाजे पर रूक कर बोली, “बाई द वे, कुणाल मैं मिसेज रंजना इस फार्म हाउस की ओनर।” और फिर मिसेज रंजना ने उस आकर्षक महिला की ओर उंगली से इशारा करते हुए बोली, “और ये है मिसेज अंजली! आप की तरह आज की पार्टी की एक मेहमान।”

“जी, जी नमस्ते रंजना जी, अंजली जी।” मैंने कहा।

मैं अब तक शर्ट पहन चुका था। और वो दोनों महिलायें मेरी नमस्ते का जवाब दिये बिना वहाँ से जा चुकी थी। हॉल तेज संगीत से गूँज रहा था। जब मैं इस फार्म हाउस पर पार्टी के लिये निकला था तो मेरे दिमाग में बेहद भीड़-भाड़ वाली पार्टी का चित्र अंकित था। संजू ने यहाँ फार्म हाउस पर पहुँचने के बाद मुझसे कहा था कि पार्टी में कम लोग होंगे। इस पार्टी में सिर्फ सात लोग थे। और कुछ नौकर जो खाने-पीने की चीजें सर्व कर रहे थे।

संजू, बंटी और मेरे अलावा मिसेज रंजना, मिसेज अंजली और दो अर्धेड़ आदमी थे। उन दोनों आदमी के पेट चर्बी वाले और बाहर की ओर निकले हुए थे। उनके जिस्म पर बेहद कीमती सूट ओर गले में टाई थे। हाथों में पकड़े गये कांच के गिलास में यकीनन शराब ही थी। तेज संगीत पर वे सब हल्के कदमों से थिरक रहे थे। संजू और बंटी दोनों ने इस वक्त केप्री और स्लीवलेस टीशर्ट पहन रखी थी। मिसेज रंजना और मिसेज अंजली स्लीवलेस ब्लाउज और साड़ी में थी। मैं हॉल में आकर एक तरफ खड़ा हो गया। मैं देख रहा था कि वे सब संगीत, शराब और नृत्य में मस्त थे। संगीत की धुन पर उन दोनों बड़ी तौंद वाले अर्धेड़ों में से एक के सामने संजू और दूसरे के सामने बंटी थी। अचानक मिसेज अंजली की नज़र मुझ पर पड़ी और वह मेरे पास आकर मेरा हाथ पकड़कर मुझे उन सब के मध्य ले आई। मैंने नोटिस किया जहाँ संजू, बंटी और वे दो अर्धेड़ थिरक रहे थे वहीं मिसेज रंजना अपने हाथ में जाम लिये सोफे पर अर्ध-लेटी अवस्था में बैठी हुई थी। मिसेज अंजली अभी तक मेरा हाथ पकड़े हुए थी। अचानक सोफे पर बैठी मिसेज रंजना ने म्यूजिक बजाने वाले की तरफ हाथ से इशारा किया और उसने तुरन्त ही गाना बदल दिया। अब हॉल “सरकाय लेव खटिया जाड़ा लगे। सरकाय लेव .” के गाने से गूँज रहा था।

ये इस गाने का असर था या पी गई शराब का कि उन दो अर्धेड़ व्यक्तियों में एक ने संजू को ओर दूसरे ने बंटी की कमर को कसकर पकड़ लिया। मुझे लगा संजू और बंटी उनकी इस हरकत का विरोध करेंगी पर वे दोनों मेरी उम्मीद के विपरीत मुस्कराते हुए उन दोनों अर्धेड़ों के कदम से कदम मिलाने लगी। मिसेज अंजली ने अपनी उंगलियों से मेरा चेहरा अपनी ओर किया और फिर अपने हाथ में पकड़े जाम को जबरदस्ती मेरे होंठों से लगाकर हलक में उड़ेल दिया। जब तक मैं कुछ समझ पाता उन्होंने मेरे हाथ अपनी कमर पर रखकर मेरे सीने से कसकर लगती हुई बोली, “ओ हैंडसम, डांस विद मी।”

मैंने उनकी बात का कोई जवाब नहीं दिया और जब चेहरा घुमाकर बंटी और संजू को देखने की कोशिश की तो तब तक मिसेज अंजली ने अपनी बांहें मेरे

गले में डाल दी। न चाहते हुए भी मेरे कदम चल रहे थे। मिसेज रंजना के कहने पर म्यूजिक चेंज हो रहा था, जाम छलक रहे थे और हम तीन जोड़े मस्ती में डूब रहे थे। हलांकि मुझे संजू और बंटी को उन आदमियों के साथ और मुझे मिसेज अंजली के साथ डांस करना दिल से बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था। मिसेज अंजली कभी मुझे जाम पिलाती कभी खुद पीती और शराब की खुमारी से बोझिल मेरी आँखों ने वे दृश्य भी देखा जब मिसेज रंजना के इशारे पर एक नौकर ने चुपके से क्लॉक की सुईयाँ खींच कर बारह पर कर दिया।

फार्म हाउस की मालकिन के इशारे समय अपनी गति बढ़ाकर नये साल का हाथ पकड़ चुका था। मिसेज रंजना ने शैम्पेन की बोतल खोली। लोग शैम्पेन में डूबकर एक-दूसरे को चूमकर नये साल की मुबारकबाद दे रहे थे। बंटी, संजू ने भी अपने पार्टनर्स को किस ट्रांसफर करने के बाद मुझे भी किस करके मुबारकबाद दी। पर मुझे सबसे ज्यादा गाढ़ा बोसा मिसेज अंजली ने दिया था।

जब पार्टी खत्म हुई तो सब लोगों की तरह मैं भी उसी कमरे में सोने के लिए आ गया, जिसमें आज घाम को वहाँ का एक नौकर मुझे लाया था। मैं जैसे ही दरवाजे से अंदर घुसा मुझे चौंककर वहीं रुक जाना पड़ा। मिसेज अंजली सोफे पर उसी जगह बैठी थी जहाँ वो पार्टी शुरू होने से पहले वह मिसेज रंजना के साथ बैठी थी। दरवाजे के खुलने और बंद होने की आवाज़ से मिसेज अंजली का ध्यान मेरी ओर हो गया।

“सारी मैम शायद मैं गलत कमरे में आ गया हूँ।” मेरी बात सुनकर मिसेज अंजली ने मुड़कर मेरी ओर देखा और फिर दरवाजे के पास आकर उसमें सिटकिनी लगाकर मेरा हाथ पकड़ा और सोफे के पास ले आई। मेरे कंधे पर अपने हाथों का जोर लगाकर उन्होंने मुझे फर्श पर बैठा दिया जबकि वो मेरे सामने सोफे पर कुछ इस अन्दाज में बैठ गई जैसे कोई महारानी अपने सिंहासन पर बैठी हो। मैंने इससे पहले कभी शराब नहीं पी थी पर पार्टी की मादकता, बंटी और संजू को पीते हुए देखकर और मिसेज अंजली की थोड़ी बहुत जबरदस्ती से मैंने आज दो-चार पैग गटक लिये थे। और पेट में गये ये पैग अब मेरे दिलो-दिमाग पर असर डाल रहे थे। मैंने शराब की खुमारी में डूबी आँखों से मिसेज अंजली की ओर देखा। कि तभी मिसेज अंजली ने अपना दांया पैर मेरे कंधे पर रख दिया। और कहा, “अपनी मैम की जूतियाँ उतारो।”

उनकी इस हरकत से मैं अपने आपको थोड़ा सम्भालते हुए बोला, “सॉरी मैम! मैं यहाँ पार्टी में आया हूँ .. किसी का नौकर बनने नहीं।”

“ओके ओके, बट मैं तुम्हें नौकर कहाँ कह रही हूँ . तुम्हें तो प्राउड फील होना चाहिये जो मुझे जैसी हुस्न की देवी ने तुम्हारे लिए आज इतने पैसे खर्च किये है। नहीं तो न जाने कितने ऐसे होंगे जो मुझे इतने नज़दीक से देखने, छूने और मुझसे दो-चार बातें करने के लिए तरसते होंगे।”

“मैम आप खूबसूरत है, बेहद खूबसूरत है! लोग आपके लिए तरसते भी होंगे पर आपको गलतफ़हमी है कि आपने यहाँ पार्टी में मेरा खर्चा उठाया है। शायद आपको मालूम नहीं मुझे यहाँ मेरी दोस्त बंटी और संजू लाई है।” कहते हुए मैंने मिसेज अंजली के दोनों पैरों को ऊपर से हटाकर नीचे रख दिया और सामने पड़े बेड पर जाकर बैठ गया।

“तुम्हारी दोस्त बंटी और संजू” कहकर मिसेज अंजली हँस पड़ी। वह कहकहा लगाती हुई हँसी और वो लगातार हँसती ही जा रही थी जबकि मैं पागलों के मान्दिद उन्हें हँसते हुए देख रहा था। अचानक वो अपनी हँसी रोककर बोली, “तुम बंटी और संजू की बात कर रहे हो। अरे आज उन पर जो खर्चा हुआ है इस वक्त वो भी उसकी कीमत चुका रही हैं।”

“आप कहना क्या चाहती है मिसेज अंजली, मैं कुछ समझा नहीं?” मेरी बात पर मिसेज अंजली मुस्कराते हुए मेरे पास आई और फिर अपनी उंगली के बड़े हुए नाखून से मेरे गाल पर खरोंच लगाते हुए बोली, “कुणाल इस रेव पार्टी में आकर इतने भी भोले मत बनो। जिस तरह आज की रात तुमको मैंने अपनी सेवा के लिए खरीदा है, वैसे ही बंटी और संजू की भी रात मिस्टर फर्नाण्डीज और मिस्टर बाबर ने खरीदी हुई है। कुछ समझे मेरे गुलाम।” और फिर इतना कहकर मिसेज अंजली ने मेरी षर्ट के ऊपर के बटन खोलकर मेरे सीने को अपनी नर्म हथेलियों से सहलाने लगी।

“मैं नहीं मानता जो आप कह रही है।” मैं बेड से उठते हुए बोला, तो मिसेज अंजली ने अपने दायें हाथ से मेरी जांघों के बीच के सबसे कोमल और सबसे सख्त अंग को सहलाने लगी। उनकी इस निर्लज्जता पर मैंने उन्हें धक्का देकर अपने से दूर किया और फिर कमरे से बाहर निकलते हुए बोला, “मैम मैं इस कदर बिकाऊ नहीं हूँ।”

“ओह तो मिसेज अंजली तुम्हें पसंद नहीं आई।” जैसे ही मैं कमरे से बाहर निकला मुझे मिसेज रंजना की आवाज़ सुनाई दी। - “कोई बात नहीं कुणाल” वो मेरे करीब आकर बोली, “ये तो अपनी पसंद-नापसंद पर निर्भर है

. अगर तुम्हें मिसेज अंजली पसंद नहीं तो कोई बात नहीं। छोड़ो मिसेज अंजली को .. चलो तुम चाहो तो फिल्म देखकर अपना मूड सही कर सकते हो।”

इतने बड़े फार्म हाउस में संजू और बंटी कहाँ थी और क्या कर रही थी। इसकी मुझे कोई खबर नहीं थी। मिसेज रंजना के इशारे पर भले ही इस फार्महाउस में नये साल ने दस्तक समय से पहले दी हो पर अब मैं जानता था कि 31 दिसम्बर की रात अब ढल कर एक जनवरी की सुबह की ओर बढ़ चली है। हालाँकि इस वक्त आधी रात से ज्यादा समय हो रहा था पर इतनी रात गये फार्म हाउस से बाहर निकलना भी मेरे साहस के बस से बाहर की बात थी।

ये एक बेहद आलीशान कमरा था, जिसमें मैं मिसेज रंजना के साथ आया था। यकीनन ये कमरा मिसेज रंजना ने अपने लिये रिजर्व कर रखा होगा। कमरे में आकर मिसेज रंजना बिना कुछ बोले टीवी और वी.सी.आर. में उलझ गई। कमरे का दरवाजा उन्होंने बन्द नहीं किया था और यही वजह थी कि मैं थोड़ा निश्चिंत होकर सोफे पर बैठ गया। वी.सी.आर. में कैसेट डालकर मिसेज रंजना ने टीवी ऑन किया और मेरे बगल के सोफे पर आकर बैठ गई। मैंने उनकी तरफ देखा तो उन्होंने मुस्कराकर आँख के इशारे से मुझे टीवी की ओर देखने का इशारा किया और मैंने सोफे की पुश्त से सिर टिकाकर टीवी पर नज़रें गढ़ा दी। अभी दो, तीन मिनट ही हुए होंगे कि मैं सोफे पर उछल पड़ा। घबराई चकित नज़रों से मैंने मिसेज रंजना को देखा तो उन्होंने आँख से इशारा करके मुझे टीवी की ओर देखने को कहा। हाथ के रिमोट से उन्होंने चल रही फिल्म को थोड़ा फारवर्ड कर दिया। उस फिल्म में खुद को देखकर मेरा रोया-रोया खड़ा हो गया। बिस्तर पर संजू थी, अपनी होशो-हवास खोकर और उसके साथ मैं गुथा हुआ था। मेरे और संजू के अतरंग सीन टीवी स्क्रीन पर चल रहे थे। अचानक मैंने अपने कंधे पर मिसेज रंजना के हाथ का दबाव पाया। - “तो इस तरह तुमने संजू का बलात्कार किया।” कहते हुए वो मेरे बगल में बैठ गई।

“न.नहीं! मैंने बलात्कार नहीं किया। ये हमारी रजामंदी से हुआ।”

“हुआ होगा पर फिल्म देखकर लोग इसे बलात्कार कहेंगे। देखो संजू बेहोश है और तुम उसको रौंद रहे हो।”

“नहीं उस दिन संजू ने कहा था कि उसकी तबियत थोड़ी नासाज है।”

“तो तुमने उसका बलात्कार कर दिया।”

“न..न..नहीं।”

“ऐसी ही एक फिल्म तुम्हारी बंटी के साथ भी है।”

मैंने सफेद पड़ चुके चेहरे से मिसेज रंजना को देखा।

“कुणाल वो फोन ले आओ।” उन्होंने टेबल पर रखे फोन की ओर इशारा किया।

“फोन इतनी रात गये?”

“हाँ पुलिस बुलानी है।”

“क..क..क्यों..?”

“अरे बलात्कार करना जुर्म है ना। तुम आज़ाद रहे तो संजू और बंटी जैसी न जाने कितनी मासूम लड़कियों की जिंदगी बरबाद करोगे।”

“नहीं ये झूठ है। बंटी और संजू इसकी गवाह है।”

“बंटी और संजू!” मिसेज रंजना अट्टाहस करके हँसने लगी।

“वो दोनों..अरे वो दोनों .. देखना चाहोगे तुम्हारे वो दोनों गवाह इस वक्त किसी तरह की गवाही किसके हुजूर में दे रही हैं।” ये कहकर मिसेज रंजना मेरा हाथ पकड़ा और मुझे कमरे से बाहर कारीडोर ले आयी। मैं यंत्रवत उनके साथ चलता रहा। अचानक एक कमरे की खिड़की के पास वो रुकी और कहा, “हल्के से पर्दा उठाकर तुम इस वक्त अपनी संजू की गवाही देख सकते हो।”

मैंने कांपते हाथ से हल्का सा पर्दा उठाया। ‘उप्फ! ये क्या?’ अन्दर बेड पर संजू दुधिया ट्यूब लाईट की रोशनी में एकदम निर्वस्त्र थी। वह एकदम न्यूड होकर मिस्टर बाबर का सबसे नर्म, सबसे कठोर अंग को अपने हाथों में लेकर सहला रही थी। ठीक वैसे ही जैसे अभी कुछ देर पहले मिसेज अंजली ने मेरा किया था। आँखें बन्द करके मैं उस खिड़की से दूर हटा और भागना चाहता था पर मिसेज रंजना ने मेरी बांह जोर से पकड़ कर कहा, “चलो अपनी दूसरी गवाह वो बंटी को भी देख लो।”

और फिर वो मुझे लगभग घसीट कर एक कमरे की खिड़की पर ले आई। अबकी बार पर्दा उन्होंने सरकाया। मैंने कमरे के अन्दर ठीक वैसे ही दृश्य देखा जैसा संजू के कमरे में था। बस संजू की जगह बंटी और मिस्टर बाबर की जगह मिस्टर फर्नाण्डीज ने ली थी। मैं भय और शर्म से वही घुटनों के बल फर्श पर बैठ गया।

“पुलिस बुलाऊं” मिसेज रंजना मेरे करीब आकर बोली। मैंने तिरछी निगाहों से उन्हें देखा तो झट से बोल उठी, “ओके ठीक है. मैं नहीं बुलाती .. अब जाकर मिसेज अंजली को खुश करो।”

मैं चुपचाप वापस उसी कमरे में चला आया। मिसेज अंजली तेज कदमों के साथ हाथ में जाम लिये कमरे में अधीर होकर चहल-कदमी कर रही थी। मुझे

दरवाजे पर खड़ा देख उन्होंने एक घूंट में हाथ में पकड़ा जाम खाली कर दिया और हौले-हौले कदमों से बेड पर जाकर लेटते हुए उन्होंने हाथ की उंगली से इशारा करके मुझे अन्दर आने को कहा, “कहो कुणाल अब तो मैंने अपनी जूती खुद उतार दी है.. तो अब तुम क्या करोगे।”

मैं बेड के पास खामोश खड़ा रहा। वह फिर से बोली, “ओके वो मेरी जूती ले आओ।” मैंने देखा जूतियाँ सोफे पर पड़ी थी। मैंने एक जूती उठाई तब तक मिसेज अंजली बेड से उठकर मेरे पास आ चुकी थी। उनके हाथ में एक गिलास में भरा हुआ जाम था जिसे उन्होंने एक घूंट पीकर बाकी शराब अपनी जूती में उड़ेल दिया। सवालियाँ निगाहों से मैंने मिसेज अंजली को देखा।

“पी जाओ।” उन्होंने कहा। मैंने सवालियाँ निगाहों से उन्हें देखा। उन्होंने आगे कहा, “पीते हो या मिसेज रंजना को बुलाऊं?” उनकी आँखों में गुस्सा था।

मैंने एक नज़र मिसेज अंजली पर डाला और फिर हाथ में पकड़ी शराब से भरी उनकी जूती को देखा। और न चाहते हुए भी मुझे उनकी जूती से शराब पीना पड़ा।

‘नाइस ब्वाय’ कहकर मिसेज अंजली ने मेरे कंधे पर सिर टिकाकर अपने हाथ से मेरी सबसे कोमल, सबसे कठोर अंग खोजने लगी। और एक बार फिर से न चाहते हुए भी मुझे वो सबकुछ करना पड़ा जैसा वह चाहती थी। अगर मेरी आर्थिक स्थिति थोड़ी भी अच्छी होती तो इकत्तीस दिसम्बर वाली रात की घटना के बाद मैं अपना वीआईपी कैम्पस वाला फ्लैट तुरन्त छोड़ देता। पर मेरे हालात ऐसे न थे, जो मैं कहीं किराये पर कोई छोटा सा भी कमरा ले पाता। मैं उस रात की सुबह भले ही बंटी और संजू के साथ एक टैक्सी में उस फार्म हाउस से इन बिल्डिंग तक आया पर अब मैं उनका साथ हरगिज़ नहीं चाहता था।

मैं दो दिन और दो रातों तक अपने कमरे से बाहर नहीं निकला था। बंटी और संजू भी इस दौरान मेरे फ्लैट पर नहीं आई थी और न ही मुझे फोन किया था। उस शाम मैंने खिड़की पर खड़े होकर जब ये तसल्ली कर लिया कि नीचे कैम्पस में बंटी और संजू नहीं है तो मैं किसी चोर की तरह कैम्पस में उतरा। मेरा इरादा कहीं बाहर जाकर खुली हवा के ताजे झोंके से अपने दिलो-दिमाग पर जमी वो गर्द साफ करनी थी जो उस रात मिसेज अंजली ने मुझसे सहवास करके जमाई थी।

मैं किसी चोर की तरह कैम्पस के मेन गेट पर पहुँचा ही था कि अचानक किसी के हाथ पकड़ लेने से मैं चौंक पड़ा। बड़ी धड़कनों पर काबू पाते हुए मैंने देखा तो वो कविता थी जो मेन गेट से कैम्पस के अन्दर आ रही थी।

“हैप्पी न्यू ईयर भाई. आप तो पिछले दो दिन से नज़र ही नहीं आये। मैंने तो अभी तक नये साल की कुछ मिठाई आपके लिए बचाकर रखे हैं। आईये चलिये खा लीजिये वरना खराब हो जायेगी।” उसने अपनेपन से कहा।

“नहीं कविता, मेरी ओर से तुम खा लेना।” मेरी धड़कनें अब कुछ नियंत्रित थी।

“नहीं-नहीं भाई वो आपका हिस्सा है। आपको खाना ही पड़ेगा।” कविता ने दोबारा जिद की। और मैं उसकी इस जिद का कोई प्रतिवाद किये बिना उसके क्वार्टर में आ गया। रास्ते में मेरी सतर्क निगाहें बंटी और संजू को तलाश कर रही थी। मुझे डर था कि मैं कहीं उनकी नज़र में न आ जाऊं। जब मैं कविता के कमरे पर आ गया तो मैंने खुद को बेहद सुकून में महसूस किया। मुझे लकड़ी की एक कुर्सी पर बिठाकर कविता अंदर से मिठाई का वो डिब्बा उठा लाई जिसमें उसने दो पेड़े मेरे लिये बचाकर रखे थे। डिब्बे से एक पेड़ा उठाकर मैंने उसमें से आधा कविता को दे दिया और बचा हुआ आधा अभी मैंने अपने मुँह में रखा ही था कि - “अच्छा तो भाई-बहन मिठाई नोष फरमा रहे हैं।” कहते हुए लुबना ने कमरे में प्रवेश किया था।

“लीजिये दीदी आप भी लीजिये” कविता डिब्बे का दूसरा पेड़ा लुबना को देते हुए बोली, “आप सही वक्त पर आई लवी दीदी।”

“हाँ नहीं तो आप दोनों ये आखिरी टुकड़ा भी खत्म कर देते।” लुबना पेड़े का एक टुकड़ा खाते हुए वहीं चारपाई पर बैठ गई। पेड़े का दूसरा हिस्सा अब तक उसके दायें हाथ की उंगलियों में था। मैंने देखा लुबना ने काली सलवार और मटमैली रंग की कुर्ती पहन रखी थी जिसकी बांहें उसकी कोहनी से एक इंच नीचे तक थी। उसने अपने बालों का जूड़ा बांध रखा था जो काफी छोटा था। इससे मैंने अन्दाजा लगाया उसके बाल ज्यादा लम्बे नहीं होंगे। सीने पर उसने काले रंग का दुपट्टा डाल रखा था। कलाइयों में बाई कलाई पर घड़ी के अलावा कुछ भी नहीं था और उसने कथई रंग के चमड़े की सैंडल पहन रखी थी। कानों में उसके छोटी-छोटी बालियाँ थी और नाक में बाईं तरफ एक सेफद छोटा सा मोती। जो उसके सांवले चेहरे पर बेहद आकर्षक लग रहा था। लुबना का रंग भले ही सांवला था पर उसकी सुन्दरता संसार के किसी भी लड़के को अपनी तरफ आकर्षित करने की क्षमता रखती थी।

“कविता क्या चाय मिलेगी?. हल्का-हल्का सिर दर्द हो रहा है।” लुबना बायें हाथ से अपना सिर दबाकर बोली। उसके दायें हाथ में अब भी पेड़े का बचा हुआ टुकड़ा था।

कविता “हाँ अभी लाई” कहकर अंदर चली गई। मैंने लुबना की ओर देखा तो उसे अपनी ओर देखते पाया।

“हैप्पी न्यू ईयर” उसने धीरे से कहा पर संजू और बंटी के अनुभव ने मुझे उसे नव वर्ष की शुभकामनाएं देने से रोक दिया। मुझे खामोश देखकर लुबना ने सोचा कि षायद उसने जो कहा वो उसकी आवाज़ धीमी होने की वजह से मैं सुन न सका। उसने अपने होंठ अभी वापस खोले ही थे कि - “लवी दीदी कुणाल भाई बैठिये मैं दूध लेकर अभी आई” कहते हुए कविता क्वार्टर से बाहर निकल गई।

मैं लुबना के साथ वहाँ पर तन्हा हूँ ये सोच कर ही मेरे जिस्म और मेरी रूह पर डर हावी हो गया और यकीन मानिये उस वक्त ठण्ड में मैंने स्वेटर के भीतर अपने जिस्म को पसीने से भीगा हुआ महसूस किया। हलांकि लुबना से मेरी ये सिर्फ दूसरी मुलाकात थी। मेरे और उसके बीच हाय-हैलो के अलावा कुछ नहीं था फिर भी उसके साथ यूँ तन्हाई में मुझे डर क्यों लग रहा था, मालूम नहीं! यकीनन बंटी और संजू मेरे इस डर की वजह थी। उन्होंने जिस कदर मुझसे दोस्ती करके मुझे यूँ नर्क में ढकेला था, वो मेरी ज़िंदगी का एक बहुत बुरा सपना था।

“हैप्पी न्यू ईयर।” लुबना की आवाज़ ने मेरे विचारों की श्रृंखला तोड़ दी। मैंने देखा वो मेरे सामने खड़ी थी अपने दायें हाथ का पेड़ा मेरी ओर बढ़ाये हुए और अपने चॉकलेटी होंठों पर हल्की सी मुस्कान लिये।

“हैप्पी न्यू ईयर” कहकर मैं भी उठ कर खड़ा हो गया।

“लीजिये मुँह मीठा कीजिये।” कहकर लुबना ने अपने हाथ का पेड़ा मेरे होंठों के बिल्कुल नजदीक ले आई। लुबना की आवाज़ सरगम की मान्निद थी। एक अजब लोच था उसके अधरों से फूटते स्वरों में। मैं उसे मना न कर सका और उसके हाथ से पेड़ा लेकर मैंने खा लिया। जब मैंने उसके हाथ से पेड़ा लिया तो उसके हाथ की उंगलियाँ मेरे हाथ से छू गईं। लुबना के उस हल्के से लम्स के एहसास ने मुझ पर ये राज जाहिर किया था कि उसका लम्स जुदा है। यकीनन जुदा है संजू और बंटी के लम्स से। और फिर उस शाम लुबना के उस लम्स के असर ने मुझे बंटी, संजू और मिसेज अंजली से आजाद कर दिया।

कविता चाय बनाकर ले आई। हम तीनों चाय पीने लगे। इस बीच मैं और लुबना आपस में धीरे-धीरे खुलने लगे। लैटते समय लुबना ने अगले दिन लंच

के लिए कविता और रवि के साथ मुझे भी इंवाइट किया। कविता ने बताया था कि लवी के पापा का एक बहुत अच्छा रेस्टोरेंट है और वो उसमें उसके साथ पहले भी एक-दो बार जा चुकी है। लुबना का लंच पर इंवाइट करने का अंदाज ऐसा था कि मैं उसे मना नहीं कर पाया। और फिर उस घाम मेरी और लुबना के बातों का दौर उस मुकाम पर पहुँचा जहाँ मैं उसे बेहिचक 'लवी' कहने लगा।

'लुबना गजल' मैंने होंठों ही होंठों में रेस्टोरेंट का नाम दोहराया। मैं कविता और रवि के साथ निशातगंज के एक पॉश इलाके में इस बेहद खूबसूरत और आकर्षक रेस्टोरेंट के सामने अभी-अभी ऑटो से उतरा था। रेस्टोरेंट की चमक-दमक और कांच के दरवाजे के बाहर खड़े दरबान को देखकर मेरे पाँव अन्दर जाने की गवाही नहीं दे रहे थे। मैं अभी उस भव्य रेस्तरा में जाने के लिए अपनी शक्ति और साहस को एकत्रित कर ही रहा था कि मुझे शीशे के दरवाजे के उस ओर लवी दिखाई दी। फुल आस्तीन की हरे रंग के बड़े-बड़े चेक्स की शर्ट जिसकी आस्तीन उसने कोहनी के थोड़ा नीचे तक फोल्ड की हुई थी और टाइट फिर जींस में वो बाहर की ओर आ रही थी। ज्यों ही वो शीशे के दरवाजे पर पहुँची दरबान ने सिर झुकाकर दरवाजा खोल दिया और वो मुस्कराते हुए बाहर आ गई।

“वेलकम कुणाल” कहकर लवी ने अपना हाथ मेरी ओर बढ़ाया। बिना कुछ कहे मैंने उससे हाथ मिलाया और अभी मैं उसके जादुई स्पर्श के तिलिस्म में ही था कि वो रवि का सिर सहलाती हुई और कविता का हाथ पकड़कर 'कम' कहकर वापस शीशे के दरवाजे की ओर मुड़ गई। 'लुबना गजल' रेस्तरा बाहर से जितना भव्य था उससे कहीं ज्यादा भीतर से। आज से पहले मैं लवी से दो बार मिला था और इन दोनों मुलाकातों में मैंने अंदाजा लगाया कि वो मध्यमवर्गीय परिवार से है, जो अपने अच्छे स्वभाव के कारण कविता और रवि की पढ़ाई में सहायता कर रही थी। पर आज मैं 'लुबना गजल' रेस्तरा को देखकर ये जान चुका था कि लवी भी रईस खानदान से ताल्लुक रखती है बंटी और संजू की तरह . . लेकिन बंटी और संजू की याद आते ही मेरा मुँह कसैला हो गया। पर जब लुबना मुझे रवि और कविता के साथ उस रिजर्व टेबल पर लाई जो एक केबिन के अन्दर थी तो लवी के चाकलेटी होंठों पर खिल रही मुस्कान की मिठास से मेरे मुँह का कसैलापन जाता रहा। लुबना उस रेस्तरा के मालिक की बेटी थी, या यूँ कहे तो वह एक तरह से उस रेस्तरा की मालकिन ही थी। कई वेटर उसके मुँह से निकली डिश को वहाँ लाने के लिए खड़े थे। लुबना ने हमसे हमारी पसंद पूछी

और मेरे अलावा वहाँ हर किसी की पसंद नानवेज थी। लवी की भी। लंच के दौरान जब बातों ही बातों में कविता ने बताया कि लवी दीदी आर्टिस्ट है, पेंटिंग करती है। तो मैं खुशी से उछल पड़ा। मैं बचपन से ही कलाकारों का बड़ा सम्मान करता था और मेरी इस खुशी में लवी के लिए सम्मान भी था। मेरी खुशी पर लवी ने खुष होते हुए कहा, “कुणाल, क्या आप मेरी पेंटिंग देखना पसंद करेंगे?”

“हाँ क्यों नहीं!” मेरे इकरार में सिर हिलाने पर लवी उसी तरह खुश हो गई जैसे अभी कुछ देर पहले लवी के आर्टिस्ट होने की बात सुनकर मैं खुश हुआ था।

लंच के बाद रेस्टोरेन्ट से निकलकर लवी ने कविता और रवि को वॉलिंग्टन जाने वाले ऑटो में बिठा दिया और उनके जाने के बाद एक एक नीले रंग की बजाज सनी स्कूटर को स्टैण्ड से उतारते हुए बोली, “कुणाल आप चलायेंगे?”

“नहीं।”

“क्यों?”

“क्योंकि मुझे चलाना नहीं आता।”

“सायकिल चलाई है कभी?”

“हाँ गाँव में साइकिल चलाता था।”

“फिर चला लोगे, चलो कोशिश करो।”

“नहीं लवी आज नहीं, फिर कभी।”

“ओके, नो प्रॉब्लम!” फिर उसने बजाज सनी को किक मार के स्टार्ट करती हुई बोली, “चलो चलते हैं।”

ये बजाज की स्कूटी सनी थी और वो उसे चलाने में पारंगत थी। हम उसी से इंदिरा नगर के फ्लैट तक पहुँचे।

ये इंदिरा नगर में दो कमरों वाला एक छोटा सा फ्लैट था। एक कमरे में एक छोटा सा बेड, टीवी और कपड़ों की आलमारी थी और दूसरे में कई पेंटिंग्स इधर-उधर रखी थी। कुछ अधूरी थी और कुछ मुकम्मल। लवी ने वॉशरूम की तरफ इशारा करके कहा, “कुणाल आप फ्रेश हो लो तब तक मैं चाय बना लेती हूँ।”

मैं जब वॉशरूम से बाहर निकला तो मैंने लवी के हाथों में ट्रे और उसमें रखे दो कप देखे जिनसे गर्म चाय की भाप उड़ रही थी। लवी ने इस वक्त वो स्वेटर उतार दिया था जो उसने रेस्तरा से फ्लैट तक के सफर के लिये पहना था। अगरचे मौसम में अभी भी इतनी उस स्वेटर को पहनने लायक ठण्ड थी। लवी ने

बिना कुछ कहे मेरी ओर चाय की ट्रे आगे बढ़ाई और मैंने उसमें से एक कप उठा लिया। चाय का पहला घूंट लेकर मैंने प्लैट में एक भरपूर नज़र डाली तो मुझे प्लैट की हर चीज व्यस्थित नज़र आई जबकि बंटी और संजू के प्लैट बेहद अव्यवस्थित रहते थे। चाय पीते हुए लवी एक आधी बनी हुई पेंटिंग के सामने आकर खड़ी हो गई।

मुझे भले ही कला और कलाकारों में बेहद दिलचस्पी थी पर कला को समझने की कला मेरे भीतर अब तक परिपक्व नहीं हुई थी। सामने रखी अधूरी पेंटिंग जिसमें चाय पीते हुए लवी तल्लीन थी उसका सार मेरी समझ से परे था। पेंटिंग में कई घोड़े दौड़ रहे थे, विभिन्न रंगों के अलग-अलग दिशाओं में बिना घुड़सवारों के।

“ये पेंटिंग देख रहे हो?” लवी पेंटिंग से नजरें हटाये बिना बोली।

“हाँ” मैं उस पेंटिंग के थोड़ा और करीब आ गया।

“देखो कुणाल, ये घोड़ों की दौड़ कितनी बेहतरीन हो गई है। जानते हो क्यों?”

“नहीं लवी” मैंने असमर्थता जताई और चाय का आखिरी घूंट भरकर खाली कप वहीं पास की छोटी टेबल पर रख दिया। लवी ने भी अपनी चाय खत्म करके अपना खाली कप उसी टेबल पर रख दिया जहाँ मैंने रखा था। और फिर उसने अपनी अधूरी बात को पूरी करते हुए आगे कहा -

“क्योंकि इनके असवार नहीं जानते कि उन्हें कौन सी दिशा में जाना है।” कहकर उसने मेरी ओर देखा।

“पर इन घोड़ों पर असवार कहाँ है?” मैंने पेंटिंग में दौड़ रहे बेतरतीब घोड़ों पर असवार ढूँढ़ने की कोशिश की। मेरी ये कोशिश असफल होती, उससे पहली ही लवी ने हाथ में पकड़ी कूची का एक सिरा पेंटिंग पर एक जगह रख दिया। फिर उसने कूची का सिरा वहाँ से हटाकर मुझे आँखों के इशारे से पेंटिंग में वहाँ देखने को कहा। मैंने ध्यान से देखा तो वहाँ उस घोड़े पर एक असवार था। ये लवी की बनाई पेंटिंग की जादूगरी थी जो बेहद ध्यान से देखने पर उन कई घोड़ों में से एक घोड़े पर असवार दिखाई पड़ रहा था। मैंने जब पेंटिंग से नज़र फिराई तो लवी को मैंने आराम कुर्सी पर बैठे हुए पाया। वह आँखें बन्द किये हुए थी। मैं भी उसके पास पड़ी दूसरी आराम कुर्सी पर बैठ गया। मेरे बैठने की आहट से आँखें खोलते हुए लवी बोली, “कुणाल इस पेंटिंग के दो फलसफे है।”

अपनी बात रोक कर लवी ने कई पलों तक मेरे चेहरे को घूँँ हीं अपलक तकती रही। फिर अचानक वो उठते हुए बोली, “छोड़ो कुणाल मैं ये ‘फलसफे’ की

बात ले बैठी। आपको तो मैं यहाँ अपनी पेंटिंग्स दिखाने लाई थी। आईये और देखकर बताईये कि क्या मैं रंगों का कुछ और कॉम्बिनेशन भी कर सकती हूँ या नहीं।”

मैं चाहता तो उस वक्त उससे वो ‘फलसफे’ वाली बात पूछ सकता था पर न जाने क्यों न पूछ सका। और फिर वो मुझे अपनी पेंटिंग्स दिखाती रही और पेंटिंग देखकर मेरे होंठों से खुद ब खुद ‘वाह’ निकलता रहा।

उस रोज मैं भले ही लवी से उसकी ‘फलसफे’ वाली फ़िलासफ़ी भरी बात न समझ पाया और न उससे पूछ पाया पर आज मैंने पूछ ही लिया। जब मैं लुबना के साथ पहली बार उसकी पेंटिंग वर्कशॉप पर गया था तब कुछ घटनाएं घटी थी जिनका जिक्र मैं बाद में करूँगा पर आज मैं तीसरी बार लवी के साथ उसके पेंटिंग वर्कशॉप वाले फ्लैट पर आया था। और आते ही मैं उसके कई घोड़ों और एक असवार वाली पेंटिंग के सामने खड़ा हो गया। आज मैं तीसरी बार वहाँ उस पेंटिंग के सामने थे। और मैं सोच रहा था वो असवार हर बार नये घोड़े पर कैसे बैठा होता था। इससे पहले मैं उसे दो घोड़ों पर बैठे देख चुका था वो दोनों ही घोड़े रास्ते से भटक कर इधर-उधर दौड़ने का प्रयास कर रहे थे। आज वो असवार जिस घोड़े पर बैठा था वो रास्ते पर था और न जाने क्यों मुझे आज उस असवार के चेहरे पर एक सुकून नज़र आ रहा था। जब मैं दूसरी बार यहाँ आया था तब भी लवी ने इस पेंटिंग का जिक्र नहीं किया था, आज भी नहीं कर रही थी। वो मेरे जेहन में चल रही विचार श्रृंखला से अनभिज्ञ अपनी एक अधूरी पेंटिंग को पूरा करने के लिए रंगों का संयोजन तैयार कर रही थी।

“लवी” मैंने अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिये उसे करीब से पुकारा तो वो चौंक पड़ी और उसके हाथ से कुछ रंग उछलकर मेरी शर्ट पर गिर गये।

“ओह सॉरी .. आई एम सो सॉरी कुणाल!” लवी ने हड़बड़ाकर कहा और मेरी शर्ट पर गिरे रंगों को साफ करने लगी पर इस चक्कर में उसने अपनी रंग सनी उंगलियों से मेरी शर्ट को और भी रंगीन कर दिया। मैं उसकी हड़बड़ाहट को देखकर मुस्करा पड़ा और जब उसने मुझे मुस्कराते हुए देखा तो वो खामोश हो गई। पर जब मैं हँसते हुए अपने दोनों हाथ हवा में फैलाकर कहा, “लुबना मैडम आप का इरादा इस पेंटिंग को आज ही मुकम्मल करने का है या फिर और कभी” तो वो खिलखिलाकर हँस पड़ी।

यकीन मानो, लाखों-करोड़ों अप्सराओं की हँसी भी उस पाक हँसी के आगे फ़ीकी थी। वो अपने चमकते दांतों की सफेदी और चाकलेटी होंठों की मिठास

मेरे अंतर्मन को सराबोर कर रही थी। मैं जो ईश्वर में विश्वास नहीं रखने वाला लड़का था लेकिन उस वक्त पलक झपकते ही अपना ईश्वर गढ़ा और मन ही मन उसे सजदा करके ये दुआ मांगी कि - मेरे सामने हँस रही ये लड़की तमाम उम्र यूँ ही हँसती रहे। और जो उसकी तकदीर में कुछ अशक हो तो वो मेरे जिम्मे आ जाये।

थोड़ी देर में वो अपनी हँसी को काबू करते हुए बोली, “लाइये कुणाल मैं आपकी शर्ट साफ कर देती हूँ।”

“अरे नहीं-नहीं ठीक है, इस बहाने मैं कुछ तो कलरफुल हुआ।”

“अरे, तो क्या आप ऐसे ही बाहर जायेंगे। चलिये अपनी शर्ट उतारिये।”

और फिर वो खुद आगे बढ़कर मेरी शर्ट के बटन खोलने लगी। मैंने उसे मना नहीं किया। मना कर ही नहीं सकता था। जितने लम्हे वो मेरी शर्ट के बटन खोलती रही, मैं उसके होंठों से निकलती गर्म सांसों से रोमांचित होता रहा।

“इसे ओढ़ लीजिए” मेरी ओर एक साल बढ़ाकर वो मेरी शर्ट लिये वॉशरूम में चली गई।

“हमें मंजिल तक पहुँचने के लिए न सिर्फ रास्ते की मालूमात होनी चाहिये बल्कि हमें राह के साथी भी सोच समझकर चुनने चाहिये।” वॉशरूम से वापस आकर मेरी शर्ट को एक तार पर डालते हुए लवी ने ये बात मुझसे कही। शायद उसने मुझे उस घोड़ों वाली पेंटिंग के सामने खड़ा देखकर अपनी बात कही। और शायद इसलिये भी क्योंकि वो आदमी अपने घोड़ों को लगातार बदलता रहता है। मगर मेरा ध्यान किसी और तरफ था।

मैंने एक नज़र लवी के उन उन्नत वक्षों पर डाली जो तार पर मेरे षट फैलाने के वक्त उसके दोनों हाथों के ऊपर उठ जाने से बेहद आकर्षक लग रहे थे। मेरी नज़र को शायद लवी ने महसूस कर लिया था। शायद तभी उसने हमारे बीच चल रही बात के सब्जेक्ट से बिल्कुल अलग हट कर कहा, “जो आप मेरी ये शर्ट पहनना चाहते हैं तो हाजिर हैं।” और इतना कहकर वो अपनी शर्ट के बटन खोलने लगी।

मैं उसे मना करते रह गया पर उसने अपनी बाहें फैलाकर शर्ट उतार दिया। उसे ऐसा करते देख मेरी धड़कनें मेरे सीने में उछलने लगी। और उसने जब शर्ट उतारकर मेरी ओर बढ़ाई तो मैंने उसकी मदभरी बाहों को देखते हुए उसके हाथों से उसकी वो शर्ट ले ली। उसने शायद मेरी नजरोँ को पढ़ लिया था इसलिये उसने अपनी मदभरी चमकती बाहों को मेरी आँखों के सामानान्तर करते हुए

बोली, “मेरी ये बाँह और आकर्षक लगती जो बचपन में मुझे टीकों के ये नशतर न लगाये गये होते।”

मैंने देखा उसके कंधे के थोड़े नीचे बांह पर इंजेक्शन से टीके लगाये जाने के निशान थे।

“अब भी बहुत आकर्षक है अपनी बांहें।” मैंने अपनी देह से साल हटाकर लवी की शर्ट पहन ली थी।

“पर जब मेरी कोई बेटी होगी तो मैं उसकी बांह पर यूँ नशतर न लगवाऊंगी। ताकि वो बेहिचक स्लीवलेस कपड़े पहन सके।” लवी ने अपनी बांहें उसी साल को अपने शरीर लपेट कर छुपा लिया जिसे अभी-अभी मैंने अपनी देह से उतारा था। उसने आगे कहा, “जानते हैं कुणाल मेरे घर में सब लोग कहते हैं मैं कभी किसी को निराश नहीं करती।” इसी के साथ उसने अपनी ओढ़ी शाल को अपने कंधे पर दोनों तरफ डालकर अपनी बांहें उनसे बाहर निकालते हुए बोली, “तो मैं आपको भी निराश नहीं करूँगी। आप चाहें तो मेरी बांहों की खूबसूरती देख सकते हैं।”

मैं कुछ देर तक उसकी बांहों को देखने के बाद एक बार फिर से वही घोंड़ों की पेंटिंग के सामने आकर बोला, “लवी मैं अब तब असमंजस में हूँ तुम ज्यादा खूबसूरत हो या तुम्हारी बनाई हुई ये आकृतियाँ।” मेरी बात सुनकर वो बस मुस्करा भर दी थी। और फिर मेरे पास आकर खड़ी हो गई। एकदम खामोश। उसे खामोश देखकर मैंने कहा, “लवी आप इस पेंटिंग के किसी फलसफे की बात कर रही थी?”

“कुणाल मैं जल्द ही इस पेंटिंग पर एक कविता लिखूंगी और शायद फिर उस कविता चित्र को देखकर आप उस फलसफे को समझ सकें।”

“आप कवितायें भी लिखती हैं।”

“हाँ।”

“कभी बताया नहीं।”

“तो अब जान लें। जानना क्या है, चाहें तो पढ़ लें।” कहकर उसने एक टेबल की दराज से डायरी निकालकर मेरी ओर बढ़ा दी। डायरी के अधिकांश पन्ने लवी की खूबसूरत लिखावट से सजे थे। पर मैंने उस डायरी के पहले पृष्ठ पर लिखी नज़्म की पहली पंक्ति पढ़ने के बाद ही डायरी बन्द कर दी। अचानक मेरा जिस्म थरथराने लगा था। मेरी देह का रोम-रोम बावला हुआ जा रहा था। मेरी शिराओं में बहते लहू का वेग इस वक्त ज्वार-भाटे के मुकाबिल था। मैंने लवी की ओर देखा तो डायरी बन्द करने की वजह से उसके होंठों पर खेल रही मुस्कान

जो उसकी सहेली थी वो गायब हो गई थी। मेरे थरथराते पैरों ने मुझे लवी के बिल्कुल सामने एकदम करीब ला दिया।

“सिक्सटीन, स्वीट सिक्सटीन।” मेरे कांपते अधरों से ये अल्फाज़ नज़्म के मानिन्द निकले। मेरी बात सुनकर उसने आँखें झुका ली। मैंने डायरी एक तरफ रखकर लवी के मरमरी बांहों के उस सबसे आकर्षक हिस्से जहाँ नशतर के निशान थे, से पकड़कर उसे अपनी ओर खींचते हुए बोला, “लवी प्लीज! रिप्लाइ मी।”

मेरी बात सुनकर उसने एक बार अपनी उनींदी आँखों से मेरी आँखों में देखा और फिर मेरे सीने में सिमटते हुए बोली, “यस कुणाल, यस।”

अपने बांहों में सिमटी लवी के महकते बालों को चूमते हुए मैंने कहा, “लुबना वो खत तुमने .. !” और मेरी बात पूरी होती उससे पहले ही वो वह कह उठी, “हाँ कुणाल मैंने ही लिखा था।”

“फिर बाद में कोई खत क्यों नहीं लिखा और क्यों नहीं मिलने के बाद बताया कि तुम मुझे प्यार करती हो।”

“मैं बता देती। मैं बताना चाहती थी। मैं खत भी लिखना चाहती थी। पर क्या करूँ ये मेरी बदनसीबी थी जो मैं आपसे अपने दिल की लगी कह पाती उससे पहले ही आप बंटी और संजू को अपना साथी बनाकर मंजिल को ढूँढने लगे।”

“वो मेरी मंजिल नहीं बल्कि अंधेरे की वो परतें हैं जिन्हें दिन का सूरज भी बंध नहीं पाता।” अचानक मैंने लवी को खुद से परे कर दिया था। पर वो मेरे पास आकर बोली, “कुणाल आप चाहे तो मुझे ठुकरा सकते हैं। जरूरी नहीं कि आप मेरी मुहब्बत का जवाब अपनी मुहब्बत से दे।”

यह सुनकर मैंने तड़पते हुए उसकी बांह को खींचा और अपने करीब लाकर कहा, “लवी मैं खुशनसीब हूँ जो तुम्हारी मुहब्बत मुझे हासिल है पर मेरे जीवन का अंधकार इतना घना है कि डर लगता है यह सोचकर कि कहीं ये तुम्हारे जीवन को भी कालिमा से न भर दे।”

“और जो मैं कहूँ कि मैं तुम्हारे अंधेरेपन को दिये की लौ बनकर खत्म करना चाहती हूँ तो!” लवी मेरी आँखों में झांक रही थी। उसने आगे कहा, “और जो मैं कहूँ कि मैं सब जानती हूँ।”

“लवी!”

“हां कुणाल, अब कहो क्या जवाब है तुम्हारा?”

“तो . तो मैं इस दिये की लौ को अपने दिल में ऐसे सजाऊंगा जैसे मंदिर में दिये की लौ सजती है।” मैंने लवी की पतली कमर को अपने हाथों से पकड़कर कहा और ठीक उसी वक्त उसने अपनी खूबसूरत बांहें मेरे गले में डाल दी और हम दोनों ने एक साथ कहा - “आई लव यू ”

दूधिया पाँव और रात की स्याही

वो एक सुहानी शाम थी। और तब तक सुहानी थी जब मैं लवी के साथ सी **पार्वफ** रोड पर चिड़िया घर घूमने के बाद अपने फ्लैट पर पहुँचा था। मैं अभी अपने जूतों की फीते खोल ही रहा था कि कॉल बेल की कर्कश आवाज़ ने उस सरगम की मिठास को कसैला कर दिया था जो मैं अभी कुछ देर पहले लवी से सुनकर आया था। दरवाजे पर बज रही घंटी की फ्रीक्वेंसी से मैंने बेहयायी के साथ एक पाँव से निकाला हुआ जूता हाथ में पकड़े हुए डोर खोला।

“अरे वाह एक बार मिसेज अंजली ने जूती से शराब क्या पिलाई। साहब के हाथ में हर वक्त जूती या जूता रहने लगा।” दरवाजे पर खड़ी संजू ने मेरे हाथ की ओर इशारा करके अपने साथ खड़ी बंटी से कहा। और फिर वो दोनों ही मुझे थोड़ा ढकेलते हुए अन्दर आ गईं।

अन्दर आते ही संजू ने मेरे गले में अपनी बांहें डालकर कहा, “बंटी इसे सबसे पहले मैंने हासिल किया था। इसलिये जब ये मिसेज अंजली के साथ रात बिता रहा था तो मेरे दिल में एक अजब सी कसक हो रही थी।”

“संजू तुम शायद नहीं जानती तुम पहली लड़की थी जिसके मैं करीब आया था। और सच कहूँ तो मैं तुम्हें चाहने लगा था।” मेरी बात सुनकर बंटी जिसने दरवाजा बन्द करके सिटकनी लगा दी थी, वो हँस पड़ी और उसके साथ संजू भी हँस पड़ी।

वो दोनों हँसते हुए सोफे पर बैठ गईं। फिर अपनी हँसी को काबू में करते हुए बंटी बोली, “प्यार .. अगर तुम्हें संजू से प्यार हो गया था तो फिर तुम एक ही झटके में मेरे बेड पार्टनर कैसे बन गये थे?”

“वो उस दिन संजू का न मिलना। और फिर तुमने भी तो मुझे वो ‘ब्लू फिल्म’ दिखाकर उकसाया था।”

“ओय मिस्टर! चोरी और सीनाजोरी।” बंटी खड़े होते हुए बोली, “प्यार करने वाले उकसाने से इतनी जल्दी बहक नहीं जाया करते।” फिर संजू की तरफ देखकर “क्यों संजू उस बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है?” कहते हुए उसने संजू की ओर देखकर अपनी बाईं आँख दबाई।

“छोड़ो पुरानी बातें बंटी। अब उन बातों से क्या मतलब?” फिर संजू खड़ी होकर मेरे गाल पर चुम्बन लेते हुए बोली, “मैं तो इसके साथ बहकना चाहती हूँ अभी, पर क्या करूँ .. इसे मिसेज अंजली ने पसंद कर लिया है। और इसे भी तो उनकी जूती से शराब पीना पसंद है।”

संजू मेरे होंठों को अपनी उंगली के बड़े हुए नाखूनों से खरोंच रही थी।

“गलतफहमी है तुम्हारी।” मैंने संजू को अपने से परे धकेलते हुए कहा, “अब मैं हरगिज मिसेज अंजली के पास नहीं जाऊँगा। वो रात गई, बात गई।”

“हमने भी पहले ऐसे बहुत नखरे किये थे पर मिसेज रंजना कच्ची खिलाड़ी नहीं है। उनके चक्रव्यूह में फंसकर निकलना नामुमकिन है।” बंटी ने वहीं सोफे पर बैठे-बैठे कहा।

“मतलब तुम लोगों को भी मेरी तरह फंसाया गया है। सोचो अगर हम चाहे तो इस चक्रव्यूह से निकल सकते हैं।” मैंने बंटी को कंधों से पकड़कर झिंझोड़ा।

मेरी बात सुनकर बंटी और संजू खामोश हो गईं और फिर वे दोनों खामोशी से दरवाजे की ओर बढ़ गईं। बंटी ने दरवाजे की सिटखनी खोली और संजू ने मेरी ओर देखकर कहा, “आज रात दस बजे बंटी के फ्लैट पर आ जाना। मिसेज अंजली आ रही है। वरना मिसेज रंजना .।” संजू ने वाक्य को अधूरा छोड़कर बंटी के साथ दरवाजे से बाहर निकल गईं।

मैं पीछे से चिल्लाया - “बंटी . संजू . सुनो तो!” पर मेरी इस पुकार का जवाब बंटी और संजू की जगह संजू द्वारा बन्द किये गये दरवाजे की आवाज़ ने दिया।

मिसेज अंजली ने अपनी जूती में शराब उड़ेलकर मेरी ओर बढ़ाया। मैंने मिसेज अंजली के हाथ में शराब से भरी जूती को हिकारत भरी नज़रों से देखकर भी कुछ कर न सका।

“कौन जाति के हो?” मिसेज अंजली ने मुझसे पूछा।

“गौतम” मैंने जवाब दिया।

“गौतम, गौतम क्या?”

“मेरा सरनेम है गौतम।”

“मैंने सरनेम नहीं जाति पूछी है।”

“चमार”

“ओह इतनी छोटी जाति। जानते हो इतनी छोटी जाति वालों को हम अपने साथ बैठने नहीं दिया करते।”

“और इतनी छोटी जाति वालों के नीचे लेट सकती हो।”

“शटअप।”

मेरी बात की चुभन से तड़पकर मिसेज अंजली ने दहाड़ा।

“लो इसे पीकर अपना मूड बनाओ।” उन्होंने मेरी ओर अपनी जूती बढ़ाई।

“अब जो मूड बनाना है तो इसे अपने हाथों से ही पिला दीजिए।” मैं जानता था मेरे पास मिसेज अंजली की बात न मानने का कोई विकल्प नहीं था। अब तक मैं ये भी जान चुका था कि मिसेज रंजना के पास बंटी और संजू की तरह ही मिसेज अंजली के साथ मेरे अतरंग पलों की भी मूवी जरूर होगी।

मेरी बात सुनकर मिसेज अंजली ने मेरे मुँह में अपनी जूती की शराब उड़ेल दी। मिसेज अंजली के पाँव के पसीने की गंध के साथ शराब मेरे हलक को पार चुकी थी और मैं मिसेज अंजली को फूल की तरह उठाकर उस बेड पर ले आया, जहाँ कई बार मैं बंटी के साथ हमबिस्तर हो चुका था।

उस रात उत्तेजना के चरम पर मैंने मिसेज अंजली से पूछा, “कैसा लग रहा है मेम साहब?” तो उन्होंने मेरी पीठ पर अपने नाखून के निषान छोड़ते हुए कहा, “वेरी नाइस”

और फिर उस “वेरी नाइस” ने मेरी इतनी मदद की, कि मिसेज अंजली ने मिसेज रंजना से कहकर मुझे अपने लिए रिजर्व करा लिया। वरना संजू और बंटी से मुझे पता चला था कि मिसेज रंजना मुझे जल्द ही और भी कई खूसबूरत औरतों के हवाले करेंगी। मिसेज अंजली की तरह ही बंटी और संजू भी कभी-कभी मेरे साथ बिस्तर पर आ लेटती और मैं एक मशीन की तरह उनकी बात मानता रहा। मिसेज अंजली ने अब तक न जाने कितनी बार अपनी जूती से मुझे शराब पिला चुकी थी। मेरे दिमाग में अब उनके दूधिया पाँव के पसीने की गंध रच-बस चुकी थी। बंटी, संजू के मखमली जिस्म और मिसेज अंजली के दूधिया पाँव की चमक के बाद भी मेरे दिन मुझे स्याह लगते और मैं दिन पर दिन, इन स्याह दिनों के अभिशाप को चुपचाप झेलता रहता। ऐसे ही एक दिन जब संजू तन्हाई में मुझसे मिलकर जाने लगी तो ठीक उसी वक्त लवी मुझसे मिलने मेरे फ्लैट पर आई।

दोनों ने एक-दूसरे को देखा और फिर बिना कुछ कहे अपने-अपने रास्तों पर आगे बढ़ गई, मतलब संजू बिल्डिंग से बाहर जाने के लिए सीढ़ियां उतरने लगी और लवी कमरे के अंदर आ गई।

अंदर आते ही लवी ने बैग से एक टिफिन बाक्स निकालकर टेबल पर रखते हुए कहा, “कुणाल आपके लिए खाना लाई हूँ, अभी खा लो गर्म है।” पर मैंने उसकी बात को कोई तवज्जो नहीं दिया बल्कि उसे देखता रहा और सोचता रहा कि लवी की जगह कोई और लड़की होती तो यूँ अपने प्रेयस के कमरे में किसी गैर लड़की को देखकर क्या कहर बरपाती। आखिर किस मिट्टी की बनी है मेरी प्रेयसी लवी जो संजू को मेरे साथ देखकर भी ‘उपफ’ नहीं कर रही है।

“खाना रेस्तरां से नहीं घर से लाये हैं अम्मी का बनाया हुआ। उसे खाइये और यूँ मेरे सामने बुत बनकर मत खड़े रहिये।” लवी ने मेरा हाथ पकड़कर मुझे टेबल के पास चेयर पर बिठा दिया और लंच बाक्स खोलकर प्लेट में खाना सर्व कर दिया।

“तुम नहीं खाओगी।” नहीं मैंने लवी की ओर देखा।

“मैं खाकर आई हूँ और फिर इस लंच बाक्स में एक लोग का ही खाना आता है।”

मैंने खाना शुरू किया क्योंकि लवी की बात को नकार नहीं सकता था। सच तो ये है कि मैं उसकी हर बात को मानना चाहता था। खाना खाते हुए मैंने देखा लवी कमरे की अव्यवस्थित चीजों को व्यवस्थित कर रही है।

मैंने धीरे से कहा, “लवी”

“हाँ, बोलो?” वो मेरी किताबें आलमारी में रखते हुए बोली।

“एक बात पूछूँ?”

“हाँ, पूछो, आपको हक है।”

“तुम संजू को देखकर भी इतनी शांत कैसे हो?”

“संजू भी लड़की ही तो है, कोई परेशानी नहीं जो मैं अशांत हो जाऊँ।”

“फिर भी . !”

“पर फिर भी क्या कुणाल!”

लवी अब मेरे पास एक कुर्सी खींचकर बैठ चुकी थी। फिर वह अपने नर्म हाथों से मुझे पुलाव का निवाला मेरे मुँह में रखते हुए बोली, “जानना चाहते हो मैं इतना शांत कैसे हूँ?”

मेरे होठ खामोश रहे पर मेरी आँखें कह उठी थी, “हाँ”

“जानते हो कुणाल जब आप किसी गैर के साथ होते हैं तो मैं अपने ख्यालों में उसका रूप धर लेती हूँ। मैं खुद को ‘वही’ बना लेती हूँ जिसके साथ आप होते हैं और फिर कुणाल जानते हैं। मैं वह महसूस करती हूँ जो आप उस वक्त उसके साथ कर रहे होते हैं।”

“लवी” उसकी बात सुनकर मेरे होंठों से सिसकारी निकली और उसी वक्त लवी ने अपने हाथों से मेरा सिर अपने सीने में छुपा लिया।

“पर लवी जब मैं किसी गैर के साथ होता हूँ तो धिक्कारता हूँ खुद को। कोसता हूँ अपने आपको।” कहते हुए मैंने अपने आपको लवी के स्तनों में छुपाने की कोशिश की।

“ऐसा क्यों कह रहे हैं आप?” लवी ने तड़पकर अपनी हथेलियों में मेरे चेहरे को भरकर, आँखों में आँसू लाते हुए कहा।

अपने हाथों की उंगलियों से उसके आँसू पोंछते हुए मैंने कहा, “लवी मेरी प्रियतमा! जब किसी गैर साथ होता हूँ तो मैं हर वक्त ये सोचता हूँ कि मैं तुम्हारे साथ छल कर रहा हूँ, फरेब कर रहा हूँ।”

“न मेरे महबूब! ये गलतफहमी है आपकी। आप ऐसा हरगिज़ न सोचें।”

“तो मैं क्या करूँ लवी, अब तुम्हीं कह दो।”

“क्या आप भी वही सोचते हैं, जो मैं सोचती हूँ?”

“क..क्या .. क्या लवी?”

“यही कि आप किसी गैर के साथ नहीं, मेरे साथ ताल्लुक बना रहे हैं।”

“ल .. लवी।”

“हाँ कुणाल, और जानते हैं। अल्लाह जरूर हमारी मदद करेगा और आप एक दिन इस दलदल से बाहर निकल जायेंगे।”

“पर वो दिन कब आयेगा लवी?”

“आयेगा जल्द आयेगा कुणाल। और जानते हो जब वो दिन आयेगा तो मैं आपको एक तोहफा दूंगी।”

“कैसा तोहफा?”

“जब दूंगी तब देख लेना।” कहकर लवी कुर्सी से उठी और चल दी।

“मुझे अभी जानना है।” मैं भी उठकर उसके पास आ गया।

“कहा न, जब दूंगी तब जान लेना।”

“नहीं मुझे अभी जानना है नहीं तो .।”

“नहीं तो क्या?”

“नहीं तो मैं खाना नहीं खाऊंगा।।”

“ओप्फहो, ठीक है. उस दिन मैं और आप यानी हम दोनों, आभासी नहीं वास्तविक ताल्लुक बनायेंगे।” कहकर लवी ने अपना चेहरा अपनी हथेलियों में छुपा लिया और उसकी हथेलियों के ऊपर मैंने उसके होंठों के पास अपने होंठों से एक हल्का सा चुम्बन ले लिया। इसके साथ ही मेरे जिस्म में लवी के जिस्म का नमक घुल गया। मेरे हाथ उसकी कमर के इर्द-गिर्द थे और उसके हाथ मेरे गले में हार की तरह। पर हमारे थरथराते-कांपते जिस्म बहक पाते उससे पहले ही लवी ने मुझे अपने से परे करते हुए एक प्रेम गीत गाकर कहा, “ये कली फूल बनकर जब तलक खिले इंतजार .. इंतजार .. इंतजार करो।”

“उप्फ! पर उस कली के फूल बनने तक मुझसे इंतजार नहीं होगा।”

“अच्छा साहब, ठीक है. तो आप इंतजार के साथ तब तक मेरी अम्मी का बनाया हुआ पुलाव खाईये।”

लवी अपनी कोमल उंगलियों से मेरे सिर के बाल **बेतरतीब** करते हुए बोली। और फिर मेरी ओर देखकर ‘भालू’ कहकर हँस पड़ी। उसे हँसता देख मैं भी हँस पड़ा। हम दोनों हँसते रहे न जाने कितनी देर तक ये भूलकर कि हम कितनी बुरी तरह से एक चक्रव्यूह में फंसे हुए हैं। लवी भले ही मुझे संजू के साथ देखकर शांत थी। शायद मेरी मुहब्बत ने उसके दिल को बहुत बड़ा बना दिया था पर लवी को मेरे पास आते देखकर संजू के दिल पर सांप लोट गया था।

वेटर को दो कप कॉफी लाने को कहकर संजू वापस खामोश हो गई। उसने मुझे हजरतगंज के इंडिया कॉफी हाउस में मिलने को बुलाया था। जब मैं कॉलेज से वहाँ पहुँचा तो संजू मुझे कॉफी हाउस के बाहर किसी मैंगीन के पन्ने उलटते हुए मिली। सफेद जींस, ब्लू टीषर्ट, पाँव में स्पोर्ट शूज़ और खुले बालों में सिर के ऊपर काला चश्मा। वह बेहद खूबसूरत लग रही थी पर अब उसकी खूबसूरती मेरे लिये कोई सरोकार नहीं रखती थी। उसकी सुंदरता के मेरे लिये अब कोई मायने नहीं थे।

“संजू” मेरे आवाज़ देने पर वह अपने हाथ की मैंगीन को दाये कंधे पर लटक रहे एयर बैग की जिप खोलकर उसमें डाल दिया और फिर बिना कुछ कहे कॉफी हाउस के अंदर आकर बैठ गई। उसके पीछे चलते हुए मैं भी उसके

सामने आकर बैठ गया। वेटर को दो कप कॉफी का आर्डर देने के अलावा संजू कुछ न बोली। मैं भी खामोश था और मेरी खामोशी का सबब ये था कि जब मुझे संजू ने मिलने को बुलाया, तो फिर बात का आगाज़ भी उसी को करना चाहिये। कॉफी आने तक हमारे बीच मुकम्मल खामोशी रही। कॉफी का पहला घूंट भरकर संजू ने मेरी कॉफी की ओर अपने दांये हाथ से इशारा करके कहा, “कुणाल कॉफी पी लीजिये। यहाँ लखनऊ की सबसे अच्छी कॉफी मिलती है।”

“आपने शायद मुझसे कोई बात करने के लिये बुलाया था।” मैंने कॉफी का मग उठाते हुए कहा।

“कुणाल अगर तुमने बेवफाई न की होती तो शायद आज हम ‘लव कपल’ होते।”

“बेवफाई.? लव कपल जैसी बातें तुम्हारे होंठों पर बेमानी है, मिस संजना सचाना।” मैंने जलती आँखों से उसकी आँखों में देखकर कहा।

“चलो मान लेते हैं कुणाल, मेरे होंठों से प्यार मुहब्बत की बातें अच्छी नहीं लगती। पर तुमने कौन सा प्यार का नाम बहुत ऊंचा किया है।”

“संजू अगर मैंने प्यार का नाम ऊंचा नहीं किया है तो मैं इस हमारे बीच लव कपल होने का दावा भी तो नहीं कर रहा हूँ।”

“तुम दावा नहीं कर रहे, क्योंकि तुम हमारे लव कपल होने का दावा नहीं कर सकते।” संजू टेबल पर अपना हाथ रखकर मेरी ओर झुकते हुए बोली, “पर लुबना से प्यार कर सकते हो।”

“अपनी तुलना, लुबना से मत करो संजू।” मैं भी टेबल पर उसकी ओर थोड़ा झुक गया।

“क्यों लुबना में क्या कोई सुर्खाब के पंख लगे है। मेरी ही तरह वो भी फीमेल ही तो है।”

“हाँ, वो फीमेल ही है और उसमें कोई सुर्खाब के पंख भी नहीं लगे पर तुम लोगों के जैसे कोई घटिया खेल नहीं खेलती। न ही लोगों को फंसाने के लिये जाल बिछाती है। बल्कि वो .. वो तो .. छोड़ो संजू तुम उसकी बात मत ही करो क्योंकि तुम उसकी बात करने के लायक भी नहीं हो।”

“बल्कि वो तो क्या..? कहो कुणाल ऐसा कौन सा बड़ा काम करती है वो, जो तुम उसके इतने कायल हुए जा रहे हो।”

“सुनना चाहती हो तो सुनो - वो घर से मिलने वाले जेब खर्च के पैसों को बचाकर गरीब बच्चों की पढ़ाई में मदद करती है। अपने रेस्तरां का खाना वो

गरीबों को खिला देती है। वो और भी ऐसे कई काम करती है जिन्हें तुम समझ न सकोगी। इसलिये तुम्हारे सामने उनका जिक्र ही मुझे फिजूल लगता है।”

संजू ने कॉफी का मग उठाया और एक लम्बा घूंट भरकर उसे खाली करके रखते हुए बोली, “कुणाल ये काम इतना महान तो नहीं जो उसकी तारीफ के इतने पुल बांधे जायें।”

“तुम ठीक कह रही संजू उन लोगों को ये काम महान नहीं लग सकते जो अय्यासी और जिस्म की भूख मिटाने के लिये कन्डोम और प्रेग्नेन्सी रोकने वाली टैबलेट्स खरीदने के पैसा जाया करते हैं।”

मेरी बात सुनकर संजू ने शांत होकर मेरे चेहरे पर अपनी नज़रें गड़ा दी। इस वक्त उसका चेहरा बिल्कुल सपाट था। मैं लाख कोशिश करने के बाद भी ये न जान सका कि इस वक्त वो क्या सोच रही है।

“कुणाल तुम ये सब उस लुबना के लिये मुझसे कह रहे हो? ओके, आई विल सी हर सूना।” संजू ने कहा और भागती हुई कॉफी हाउस के बाहर निकल गई। उसके पीछे-पीछे मैं भी बाहर आया। मैंने उसे आवाज़ दी लेकिन वो सड़क पर पहुँच चुकी थी।

शायद उसने गाड़ियों के शोरगुल में सुना नहीं या सुनकर भी अनसुना कर दिया। मैं उसे दुबारा पुकारता उससे पहले उसके पास एक कार आकर रुकी। ड्राइविंग सीट पर संजू की मम्मी थी। संजू डोर खोलकर कार में बैठ गई और कार दौड़ पड़ी। मैंने हाथ उठाकर कार की तरफ ज्यों ही बढ़ा, चार मजबूत हाथों ने मुझे दबोच लिया। दो वेटर ने मुझे दबोचकर कॉफी हाउस के भीतर ले आये और मैनेजर के पास ले जाकर बोले, “ये लड़का बिना बिल पे किये यहाँ से जा रहा था।”

मैं अपनी सफाई में कुछ बोल पाता उससे पहले ही मैनेजर बोला, “लड़की के सामने हीरो बनने के लिये उसे डेट पर तो ले आये पर कॉफी का पैसा क्या तुम्हारा बाप भरने आयेगा।”

“मैंने कहा, सर आप बाप को बीच में मत लाइये मैं कॉफी के पैसे दे दूंगा और मेरा बिना पैसे दिये यहाँ से जाने का कोई इरादा नहीं था।”

“ओके” मैनेजर वेटर की ओर देखकर बोला, “इसका बिल देकर पैसे ले लो, मेरे पास फालतू काम के लिये ज्यादा वक्त नहीं है।”

बिल पर मेरी नज़र पड़ी तो लगा मेरी धड़कनें रुक जायेगी। मैं जानता था मेरे पास इतने पैसे नहीं है फिर भी मैंने अपनी सारी जेबें टटोल डाली। मैनेजर

और वेटर मेरी ओर लगातार देखे जा रहे थे। मैंने धड़कते दिल से अपनी कलाई से वो घड़ी उतारी जो लवी ने मुझे कुछ दिन पहले गिफ्ट की थी और उसे काउंटर पर रखते हुए कहा, “सर क्या इस घड़ी की कीमत इस बिल के बराबर होगी?”

घड़ी को काउंटर के ड्रॉर में डालते हुए मैनेजर ने वेटर की ओर मुखातिब होकर कहा, “जाने दो इसे और ध्यान रहे, ये दुबारा यहाँ न आने पाये।”

मैं थके कदमों से कॉफी हाउस से बाहर निकला और फ्लैट की ओर चल दिया। कि तभी एक कार के पहिये मेरे बगल में आकर चीखे। मैंने देखा कार मिसेज अंजली चला रही थी।

“बैठ जाओ।” वो अधिकार के साथ बोली। मैं उनका आदेश मानते हुए कार में आ गया। गियर डालते हुए वो बोली, “कुणाल मेरे दूधिया पाँव तुम्हारे होंठों को स्पर्श करने को तड़प रहे हैं।”

मैं चुप रहा। वो दुबारा बोली, “अरे खुश हो जाओ। तुम इस साल ‘वैलेन्टाइन डे’ मेरे साथ सेलीब्रेट कर रहे हो।”

वैलेन्टाइन डे और बगावत

उस दिन जब मैं मिसेज अंजली के दूधिया पाँव के पसीने गंध अपने होंठों से साफ करके अपने फ्लैट पर आया तो मेरे दिमाग में ‘वैलेन्टाइन डे’ की घंटी बज रही थी। क्योंकि मैं गांव से शहर इसी साल आया था। तो इस ‘डे’ का महत्व मैं नहीं जानता था कि आखिर ये ‘वैलेन्टाइन डे’ इतना महत्वपूर्ण क्यों है जिसके लिये मिसेज अंजली जैसी करोड़पति महिला भी उत्सुकता दिखा रही है। खैर मैंने मन ही मन सोचा, जब लवी मिलेगी तो उससे इसके बारे में पूछूंगा। यह सोचते हुए मैं अपने जेहन को मिसेज अंजली के पाँव के पसीने की गंध से आज़ाद करने के लिये नीचे उतर कर कैम्पस की ठण्डी हवा में आ गया।

जब से मैं संजू और बंटी के मकड़जाल में फंसा था, तब से मैं अपने दूर के रिश्तेदार बृजलाल के यहाँ जाने लगा था। वहाँ कविता और रवि के साथ मेरा वक्त थोड़ा बहुत सुकून से बीत जाता और कभी-कभी वहाँ लवी भी मिल जाती और आँखों ही आँखों में हम ढेरों बातें कर लेते। मैं आज भी वहाँ उनके

छोटे से क्वार्टर में पहुँच गया। बृज काका और चाची वहाँ थे। मैं राम गुहार करके बैठ गया। काका गांव का जिक्र ले बैठे और चाची चाय बना लाई। चाय पीते हुए मैंने पूछा, “कविता और रवि नहीं दिखाई दे रहे, कहीं गये है क्या?”

“हाँ, वो अपने जिला के डिप्टी कलेक्टर है न। यही ‘बी’ ब्लाक में रहते हैं। उनकी लड़की आई थी उन्हीं के साथ गई है कविता। बेचारी बहुत भली लड़की है। कह रही थी, कविता को कत्थक वाला नाच सिखा देगी। कोई मास्टरनी उसकी पहचान की है। बहुत भली लड़की है।” काका ने बताया तो मेरे होंठों में शब्द घुटे ‘संजू’ और चाची ने उसी वक्त कहा, “और ये बागड़बिल्ला रवि, यहीं कहीं बाहर खेल रहा होगा बड़े घरन के लड़कन संग।”

संजू ने एक दिन मेरे होंठों को चूमने के बाद बताया था, उसके पापा मेरे जिले के प्रोन्नति होकर ए.डी.एम. बन गये है। बप्पू काका ने जब कहा, “हमारे जिले के डिप्टी कलेक्टर की लड़की के साथ कविता कहीं कत्थक सीखने की क्लास में गई है तो मैंने अंदाजा लगाया वो लड़की संजू रही होगी। संजू अचानक कविता पर क्यों मेहरबान हो रही थी। मेरे दिमाग में घंटिया बज उठी और मैं काका और चाची को नमस्ते कहकर वहाँ से बाहर आ गया। अब मैं तुरन्त संजू से मिलना चाहता था। जब हांफती सांसों के साथ मैं संजू के फ्लैट पर पहुँचा तो वहाँ डोर को लॉक पाया।

‘संजू शायद कविता को बंटी के फ्लैट पर ले गई होगी।’ सोचते ही मेरा मन आर्षका से लरज उठा। तीसरी कॉलबेल पर दरवाजा खुला। दरवाजा बंटी ने खोला था। उसकी देह और बालों में पानी की बूंदे क्रीड़ा कर रही थी।

“क्यों घंटी बजाये जा रहे हो?” बंटी अपने बालों का पानी गुलाबी तौलिये में ज़ब करते हुए बोली।

“संजू कहाँ है, बंटी?” मेरी बात सुनकर बंटी होठ दबाकर मुस्कराई और फिर बिना कुछ कहे वापस मुड़कर कमरे के मध्य में आ गई।

“मैं तुमसे कुछ पूछ रहा हूँ बंटी!” मैं भी अब कमरे के मध्य में आ चुका था।

“ठीक ही कहा है किसी ने, इंसान के सामने कितनी ही खूबसूरत लड़की खड़ी हो पर वो याद अपने पहले प्यार को ही करता है।” बंटी बेड पर टावेल फेंकते हुए बोली।

“बंटी मैं इस वक्त मज़ाक के मूड में हरगिज नहीं हूँ।” मैंने बंटी को कंधों से पकड़कर झिंझोड़ा।

“कुणाल, यूँ कमीज के ऊपर से टच करने से मूड नहीं बनता। बेट मैं कमीज उतारती हूँ।” कहकर बंटी हँस पड़ी।

बंटी को यूँ हँसता देखकर मैं तिलमिला कर रह गया, पर मैं जानता था मेरी ये तिलमिलाहट बंटी का कुछ नहीं बिगाड़ सकती थी। हम दोनों भले ही विधायक निवास में रहते थे। पर बंटी एक विधायक की बेटी थी और मैं एक विधायक के नौकर का बेटा। हमारी हैसियत का ये फ़र्क जमीन-आसमान का फ़र्क था और इस फ़र्क को खत्म कर पाना नामुमकिन था। अपनी विवशता से विवश होकर मैंने कहा, “बंटी प्लीज बता दो संजू कहाँ गई है और वो अपने साथ कविता को क्यों ले गई है?”

“बता दूंगी पर ऐसे नहीं।”

“फिर कैसे?”

“आजकल तुम संजू और मिसेज अंजली में ऐसे डूबे हो कि हमें भूल ही गये हो।” कहते हुए बंटी ने झटके से अपनी कमीज उतार दी। उसके पुष्ट और ठोस स्तन ट्यूबलाइट की मध्यम रोशनी में भी चमक उठे और उनकी चमक ने मुझे अपनी ओर वैसे ही खींच लिया जैसे कांटे में फंसा आटा मछली को अपनी ओर खींच लेता है। लेकिन बंटी ने ज्यों ही कहा कि ‘कविता, मिसेज रंजना को पसंद आ गई है।’ मेरा हाथ हवा में लहराया और चटाक की आवाज़ के साथ बंटी के गाल से टकराया।

बंटी जिसने अभी-अभी मुझसे जिस्मानी सुख हासिल किया था वो अपने नंगे जिस्म के साथ फ़र्श पर जा गिरी। थप्पड़ की गूँज के बाद कमरे में अजब सा सन्नाटा पसर गया। एक इतने बड़े बाप की लड़की को मैं थप्पड़ मार सकता हूँ, सोचकर मेरी सांसें असंयत हो गई थी। कुछ देर फ़र्श पर पड़े रहने के बाद बंटी ने मेरी ओर जलती निगाहों से देखा। पीड़ा और अपमान के क्रोध से जलती आँखें।

“यू सेड्यूल कास्ट, तुम्हारी इतनी हिम्मत, जो मुझपर हाथ उठाया।” बंटी के होंठों से मानों षब्द नहीं अंगारे निकल रहे थे।

“और तुम अभी-अभी इसी सेड्यूल कास्ट से अपना जिस्म दबवाकर ‘ऊंह, आह’ करके खुश हो रही थी।”

“यू बास्टर्ड, गेट आउट फ्राम हियर।” बंटी दहाड़ती हुई बोली और मैंने उस वक्त वहाँ से जाना ही ठीक समझा। मैं भले ही सेड्यूल कास्ट था, चमार था

पर मूर्ख नहीं। मैं बंटी की सामर्थ्य और ताकत जानता था और उसका गुस्सा मुझे किसी न किसी मुसीबत में ढकेल सकता था।

“आप स्वार्थी हो कुणाल भाई।” कविता बड़े ही रूखेपन से कह रही थी “जब आप बड़े घर के लोगों से दोस्ती कर रहे थे तो सब ठीक था पर अब जब कलेक्टर की लड़की मेरी दोस्त बन गई है तो आपको जलन हो रही है।” जब कविता ने अपनी बात खत्म की तब मैं उसकी बात सुनकर उसके लिये बेहद चिन्तित हो उठा।

“ये जलन नहीं है कविता, तुम समझ नहीं रही हो और मैं ये नहीं समझ पा रहा हूँ कि तुम्हें कैसे समझाऊँ।”

“भाई समझ तो आप नहीं रहे हैं, अब जबकि संजू दीदी मुझे कथक सीखने में मदद करना चाहती है तो इससे आपको आखिर प्रॉब्लम क्या है।”

“यही तो प्रॉब्लम है कविता जो तुम्हें कथक सिखाने में संजू तुम्हारी मदद कर रही है।”

“मतलब आपको मेरा संजू से मिलना-जुलना पसंद नहीं?”

“हाँ, कुछ ऐसा ही समझ लो।”

“और जो आप संजू से मिलते-जुलते हैं उसमें कोई प्रॉब्लम नहीं। आप तो बंटी से भी मिलते हैं।”

“ये तुम नहीं समझोगी कविता।”

“अच्छा मैं ये नहीं समझूंगी पर मैं ये समझती हूँ भाई कि आप चाहते हैं कि सिर्फ आप ही बड़े आदमी बनें। बड़े आदमियों से दोस्ती करे और हम ऐसे ही झोपड़ी में पड़े रहे। आपको तो विधायक निवास में रहने का इतना घमण्ड आ गया कि हमें एक बार भी अपने वहाँ नहीं बुलाया। और अब जबकि संजू दीदी मुझे अपने घर ले जाती है तो आपको जलन हो रही है।”

“ये जलन नहीं है कविता मैं तुम्हारे भले के लिये कह रहा हूँ।”

“न भाई आप हमारा भला नहीं सोच रहे बल्कि बड़े लोगों की दोस्ती से जल रहे हैं। सौरी भाई मैं अभी जा रही हूँ मुझे संजू दीदी के साथ कथक टीचर के पास जाना है बाया।”

मैंने कविता को रोकना चाहा पर वो तीर की तरह निकल चुकी थी और मैं वहाँ बुत बना खड़ा रहा। मैंने फैसला किया था मैं संजू से बात करूँगा और अगर वो कविता को किसी गलत राह पर डालना चाहती है तो उसे रोकूँगा। कैसे

भी। किसी भी तरीके से। मैं संजू से मिनत करूँगा कि वो मासूम कविता का जीवन बरबाद न करे।

मैंने संजू से बात की। कविता के बारे में। मेरी बात सुनकर वो संजीदा होकर बोली, “कुणाल बेफिक्र रहो मैं अब इतनी भी बुरी नहीं। मैं तो बस उसकी कत्थक सीखने की इच्छा को पूरी कर रही हूँ।”

संजू की बात सुनकर मैं थोड़ा मुतमुईन होकर जब जाने लगा तो संजू पीछे से बोली, “याद रखना कुणाल मिसेज अंजली ने तुम्हें वेलेन्टाइन डे के लिये बुक कर लिया है।”

“ठीक है।” मैंने बिना मुड़े और बिना रूके हुये कहा। फ्लैट पर पहुँचकर मैंने लवी को फोन किया। विधायक निवास में लगे सरकारी टेलीफोन से फोन लगभग न के बराबर करता था पर आज मेरे ज़ेहन की बेचैनी अपनी हद लांघ रही थी। आज मैं खुद को अपराधी समझ रहा था, एक ऐसा अपराधी जो अपना जीवन बरबाद करके अपनी कजिन का जीवन बरबाद करने जा रहा था। कविता अब बचपन की डेहरी लांघ रही थी। ज्यों-ज्यों उसकी उम्र बढ़ रही थी, उसकी खूबसूरती भी बढ़ रही थी। उसका शरीर उसे चौदह साल में ही जवान बना देने को बेताब था।

बंटी और संजू दोनों ही षातिर लड़कियाँ थी जिन्होंने मुझे अपने जाल में फंसाकर मिसेज अंजली का गुलाम बना दिया था। मिसेज अंजली अपने इस गुलाम से दैहिक आनन्द की प्राप्ति करके उसकी ओर नोटों के कुछ बंडल फेंक दिया करती थी। संजू और बंटी जैसे तो बड़े पैसे वाले घरों से ताल्लुक रखती थी पर वो मिसेज रंजना की जर खरीद गुलाम थी जिन्हें मिसेज रंजना कई बड़े अमीर लोगों के बिस्तर पर भेजती थी और बदले उन्हें नोटों के कुछ बंडल देती थी। इन रूपयों से बंटी और संजू अक्सर पार्टी मनाया करती थी।

मिसेज रंजना के बारे में मैंने जो अंदाजा लगाया वो ये था कि वह लोगों की जिस्मानी भूख शांत करने का कारोबार करती थी। मिसेज रंजना औरतखोर मर्दों के लिए खूबसूरत लड़कियों का बन्दोबस्त करती और मर्दखोर औरतों के लिये हैंडसम लड़कों का और इसकी उन्हें अच्छी-खासी कीमत भी मिलती। मिसेज अंजली एक बेहद खूबसूरत मर्दखोर औरत थी जिन्हें मैं पसंद आ गया था। जैसे तो मिसेज अंजली शादीशुदा थी और उनका पति किसी बड़ी कम्पनी में प्रेसीडेंट था। पर अपने पति की गैर मौजूदगी में बिस्तर पर मेरे साथ बेहद कामुक कलायें किया करती थी। जैसे तो वह उम्र में काफी बड़ी थी पर मैंने कई बार उन्हें बिस्तर पर बंटी और संजू से भी ज्यादा सेक्सी पाया। उसकी एक आठ-दस साल की बेटी

भी थी लेकिन वो इन सबसे बेपरवाह अपने जिस्म की सुंदरता और पैसे के घमण्ड के कारण सिर्फ और सिर्फ अपने यौन सुख में बुरी तरह लिप्त थी। और इसी सुंदर, आकर्षक, सेक्सी और कामुक महिला ने दो दिन बाद आने वाले वेलेन्टाइन डे पर अपने इस गुलाम के साथ रंगरेलियाँ मनाने का प्लान बनाया। पर इस वक्त मुझे अपनी नहीं बल्कि कविता का चिंता थी और इसी चिंता की वजह से मैंने लवी को फोन किया। लेकिन दूसरी तरफ से किसी पुरुष ने फोन उठाया और उनकी आवाज़ सुनते ही न जाने क्यों मुझे लगा मैंने ये आवाज़ कहीं सुनी है।

उन्होंने रौबदार आवाज़ में पूछा, “कौन बोल रहे हो, किससे बात करनी है?”

“लवी से बात करनी है।” मैंने सहमे हुए कहा।

“कौन लवी?”

“ल..लु .. लुबना।” मैं हकलाया।

“वो घर में नहीं है।” कहकर उन्होंने फोन काट दिया।

मैंने अन्दाजा लगाया शायद लवी इस वक्त अपनी पेंटिंग वर्कशॉप वाले फ्लैट पर गई होगी और मैं तुरन्त वहाँ के लिये निकल पड़ा। लेकिन मेरा अन्दाजा गलत था। फ्लैट का दरवाजा बन्द था। लवी के न मिल पाने की वजह से मैं बेचैन हो उठा और जब ढलती शाम के साथ मैं फ्लैट पर वापस आया तो बेचारी बेचैनी फर्श पर पड़े ‘स्वीट सिक्सटीन’ के लिखे हुए ख़त ने खत्म कर दी।

दूटते खंडहर कब तक दूटेंगे

अब जबकि मैं रात के गहन अंधकार में भी लवी की लिखावट पहचान सकता था।

अब जबकि मैं लवी के लिखे एक-एक अक्षर को किसी देवी का लिखा हुआ ग्रंथ मानता था।

अब जबकि लवी के लिखे एक-एक अक्षर से मुझे मुहब्बत हो चली थी।

अब जबकि लवी का लिखा एक-एक अक्षर का मैं इबादत करने लगा था।

अब जबकि मैं ‘स्वीट सिक्सटीन’ के लिखे हर एक अक्षर की खुशबू महसूस कर सकता था।

अब जबकि मैं जानता था कि लवी ही वो स्वीट सिक्सटीन है जिसका रोम-रोम मुझसे इश्क करता है।

अब जबकि मैं जानता था कि उसकी झील जैसी आँखों ने मुझे अपने वश में कर लिया है।

अब जबकि लवी - मेरी प्रेयसी जो मुझे खत लिखकर दो दिन बाद चौदह फरवरी यानी वेलेन्टाइन डे पर मुझसे नैनीताल के पहाड़ों पर मेरा साथ मांगे तो फिर क्यों न मेरा मन मयूर की तरह नाच उठे। मेरा मयूर मन लवी के लिखे अक्षरों का इतना कायल था कि वो बंटी, संजू के घटिया दांव-पेंच, मिसेज रंजना के चक्रव्यूह और मिसेज अंजली के दुधिया पाँव की गुलामी ठुकराकर तेरह फरवरी की रात काठगोदाम एक्सप्रेस के एक वातानुकूलित स्लीपर में अपनी प्रेयसी, अपनी लवी के साथ नाच रहा था।

ये नैनीताल का होटल मानसरोवर था जिसका एक वातानुकूलित कमरा लवी ने फोन पर बुक किया था। जब हम होटल के इस कमरे में पहुँचे तो वो प्रेम दिवस की एक हसीन सुबह थी जिसने झीलों के शहर नैनीताल की हर वादियों में मेरे नाम के साथ एक और नाम लिख दिया था 'लुबना' वो लुबना जो लवी नाम से मेरी ज़िन्दगी में यूँ शामिल थी कि मैंने उसे अपनी मंजिल मान लिया था। रूम लेते वक्त लवी ने होटल के रजिस्टर में खुद को मेरी पत्नी लिखवाते हुये अपना नाम शिवानी बताया। मैं उस वक्त हैरत में पड़ गया जब उसने शिवानी नाम का अपना राशन कार्ड अपनी आइडेंटी के रूप में होटल के मैनेजर को दिखाया। और इस तरह लवी के शिवानी नाम पर बुक किये होटल के उस कमरे में हम पति-पत्नी के रूप में आ गये।

“तुमने अपना नाम कब बदला लवी? मेरे सवाल के जवाब में लवी ने मेरे होंठों को अपने होंठों से चूमते हुए बोली, “वेलेन्टाइन डे की मुबारकबाद।”

“तुम्हें भी मुबारक हो ये मुहब्बत का दिन मेरी जान, मेरी प्रियतमा।” मेरी होंठों ने उसकी पेशानी से लगकर सरगोशी की।

“कुणाल, आज जबकि हम साथ हैं, तो आपके इस पाक सूरत पर ये उदासी क्यों दिखाई दे रही है मेरे महबूब।” लवी अपने हाथों में मेरा चेहरा लेकर उसपर बेशुमार चुम्बन लेते हुए बोली।

“न लवी न ये तुम्हारी गलतफहमी है जो तुम्हें मेरे चेहरे पर उदासी नज़र आ रही है। जबकि सच तो ये है कि मैं आज तुम्हें अपने यूँ नजदीक पाकर बेहद खुश हूँ।”

“कुणाल आपके बोले सच, आपने बोले झूठ मेरे नज़र, मेरे दिल की जद से बच नहीं सकते। मैंने न सिर्फ आपको प्यार किया है बल्कि मैं आपकी इबादत भी की है। अब आप ही कहो कुणाल कि क्या आपका मेरे सामने यूँ झूठ बोलना लाज़िमी है।” लवी की बात सुनकर मैं खामोश उसे न जाने कितने पल तक यूँ ही तकता रहा जैसी कोई भक्त अपनी आराध्या, अपनी देवी को देखता है और फिर मैंने कहा, “लवी तुम जानती हो मेरा हालात, तुम जानती हो मेरी प्रियतमा कि आज मुझे तुम्हारे साथ नहीं बल्कि मिसेज अंजली के साथ होना चाहिये था। अब मैं ये सोचकर परेशान हूँ कि आने वाले दिनों में वो मिसेज अंजली हमसे किस तरह इन्तकाम लेगी।”

मेरी बात सुनकर लवी ने अपनी छोटी कोमल हथेलियों से मेरा चेहरा सहलाते हुए बोली, “कुणाल, कल क्या होगा ये भूल के तुम मीठे सपनों में खो जाओ।”

मैं लवी की बात कर कोई जवाब दे पाता उसस पहले ही वो मुझे उस नर्म मुलायम बिस्तर पर ले गई जिस पर बिछी सफेद चादर कुछ लम्हों बाद हमारे प्यार की रवानी से रंग कर लाल हो गई थी। लवी ने अपना वो कौमार्य जो न जाने कितनी बार ख्वाबों-ख्वालों में मुझ पर निसार किया था, वो कौमार्य आज चटक कर मेरे नसीब का फूल बन गया। आज प्यार की राह ने मुझे और लुबना को वो मंजिल दी थी जिसकी हमने न जाने कितनी बार कामना की थी। अपने पहले पुरुष सहवास के बाद लवी मेरे सीने से कुछ इस तरह लिपटी थी मानों कोई परी किसी देवता को हासिल करके तृप्ति की सांस ले रही हो। उसकी सांसों के साथ उठते-बैठते उसके कठोर नग्न स्तन मेरे सीने में किसी पहाड़ की तरह चुभ रहे थे और उसकी मांसल, रोमहीन जांघें मेरे दोनों पाँव के बीच उसके समर्पण की गवाही दे रहे थे।

उस दोपहर हम दोनों एक-दूसरे के हाथों से खाना खाने के बाद एक झील के किनारे सर्द मौसम में आ गये। ऊपर पहाड़ों पर जमी सफेद बर्फ से छनकर आती ठण्डी हवा ने हमारे शरीर में उत्फत का अफसाना गढ़ने लगी। कत्थई जींस, पाँव में छोटे-छोटे लाल फूलों के कपड़े वाली जूतियाँ, ऊपर ब्राउन कलर का बेलवेट का जैकेट और सिर पर हरे रंग के ऊन की टोपी। लुबना

बिल्कुल एक परी की तरह लग रही थी। यकीनन जन्मत की किसी हूर की मानिन्द। और उस परी ने जब उस बेहद सर्द मौसम मुझसे आइस्क्रीम खाने की बात की तो मैंने उसे बेयकीनी से इस बदर देखा मानों अपने प्रियतम को पा लेने की खुशी ने उसे पागल कर दिया हो। मेरे चेहरे को लवी अब जबकि अंधेरे में भी पढ़ सकती थी तो फिर मेरे चेहरे पर उसकी बात सुनकर आये बेयकीनी के भाव वो क्यों कर न पढ़ पाती!

“कुणाल तुमने शायद वो मुहावरा नहीं पढ़ा।” लवी मेरा हाथ पकड़कर एक आइस्क्रीम पार्लर की ओर ले जाते हुए बोली, “वो मुहावरा, कि लोहा ही लोहा को काटता है।”

चाकलेट कॉर्नेटो वाली आइस्क्रीम खाते हुए लुबना मुझे वापस नैना झील के किनारे ले आई। वहाँ हम एक बेंच पर बैठ गये। और जब हम एक नाव पर सवार नैना झील के बीच थे तो मैंने लवी की जांघ पर हाथ रखकर सहलाते हुए बोला, “लवी अब जबकि तुम यहाँ हो मेरे साथ तो तुमने अपने घर पर क्या होगा?”

“यही कि मैं अपनी कुछ सहेलियों के साथ नैनीताल जा रही हूँ।” लवी के मुँह इन शब्दों के साथ निकली गर्म भाप मुझे अपने चेहरे पर बड़ी भली लगी।

“और अगर तुम्हारे घरवालों को ये बात पता चली कि तुम किसी सहेली के साथ नहीं मेरे साथ थी तो क्या होगा?”

“जो होगा वो उससे कम होगा जब मिसेज अंजली को पता चलेगा उनका गुलाम उन्हें छोड़कर किसी और लड़की के साथ वेलेन्टाइन डे मना रहा था। लवी की बात सुनकर मैं तनिक उदास हो गया पर मेरी उदासी लवी की हँसी और उसके प्यार के आगे टिक न सकी। और फिर हम दो दिन नैनीताल की वादियों में प्रेमगीत गाते रहे और वो प्रेमगीत उस वक्त इबादत का नगमा बन गया जब मैं और लवी नैना मंदिर के प्रांगण में आये। मैं ज्यों ही मंदिर में घुसने लगा लुबना मेरा हाथ पकड़ के बोली, “कुणाल क्या मैं भी अन्दर आ सकती हूँ?”

“लवी जहाँ तक मैं सोचता हूँ कोई भी व्यक्ति कोई भी इंसान कहीं भी जाने के लिए स्वतंत्र है किसी भी इबादतगाह में वो जा सकता है। पर फिर भी मैं तुमसे यहीं कहूँगा कि अगर तुम्हारा मज़हब इसकी इजाज़त देता है तो तुम अन्दर आ सकती हो?”

“शायद लुबना का मज़हब इसकी इजाज़त नहीं देता पर शिवानी का धर्म इसकी इजाज़त देता है।” लवी अपने गले में पड़े दुपट्टे से अपना सिर ढक कर मेरे साथ मंदिर के भीतर आ गई। उसने बड़ी तन्मयता से हाथ जोड़कर, माथा टेककर ‘देवी माँ’ की आराधना की। और मैं जानता था उसने यकीनन मंदिर में

हमारी मुहब्बत के कामयाब होने की दुआ मांगी होगी। वापसी के टिकट लवी ने बुक नहीं करवाये थे इसलिये हमने बस से वापस आने का फैसला किया। पहले हम टैक्सी से हल्द्वानी पहुँचे।

नैनीताल में लवी का साथ मेरे जीवन का अविस्मरणीय हिस्सा बन गया था। लवी भी बेहद खुश थी सिवाय उस कुछ समय के लिये जब मैंने नैना मंदिर से वापस होटल के कमरे में आने पर उससे कहा, “लवी हमारे गाँव में तो अभी भी हम दलितों को कभी-कभी किसी मंदिर में प्रवेश करने से रोक दिया जाता है।”

मेरी बात सुनकर वो बेहद व्यथित हो गई थी और फिर कुछ देर बाद बोली, “कुणाल इन सबका दोषी कौन है?”

“वे बड़े और उच्च जाति के लोग जो सदियों से हमें दबाकर रखते रहे हैं और आज भी रखना चाहते हैं।”

“क्या इन सबके लिए सिर्फ वे कथित बड़े उच्च जाति के लोग ही जिम्मेदार हैं या कोई और भी?”

लवी के प्रश्न को सुनकर मैं चुप हो गया, सच तो ये था कि मैं उसका सवाल समझ ही नहीं पाया था कि वो क्या कहना चाहती थी। इसी उलझन को लेकर मैंने उसे देखा। मेरी उलझन समझते हुए वो बोली, “कुणाल जब तक आप लोग खुद को ‘दलित’ और निम्न वर्ग की हीनता को अपने मन में पाले रहोगे तब तक कोई भी सरकारी योजना, कोई भी सामाजिक संगठन आप लोगों को बराबरी का हक नहीं दिलवा सकता।”

“सच कह रही हो तुम लवी।” मुझे उसकी बात से असहमति की कोई वजह नज़र नहीं आई।

“तो फिर भविष्य में सिर्फ ये दोष देने के बजाय हीनग्रन्थि से बाहर निकलकर संघर्ष कर रास्ता चुनो। देखना बहुत जल्द सब ठीक हो जायेगा।” कहकर लवी ने मेरा माथा चूम लिया और उसके इस चुम्बन से हम दोनों की उदासी की खुशी में बदल गई। और इसके बाद हम दीन-दुनिया से बेखबर लखनऊ जाने के लिये हल्द्वानी आ गये।

बस में बैठने से पहले हमने एक रेस्तरां में भोजन किया और अपनी मंजिल की ओर बढ़ चले। वातानुकूलित बस में सफ़र काफी आरामदायक था और इस सफ़र में लवी मेरे कांधे पर सिर रखकर लज्जत घोलती रही।

लखनऊ केसरबाग बस अड्डे पर उतरकर हमने रेस्टोरेन्ट में एक साथ चाय पी। इस वक्त सुबह के पांच बज रहे थे। रात के सफ़र की थकान के लक्षण हमारे चेहरों से साफ पता चल रहे थे। इसलिये हमने चाय पीने का फैसला किया।

चाय पीने के बाद लवी बोली, “कुणाल हम यहाँ से अलग-अलग जायेंगे। मिसेज अंजली ये न जान पाये कि तुम उन्हें टुकराकर वेलेन्टाइन डे पर मेरे साथ थे। जब तक इस चक्रव्यूह से निकलने का सही रास्ता नहीं मिल जाता हमें फूंक-फूंक कर कदम रखने होंगे।”

लवी की बात मानकर मैं वहाँ से तन्हा अपने फ्लैट पर आ गया और अब मैं खुद को मिसेज अंजली से की गई बगावत से आने वाले तूफान के लिये तैयार कर रहा था।

बोये बीजों की फसल

कविता की लाल आँखें इस बात की गवाह थी कि वो तमाम रात जागती रही थी। कविता रात को खुद जागती रही या फिर उस जगाया गया था? मेरे लिये ये एक बड़ा सवाल था। इस सवाल का जवाब कविता ही दे सकती थी, पर वो मेरे बगल से मुझे देखकर भी इग्नोर करते हुए अपने क्वार्टर की ओर चली गई। बृज काका मुझे कल ही बात चुके थे कि ‘कविता, संजू बिटिया के साथ डांस की किसी वर्कशॉप में गई है अब वो सुबह ही आयेगी।’

कुछ दिन पहले संजू ने मुझसे कहा था ‘वो कविता का अहित नहीं करेगी।’ इसलिये मैंने उस वक्त बप्पू काका की बात मान ली पर इस वक्त जब मैंने कविता को कैम्पस के भीतर आते देखा तो न जाने मुझे कुछ ठीक नहीं लगा। मुझे लगा कहीं न कहीं कविता के साथ कुछ गलत हुआ है। पर इसका जवाब कविता ही दे सकती थी। लेकिन मैं कविता से मिलकर उससे कुछ पूछ पाता, उससे पहले ही मेरी सामने कई और सवाल खड़े हो गये।

मिसेज अंजली जिन्होंने वेलेन्टाइन डे के बाद मेरी कोई खोज खबर नहीं ली थी। वो कार से उतर रही थी। आज दूधिया पाँव में उन्होंने जूतियों की जगह सैंडल पहनी हुई थी। मैं इस वक्त खिड़की पर खड़ा था। मिसेज अंजली को

देखकर मुझे डर लगा था और मैंने सोचा, वो यकीनन मेरे पास आयेंगी और चौदह फरवरी को उनके पास न जाने की न जाने क्या सजा देंगी! मैंने उस वक्त ये भी सोचा शायद मिसेज अंजली मुझसे मिलने न आ कर बंटी या संजू से मिलने आई हो। मैं अभी ये सब सोच ही रहा था कि तभी कार जिससे अभी मिसेज अंजली उतरी थी, उससे एक शख्स बाहर आया। और उस शख्स को देखकर मैंने भय से खिड़की बन्द कर ली।

जब डोर बेल बजी तो मैं बेचैनी से कमरे के मध्य में टहल रहा था। धड़कते दिल के साथ मैंने दरवाजा खोला। सामने इस फ्लैट के तत्कालीन मालिक, हमारे विधान सभा क्षेत्र के विधायक बिन्दर लाल खड़े थे। और इन्हीं विधायक बिन्दर लाल के ठीक पीछे खड़ी होकर मिसेज अंजली मुस्करा रही थी।

सोफे पर पसर कर विधायक बिन्दर लाल ने आदेशात्मक लहजे में कहा, “कुणाल तू कल से अपने लिये कोई और जगह रहने का ठिकाना ढूँढ़ ले।” फिर मिसेज अंजली की ओर इशारा करके कहा, “ये मैडम इस फ्लैट में अपना कोई ऑफिस बनाना चाहती है।”

“न न बिन्दर जी। अगर ये चाहे तो यहाँ रह सकता है, मुझे कामकाज के सिलसिले में एक प्यून की जरूरत पड़ेगी।” मिसेज अंजली की होंठों की हँसी इस वक्त मुझे किसी लोमड़ी की हँसी लग रही थी।

“ओके डियर.. एज वेल यू विश।” कहकर विधायक बिन्दर लाल सोफे से उठते हुए बोले, “मुझे एक मीटिंग में जाना है शाम को मिलते हैं डियर.” फिर मिसेज अंजली और बिन्दर लाल विधायक ने मेरे सामने ही एक-दूसरे को गले लगाया, हाथों को सहलाया और किस किया।

विधायक जी वहाँ से चले गये और मिसेज अंजली मुझे देखते हुए सोफे पर बैठते हुए बोली, “पानी पिलाओ मुझे। . मैं चाहती तो तुम्हें आज किसी रास्ते पर फेंकवा सकती थी पर तुम मुझे अब भी पानी पिलाने का सम्मान हासिल कर रहे हो।”

मैंने उन्हें पानी लाकर दिया। मिसेज अंजली ने मेरे हाथ से पानी का गिलास ले लिया। फिर वो कुछ देर हाथ में गिलास पकड़े हुए मुझे देखती रही और बिना पानी का एक घूंट लिये वहीं टेबल पर गिलास रखते हुए बोली, “जानते हो कुणाल?”

“हाँ जानता हूँ मिसेज अंजली आपकी मुझ पर मेहरबानी की वजह जानता हूँ मैं।” मैं अपनी आवाज़ में थोड़ा दृढ़ता ले आया था।

“ओह्हो .. तो चींटी के पर निकल रहे हैं।” कहते हुए मिसेज अंजली उठकर मेरे करीब आकर अपने दायें हाथ की उंगलियों के बड़े हुए नाखूनों से मेरा गाल सहलाते हुए बोली।

“हाँ इस चींटी के पर निकल रहे हैं और मैं ये भी जानता हूँ तुम इस चींटी की हलचल अपने देह पर महसूस करने को बेताब हो। और यही वजह है जो तुम मुझे अपने साथ यहाँ रखने पर मजबूर हो।”

मिसेज अंजली जिस हाथ से मेरा गाल सहला रही थी उसे पकड़कर मैंने मोड़ते हुए उनकी पीठ पर रखकर अपने करीब खींच लिया। अब मिसेज अंजली की पीठ और नितम्ब सामने से मेरे जिस्म से चिपके थे और एक हाथ से उनका हाथ मरोड़ कर पीठ पर रखा हुआ था।

“हद पार मत करो कुणाल।” वो मेरी बांहों के पकड़ में कसमसाती हुई बोली।

“सच कहूँ मिसेज अंजली, चींटी मैं नहीं हूँ, चींटी तुम हो। एक कामुक चींटी जो दीमक की तरह लोगों की ज़िन्दगी चट कर जाती है।” अपने बाहों में कसमसा रही मिसेज अंजली को मैंने बेड की ओर धक्का मार कर छोड़ दिया।

बेड पर गिरकर उन्होंने अपना चेहरा उठाकर जलती नज़रों से मुझे देखा। पर मैं उनकी जलती नज़रों की परवाह किये बिना अपनी शर्ट उतारने लगा। फिर कुछ लम्हों बाद मैं उनके करीब आकर बोला, “मिसेज अंजली आज तक तुमने मुझसे अपनी इच्छा पूरी की पर आज मैं तुमसे अपनी इच्छा पूरी करूँगा।”

मुझे पूरी उम्मीद थी कि इस बात को सुनकर मिसेज अंजली बिफरकर मुझे धक्के मारकर कमरे से बाहर निकाल देगी। अपनी इसी उम्मीद के सहारे मैं मिसेज अंजली की जलती निगाहों की ताप ले रहा था। वो भी मुझे देखे जा रही थी। अचानक मिसेज अंजली ने - “ओ रियली कुणाल, मैं न जाने कब से तुमसे इस बात की उम्मीद लगाये बैठे थी।” कहकर मेरा हाथ पकड़कर बेड पर खींच लिया और जब तक मैं सम्भल पाता उन्होंने “फ़क मी कुणाल” कहकर मेरे होंठों पर अपने होंठ रख दिये।

विधायक बिन्दर लाल के आदेश के बाद वो अक्सर मेरे फ्लैट पर आने लगी और तमाम अनिच्छा के बाद भी मैं बिस्तर पर उनके साथ यूँ पेश आता, जैसे उनकी देह को हासिल करना मेरी इच्छा, मेरा जुनून हो। मेरे जोश को देखकर उन्हें भी खूब मज़ा आता।

इस वक्त मेरे शरीर पर एक ब्रांडेड स्लेटी रंग का बहुत मंहगा सूट था। मिसेज अंजली मेरा हाथ पकड़ के मेरे साथ फार्म हाउस के अंदर आई। ये वही फार्म हाउस था जहाँ मिसेज रंजना के कारण पहली बार मिसेज अंजली ने मुझे ब्लैकमेल करके हासिल किया था। आज के दिन मिसेज अंजली ने मुझे मेरे बिल्डिंग कैम्पस के बाहर से पिकअप किया था।

हम शायद इस रेव पार्टी में थोड़ी देर से पहुँचे थे। पार्टी अपने पूरे शबाब पर थी। पार्टी में मदहोश होकर थिरक रहे अधिकांश लोगों के चेहरे मैं पहचानता था। बंटी, संजू, मिस्टर बाबर, मिस्टर फर्नांडीज़ और इनके अलावा कुछ और चेहरे जिन्हें मैं पहली बार देख रहा था। - एक लड़की हाथ में जाम लिये हुए जींस और कुर्ती में बंटी और संजू की उम्र से दो-तीन साल बड़ी थी। एक अथेड़ औरत मिसेज अंजली की उम्र की, पर उनसे थोड़ा कम खूबसूरत और एक मेरी उम्र का लड़का जो उस जींस, कुर्ती वाली लड़की से चिपकने की कोशिश कर रहा था। बंटी और संजू के पार्टनर आज बदले हुए थे। मिस्टर बाबर, बंटी के साथ और मिस्टर फर्नांडीज़ संजू के साथ डांस करते हुये उनके कोमल अंगों से खेल रहे थे।

इसी बीच बेहद नशे में झूम रही उस अथेड़ औरत की नज़र मुझ पर पड़ी और उसने करीब आकर एक ही झटके में मुझे खींच लिया। मिसेज अंजली के हाथ से आज़ाद होकर मैं उस महिला की बाहों में जा गिरा। सम्भल कर मैंने मिसेज अंजली की प्रतिक्रिया जानने के लिये उनकी तरफ देखा तो उन्हें उस ओर जाते पाया जहाँ मिसेज रंजना के बैठने का सोफा रहता है। मिसेज रंजना सोफे पर पसरी थी और एक लड़की उन्हें अपने हाथों से शराब पिला रही थी। उस लड़की पर नज़र पड़ते ही मैं चौंक पड़ा। मेरे माथे पर पसीना आ गया।

“कविता तू यहाँ क्या कर रही है?” मैं भागकर उसके पास पहुँचा, जो इस वक्त मिसेज रंजना को शराब पिला रही थी।

“वही जो तुम यहाँ कर रहे हो।” कविता की जगह मिसेज रंजना बोली।

“रंजना मैडम प्लीज, इसे इस दलदल में मत खींचो ये अभी बच्ची है। ये तो अभी ये भी नहीं जानती कि क्या भला है क्या बुरा?” मैं वहीं जमीन पर बैठकर मिसेज रंजना के पैरों में गिर पड़ा।

“ओह तो तुम कविता को नादान समझ बैठे हो! कविता तू जरा बता तो अपने इस रिश्तेदार को, कि तू नादान है या सयानी।” मिसेज रंजना ने कविता के गाल पर खेल रही जुल्फों की लट को संवार कर उसके कानों के ऊपर से उसकी गरदन पर डालते हुए बोली।

मिसेज रंजना की बात सुनकर कविता ने एक नज़र मुझ पर डाली और फिर वो गिलास, जिससे वो मिसेज रंजना को शराब पिला रही थी उसकी बची हुई शराब से उसने अपना गला तर कर लिया। कविता को यूँ बेपरवाह होकर शराब पीते देख मैं हतप्रभ रह गया। पर मैं खुद को सभाल कर कविता के हाथ से शराब का गिलास छीन कर उसका हाथ पकड़ते हुए बोला, “तू नहीं जानती कविता, ये शराब बेहद खराब चीज है। चल उठ मेरे साथ, चल मेरे साथ, मैं तुझे घर ले चलता हूँ।”

कविता कुछ देर तक मुझे देखती रही। अपलक, अडोल होकर।

“चाहो तो तुम जा सकती हो कविता।” मिसेज रंजना अपने होंठ कविता के कान के पास लाकर बोली। अगले ही पल कविता ने अपना हाथ मुझसे छुड़ा लिया और लड़खड़ाते कदमों से हाल के मध्य में पहुँच गई जहाँ अन्य लोग मदहोशी के अंदाज़ में थिरक रहे थे। और अब मैं कविता को नृत्य की मुद्रा में देख रहा था जबकि मैं मिसेज रंजना के पास जमीन पर उकड़ू बना बैठा रहा। मुझसे कुछ करते न बना। मजबूरन मैं देख रहा था अपने काका की लड़की को नृत्य करते हुए। वो लड़का जो लगभग मेरी हम उम्र का था वो अपनी डांस पार्टनर को छोड़ कर कविता की ओर बढ़ा और उसने कविता को कमर से पकड़कर अपने शरीर से सटा लिया। मैं मजबूर था और शूद्र भी। वो शूद्र जिसे सदी दर सदी जुल्म सहने पड़े। जिन्हें जुल्म सहने की आदत पड़ चुकी थी। पर अचानक मैं मजबूरी की सरहद से बाहर निकला। न जाने कैसे एक दृढ़ता मेरे भीतर जन्म ले उठी। मैंने महसूस किया और मैंने देखा कि जब उस लड़के ने कविता के स्तनों को सहलाया तो वो कसमसाई और उसके चेहरे के भावों में कहीं से भी सहमति नज़र नहीं आई। यह देखकर मेरा खून खौल उठा। मैं भाग कर हाल के मध्य में पहुँचा और फिर अपनी पूरी ताकत को इकट्ठा करके अपना हाथ मुक्के की शक्ति में उस लड़के के चेहरे पर जड़ दिया। मेरा घूसा ज्यों ही उस लड़के के चेहरे पर पड़ा वो लड़खड़ा कर गिर पड़ा। अचानक संगीत रूक गया और सब भौंचक्के होकर अपनी जगह पर खड़े हो गये। मिस्टर फर्नांडीस ने कराह रहे उस लड़के को उठाया तो उसका एक दांत टूट चुका था और चेहरे से खून बह रहा था।

“ओह इतनी गर्मी। मिसेज अजली आपके वश का नहीं है इस लड़के की गर्मी शांत कर पाना।” मिसेज रंजना सोफे से उठकर करीब आते हुए बोली। उन्होंने एक नज़र मिसेज अजली पर डाली और फिर मुझे देखते हुए दहाड़ी “बाउंसर” वो गिनती के चार थे लम्बे-चौड़े-तगड़े और काले कपड़ों में ब्लैक केट

कमाण्डो की तरह। इशारा पाते ही उन चारों ने मुझे रूई की तरह धुन डाला जबकि सब खड़े होकर मेरी पिटाई का तमाशा देख रहे थे। उनमें कविता भी।

मार खाकर जब मैं लगभग बेहोशी की हालत में था, तो मेरे कानों में मिसेज रंजना की कड़कती आवाज़ सुनाई दी। “बाहर ले जाकर सड़क पर फेंक दो इस गटर के कीड़े को।” और उन बाउंसरों ने मुझे सच में बाहर फेंक दिया।

रात को न जाने कौन से पहर मुझे होश आया, पता नहीं। ‘मैं कहाँ हूँ?’ जानने के लिये मैंने गर्दन इधर-उधर मोड़ने की कोशिश की तो मेरे होंठों से दर्द की कराह फूट पड़ी। पूरा शरीर किसी फोड़े की तरह दुख रहा था। तभी मेरी नज़र एक टेलीफोन बूथ पर पड़ी। मैं किसी तरह वहाँ घिसटकर पहुँचा। उस रात मेरी किस्मत ने सिर्फ़ इतनी मेहरबानी मुझ पर दिखाई कि लवी के घर पर की गई मेरी कॉल को लवी ने रिसीव कर लिया।

ये शायद लवी के साथ पढ़ने वाले किसी लड़के का रूम था जहाँ लवी मुझे लेकर आई थी और तकरीबन चौबीस घंटों से मैं वहाँ था। लवी ने एक डॉक्टर को बुलाकर मेरे लिए इंजेक्शन और दवा का इंतजाम किया था। मुझे मारने वाले बाउंसर यकीनन मारपीट करने में एक्सपर्ट थे। तभी तो मेरे शरीर पर कोई बाहरी जख्म नहीं थे। उन्होंने मुझे इस तरह मारा था कि खून वगैरह नहीं निकला पर अंदरूनी चोट बहुत थी।

मुझे यहाँ लाने के बाद लवी रात को अपने घर चली गई थी और सुबह होने पर दुबारा आई। रात को लवी का क्लासमेट विरेश मेरी देखभाल करता रहा। इस वक्त वो कॉलेज जाने को तैयार था और मेरे पास आकर मुस्कुराते हुए मेरा हाथ पकड़कर बोला, “तुम जल्दी ठीक हो जाओगे ब्रो।”

मैंने मुस्कराकर सिर हिलाया फिर विरेश लवी से बोला, “शायद तुम कॉलेज आज भी नहीं आ रही हो?”

“शायद हाँ।” लवी बोली।

“तुम जा सकती हो लवी।” मैं कराहते हुए बोला।

“आप तो बस चुप ही रहे।” लवी मेरी ओर उंगली उठाकर बोली।

मैं खामोश हो गया और विरेश हम दोनों को ‘बाय’ कहकर कॉलेज चला गया।

“बहुत ही अच्छा लड़का है।” मैं विरेश को जाता देखकर लवी से बोला।

“हाँ और इसलिये तो मैं कहती हूँ कि एक न एक दिन तुम्हें उस चक्रव्यूह से भी आजादी मिल जायेगी क्योंकि इस दुनिया में अगर बुरे लोग है तो अच्छे लोग भी है।” लवी मेरे सिरहाने बैठकर मेरा माथा सिर सहलाते हुए बोली।

“मुझे नहीं लगता मुझे यूँ इस तरह सड़क पर फेंकवाने के बाद वो लोग मुझे याद भी करेंगे। हाँ, बस इतना होगा कि अब मुझे रहने का नया ठिकाना खोजना होगा।” मैं लवी की ओर गर्दन उचका कर उसकी आँखों देखते हुए बोला।

“अल्लाह करे ऐसा ही हो कि वो अब तुम्हारी जरूरत महसूस न करे और रही बात रहने की तो उसका भी बन्दोबस्त हो जायेगा। आप विरेश के साथ चाहें तो ये रूम षेयर करके कुछ दिन रह सकते हैं। पर एक बात बेहद चिंतित करने वाली है।” लवी थोड़ी बेचैनी से टहलती हुई बोली।

“कौन सी बात लवी?”

“कविता .. अब मासूम कविता की उन मक्कारों से कैसे हिफाज़त की जाये कुणाल?”

“पर कविता खुद ये राह चुन रही है।”

“हो सकता है उसकी कोई मजबूरी हो ये राह चुनने के पीछे, जैसे तुम्हारी थी कुणाल।”

लवी को कविता की चिंता थी। आखिर क्यों न होती! वह पिछले कई दिनों से उसकी पढ़ाई के लिये उसकी मदद कर रही थी। लवी उसके लिये चिंतित थी और मैं अपनी परेशानियों में उलझकर कविता की परेशानी भूल गया था। जबकि मैं रिश्ते में उसका भाई था, सोच कर मेरे चेहरे पर लज्जा आ गई।

यकीनन लवी ने जान लिया था कि मैं आत्म ग्लानि महसूस कर रहा हूँ तभी वो बातों का रूख बदलते हुए बोली, “कुणाल मुझे लगता है तुम्हें अपने बारे में अपने मम्मी-पापा को इन्फार्म कर देना चाहिये।”

“नहीं” मैंने लवी की बात का विरोध करते हुए कहा, “नहीं लवी, मैं उन्हें परेशान नहीं करना चाहता और फिर उन्हें ये जानकर कितना दुख होगा कि उनका होनहार लड़का जिसे वो अपना पेट काट कर पढ़ा रहे हैं, वह किस कदर शहर की रंगीनियों और चकाचौंध में खो गया है, किस तरह वो बुरे से बुरे काम करता जा रहा है। सच कहूँ लवी तो अब मुझे दादा और अम्मा से भी आँख मिलाने हिम्मत नहीं है। मैं न जाने कितनी बार तन्हाई में सोच चुका हूँ जब अम्मा-दादा सामने होंगे तो मैं किस कदर उनसे नज़र मिला पाऊँगा। काश! लवी काश ये होता कि अम्मा-दादा के सामने जाने से पहले मेरी आँखें फूट जायें। मेरे आँखों की रोशनी चली जाये और मैं अपनों की आँखों में अपने लिये घृणा और

क्रोध देखने से बच जाऊँ।” कहते-कहते मेरी आवाज़ लरज उठी और आँसुओं की बूँदें आँखों के कोरों में फसंकर गाल पर ढुलकने का इंतजार करने लगी।

और मेरी आँखों से वो अशक की बूँदे ढलक कर जैसे ही मेरे गाल पर पहुँची लवी ने उन्हें अपने होंठों की पनाह में ले लिया। फिर वो न जाने कितनी देर अपने नर्म होंठ मेरे गालों पर रगड़ती रही। लवी को यूँ अपने ऊपर झुके पाकर मैं अपना दर्द भूलकर अपने दोनों हाथों से उसकी पीठ सहलाने लगा। मेरे हाथों का स्पर्श अपनी पीठ पर पाकर लवी मेरे होंठों के करीब अपने होंठ लाकर धीरे से बोली, “कुणाल इतनी निराशा क्यों जबकि मैं हर कदम आपकी हमराह हूँ।”

लवी की सांसे इस वक्त उसके होंठों से निकलकर मेरे होंठों को गर्माहट दे रही थी। मैंने अपनी आँखों से एक क्षण लवी का परियों सा पाक चेहरा देखा और फिर अपने सिर को हल्का सा उठाकर, उसके मखमली होंठों को अपने होंठों पर लेकर, अपने शरीर की सारी तकलीफें भूलकर और उसकी कमर को अपने बांहों में भरकर बिस्तर पर दूसरी ओर पलट गया। अब हमारे कोण बदल गये थे। इसमें लवी भी मेरा भरपूर साथ दे रही थी। उसने पीठ को कस कर पकड़ लिया। लेकिन तभी उसे कुछ याद आया और वह बोली, “कुणाल मैं एक संस्था जानती हूँ जो हमारी मदद कर सकती है।”

“और लवी जबकि मुझे लगता है मिसेज अंजली ने मुझे यूँ ट्रेड किया है कि मैं बिना किसी संस्था की मदद के अपनी प्रेयसी को जी भरकर प्यार कर सकूँ।” मैंने बोझल हो चले माहौल को हल्का करने की गरज से मजाक किया।

“ओह तो आप जाइये उन्हीं मिसेज अंजली के पास।” लवी मेरे बांहों से छूटने का प्रयास करते हुए बोली।

“नहीं अभी बहुत कुछ सीखना है मुझे।” कहते हुए मैंने जब उसके होंठ को चूमा और अपने सीने में भींचा तो उसने आँखें बन्द करके मेरी बांहों में अपना शरीर ढीला छोड़ दिया।

लवी ने एक बन्द लिफाफ़ा मेरे सामने रखा।

“तो मोहतरमा को शर्म भी आती है।” विरेश जो कि नाश्ता कर रहा था उसने उस लिफाफ़ा बन्द खत को देखकर लवी से मुख़ातिब होकर कहा।

“शर्म वो क्यों भला विरेश!” लवी अपने छोटे बालों का एक छोटा सा जूड़ा अपने सिर बांधते हुए बोली।

“यहीं कि अब मैडम लुबना जबकि मेरे सामने अपने दिल की बात नहीं कह सकती, तो यूँ खत के सहारे मिस्टर कुणाल को ज़बात पेश किये जा रहे हैं।” विरेश मुझे और लवी को देखकर हँसते हुए बोला।

विरेश की बात सुनकर लवी ने खत वापस उठाकर विरेश की ओर लहराते हुए बोली, “मिस्टर विरेश ये खत मैंने नहीं लिखा है आज मैं कविता से मिलने गई, वो घर पर नहीं थी। वहाँ पहुँचकर मुझे न जाने क्या हुआ? मैं भूल गई कि कुणाल अब वहाँ नहीं रहते इसलिये मैं उनके फ्लैट पर गई। फ्लैट का दरवाजा बाहर से बन्द देखकर मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ। तभी मेरी नज़र बाहर डोर के पास लगे बाक्स में इस लेटर पर पड़ी। निकालकर देखा तो इस पर कुणाल का एड्रेस था। सो मैं ले आई।”

“ये लो कुणाल पहले इसे आप पढ़ लो ये शायद आपके गाँव से है।” लवी ने लिफाफ़ा एक तरफ से फाड़ कर उसमें से खत निकालकर मुझे देते हुए बोली।

विरेश और लवी की ये नॉक-झोंक सुनकर मैं अपनी पीड़ा भुलाकर आनन्दित होते हुए उससे वो खत ले लिया। पर मैं खत पढ़ना शुरू करता उससे पहले ही विरेश बोल पड़ा, “तो मोहतरमा लुबना आपको ये तक याद नहीं कि कुणाल महाशय कहाँ है और आप दम भरती है कि आप इनसे मुहब्बत फरमाती हैं।” विरेश की बात का लवी जवाब देती उससे पहले विरेश फिर बोल पड़ा, “इसे मुहब्बत नहीं कहते।”

“विरेश कुछ भी मत बोलना। तुम्हें कोई हक़ नहीं है मेरी मुहब्बत का यूँ मजाक उड़ाने का।” लवी थोड़ा गुस्से में बोली।

लवी की बात सुनकर विरेश जो नाश्ता खत्म कर चुका था मेरे पास आकर बैठते हुए बोला, “कुणाल भाई वैसे लवी मैम का ये गुस्सा जायज नहीं है।”

“क्यों जायज नहीं है मेरा गुस्सा! क्या मैं जान सकती हूँ विरेश?” जवाब मेरी जगह लवी ने दिया।

लवी की बात सुनकर विरेश उठकर अपने बैग में अपने बुक्स वगैरह रखते हुए बोला, “लवी मैडम जब कोई किसी में इस कदर डूब जाये कि वो अपने होशो-हवाश में हर वक्त उसे हर जगह महसूस करे, तब ऐसा ही होता है जैसा तुम्हारे साथ हुआ। जबकि कुणाल यहाँ है तो भी तुम इनके ख्यालों में इतनी डूबी थी कि इन्हें इनकी पुरानी जगह देखने जा पहुँची। जानती हो इसे मुहब्बत नहीं कहते।”

विशेष की फिलासफी सुनकर लवी उसका मुँह तक रही थी और मैं उसकी बातों की गहराई सुनकर एकदम खामोश ही हो गया। विशेष जब कंधे पर बैग डालकर कॉलेज जाने के लिये डोर खोल रहा था तो लवी बोली, “ओय फिलास्फर . जो इसे मुहब्बत नहीं कहते तो क्या कहते हैं?”

“इश्क! .. तुम कुणाल से अब मुहब्बत नहीं बल्कि इश्क करने लगी हो।” कहकर विशेष चला गया और लवी “ये बड़ा जानकार है इश्क और मुहब्बत का?” बड़बड़ाते हुए मेरे पास आकर बैठ गई।

“ओय कुणाल, अब आप विशेष की इश्क और मुहब्बत की फिलास्फी से आज़ाद होकर अपने घर का ये खत भी पढ़ लो।” लवी की बात सुनकर मैं मुस्कराया। फिर अपने घर से आये दादा के खत को देखने लगा। जबकि मैं जानता था ये खत मेरे दादा ने नहीं बल्कि मेरी इकलौती छोटी बहन ने लिखा है जो कि गाँव के दसवीं तक के स्कूल में नवी कक्षा की स्टूडेंट थी।

ज्यों-ज्यों मैं खत पढ़ रहा था मेरा दिल बैठा जा रहा था और खत की आखिरी लाइन पढ़ा तो खत मेरे हाथ से छूटकर गिर गया। लवी ने दो-तीन बार पूछा ‘क्या हुआ कुणाल?’ और फिर मुझे खामोश देखकर वो खुद उस खत को पढ़ने लगी। खत को पढ़कर उसने मेरी ओर देखा तो मैंने उसकी आँखों में दृढ़ता पाई जबकि इस वक्त मेरी आँखों में आँसू भरे थे। फिर अचानक लवी मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर बोली, “कुणाल अब यूँ हताश होकर बैठे रहने का वक्त नहीं है बल्कि उठकर संघर्ष करने की घड़ी आ गई है।” और फिर उसने मेरी आँखों के आँसू अपनी हथेली से साफ करते हुए बोली, “हिम्मत मरदा मदद ए खुदा।”

उसकी बात सुनकर मेरी बैठती धड़कनें सामान्य होने लगी।

एक कहानी अतीत की

अब जबकि बिन्दर लाल ने मेरे दादा को अपने यहाँ काम से निकाल दिया था। जबकि मेरा दादा उनके यहाँ काफी दिनों से काम करते आ रहे हैं। जबकि बिन्दर लाल भी हमारी तरह चमार थे, पर दलित सियासत की वजह से उन्होंने मुकाम जोड़-तोड़ से हासिल कर लिया था। खत में लिखी इस बात से मैं इतना विचलित नहीं था जितना उस बात से हुआ था कि विधायक बिन्दर लाल मेरे दादा से कहा था कि वो हमारे पास के दूसरे ब्लाक के विधायक परमानंद

पाण्डेय के यहाँ अपनी बेटी यानी मेरी बहन को घरेलू काम करने के लिये नौकर रख दे। अब जबकि मैं शहर न आया होता। जबकि मैंने इन बड़े लोगों के पर्दे के पीछे का सच न जाना होता तो शायद मेरी सदी दर सदी का दलित मन इस बात में कोई बुराई न मानकर इसे कबूल कर लेता। पर अब जबकि मैं जानता था ये विधायक पाण्डेय घरेलू नौकर की आड़ में यकीनन मेरी बहन का शोषण करते तो फिर मेरी चिंता करना लाज़िमी था।

मेरे मन की चिंता दूर करने के लिये लवी मुझे दूसरे शहर लाई थी। शायद वो नहीं चाहती थी कि इस वक्त मुझसे कोई ऐसा शख्स मिले जो डिमोटीवेट करे। जबकि लवी का इरादा मुझे मोटिवेट करके मेरे हक के संघर्ष के लिये तैयार करना था।

कानपुर शहर के परेड के पास एक रेस्तरां था 'ट्रीट'। वहाँ खाने के पहले कौर के साथ लवी बोली, "कुणाल आपने कभी सुदास का नाम सुना है।"

मेरा "नहीं" कहने पर लवी बोली, "मैं आपको कहानी सुनाती हूँ जो सच है. आप केवल पहले उसे पूरी सुने और हाँ, साथ में खाना भी खाते रहें।"

मैंने खामोश रहकर सिर्फ इकरार में सिर हिलाया तो लवी ने अपनी बात विस्तार से बताने लगी - "वो युग वो था जब ताम्र और लौह काल आपस में गले मिल रहे थे। आर्य और अनार्यों में वर्चस्व के लिये संघर्ष हो रहा था। उस संघर्ष में आर्यों ने विजयी हुए और फिर उनके नायक दिवोदास का बेटा सुदास उनका राजा बना।

सुदास अपने पिता से कहीं ज्यादा बहादुर और दिलेर था। और उसने बहुत दृढ़ता और कुशलता से राज्य करना शुरू किया। अब जबकि अनार्यों का पूरी तरह से दमन हो चुका था तो हर तरफ आर्यों का शासन था और जब लड़ने के लिये कोई बाहरी शत्रु न हो तो अपनों के बीच जंग का होना लाज़िमी है।

सुदास की बढ़ती शक्ति और सम्पन्नता देखकर आर्य राजाओं ने एक संघ बनाया जिसमें दस बड़े कबीले और कुल तीस कबीले के राजा थे। ये संघ दशराजन कहलाया और इस संघ की सहायता उन आनार्य राजाओं ने भी की जो आर्यों से पराजित होने के बाद किसी तरह अपना अस्तित्व बनाये हुए थे।

इस संघ और सुदास के बीच आज की रानी और तब की परुष्णी नदी के किनारे भंयकर लड़ाई हुई। अब जबकि सुदास की सेना से दस गुना ज्यादा सेना दुश्मनों की थी तो भी सुदास इस युद्ध में विजयी हुआ। इस युद्ध के बाद सुदास सारे आर्यवर्त का सबसे वीर योद्धा के रूप में उभरा।

इस युद्ध में सुदास की सहायता उसके मंत्री वशिष्ठ ने की थी। तो सुदास की जीत के बाद वशिष्ठ का रूतबा भी सारे क्षत्रियों में बढ़ चुका था और वशिष्ठ ने अपने इस रूतबे का इस्तेमाल करके अपने पुत्र 'शक्ति' को सुदास का मंत्री बना दिया और खुद राम के पुरोहित बनने के लिये अयोध्या चले गये। ये राम, सुदास के समकालीन थे।”

“एक मिनट लवी। तुम कहीं भगवान श्री राम की बात तो नहीं कर रही हो।” मैं कहानी में राम और अयोध्या का जिक्र आते ही पानी पीते हुए बोला। अब तक हम लोग खाना खत्म कर चुके थे।

“हाँ मैं भगवान श्रीराम की ही बात कर रही हूँ। अब चलो बाकी कहानी कहीं और चलकर सुनाती हूँ।” लवी ने खाने के पैसे दिये और फिर हम रेस्तरां से बाहर आकर एक ऑटो में बैठ गये। ऑटो के सफ़र में हम इधर-उधर की बातें करते रहे। लवी मुझे मोती-झील ले आई थी। शायद वो यकीनन यहाँ पहले भी आ चुकी होगी तभी वो यहाँ के हर पार्क के बारे में जानती थी। कुछ देर झील के चारों तरफ घूमने के बाद हम तुलसी उपवन की घास पर बैठ गये। बैठते ही लवी ने आगे की कहानी सुनाई “पर वो वशिष्ठ पुत्र शक्ति एक अयोग्य व्यक्ति था और किसी भी तरह सुदास जैसे महान राजा का पुरोहित होने के लायक नहीं था। सुदास भले ही एक वीर योद्धा था पर दशराजन युद्ध के बाद उसकी ताकत बेहद कम हो गई थी और सुदास अपनी ताकत बटोरने के लिए एक यज्ञ करना चाहता था।

सुदास जानता था इस यज्ञ के लिए शक्ति योग्य पुरोहित नहीं है इसलिए उसने इस यज्ञ को करवाने के लिये विश्वामित्र को बुलाया जो पहले भी सुदास के पिता के लिए पुरोहिताई कर चुके थे। यज्ञ के पुरोहित के लिए विश्वामित्र के चयन के बाद शक्ति अत्यन्त क्रोधित हुआ। और उसने क्रोधवश एक रात सोमरस पीकर सुदास की बेटी संस्कृति का बलात्कार करने की कोशिश की लेकिन विश्वामित्र के वहाँ वक्त पर पहुँच जाने से संस्कृति बेआबरू होने से बच गई। शक्ति की नीच हरकत की जानकारी मिलने पर सुदास ने तुरन्त उसे मौत के घाट उतार दिया। सुदास का यज्ञ पूरा करवा के विश्वामित्र उनकी बेटी संस्कृति से शादी करके कान्यकुण्ड की ओर चले गये। कुछ समय बाद जब शक्ति की हत्या की खबर वशिष्ठ को मिली तो क्रोध और प्रतिशोध की आग से जल उठे। और जब उन्हें पता चला इस वक्त विश्वामित्र भी सुदास के साथ नहीं है तो वो दशराजन युद्ध के बाद

बेहद कमजोर हो चुके सुदास को हराने के लिए अन्य राजाओं से सम्पर्क करने लगे।

वशिष्ठ ने पहले राम से सुदास के विरुद्ध लड़ने को कहा तो राम ने सुदास के खिलाफ लड़ने से इसलिये मना किया क्योंकि सुदास राम के पिता दशरथ के मित्र दिवोदास का पुत्र था और एक बार दिवोदास ने एक जंग में दशरथ की जान भी बचाई थी। इस लड़ाई से बचने के लिये राम ने वशिष्ठ से ये भी कहा कि वो विश्वामित्र और अगस्त की सहायता से रावण के आर्यवर्त में बने उपनिवेश को ध्वस्त करना चाहते हैं इसलिए उन्होंने व्यस्तता के चलते सुदास के विरुद्ध वशिष्ठ की मदद करने से इन्कार कर दिया।

राम से निराश होकर वशिष्ठ अमरावती में देव जमति के राजा इन्द्र के पास सहायता मांगने पहुँचे। इन्द्र भी सुदास के लिए दिवोदास का मित्र था और सुदास की बुआ अहिल्या से इन्द्र के प्रेम सम्बन्ध थे इसलिये इन्द्र ने भी सुदास के विरुद्ध लड़ने से इन्कार कर दिया। इन्द्र से क्रोधित होकर वशिष्ठ ने अहिल्या के पति गौतम से अहिल्या और इन्द्र के प्रेम सम्बन्ध के बारे में बता दिया। तो गौतम ने क्रोधित होकर अहिल्या को पत्थरों से बने एक कमरे में बन्द कर दिया। और उसमें इतना सख्त पहरा बिठाया कि वो इन्द्र से बिल्कुल मिल न सके। इस तरह वशिष्ठ ने इन्द्र से अपनी बात न मानने का बदला लिया। लेकिन वशिष्ठ का असली दुश्मन सुदास था, इन्द्र नहीं। वो सुदास जिसकी उसने दशराज युद्ध जीतने में मदद की थी उसी सुदास ने उसके प्राणों से ज्यादा प्यारे पुत्र की हत्या कर दी थी। प्रतिशोध की आग में जल रहे वशिष्ठ जब पहाड़ों पर घूम रहे थे तो उनकी मुलाकात अचानक संवरण से हो गई।

संवरण पांचाल का राजा था और दशराज युद्ध में दशराजन संघ में शामिल था। हार के बाद संवरण वहाँ पहाड़ों में लाज के मारे छुप के रह रहा था। उसने एक पहाड़ों के सरदार की लड़की 'प्राप्ति' से शादी कर ली और उससे पैदा हुआ पुत्र अब युवा हो रहा था। वशिष्ठ और संवरण दोनों ही सुदास के दुश्मन थे। और इन दो दुश्मनों ने मिलकर सुदास के विरुद्ध वापस एक संघ के संगठन की शुरूआत की। और इस संघ ने सुदास पर तब हमला कर दिया जब उसे किसी भी तरह विश्वामित्र और अन्य मित्रों से सहायता हासिल नहीं हो सकती थी।

सप्त सैंधव में एक बार फिर से भंयकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में वशिष्ठ और संवरण के अलावा वे तमाम आर्य और अनार्य राजा थे जो सुदास से प्रतिशोध लेना चाहते थे। सुदास और उसके पुत्र बहुत बहादुरी से लड़े किंतु वे पराजित हुए।

ठीक वैसे ही जैसे तराइन की पहली लड़ाई जीतने के बाद उसी लड़ाई में पृथ्वीराज चौहान हार गये थे।

और जैसे मुहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज को हराने के बाद उनके वंशज और उनके फालोवर पर भीषण अत्याचार किये थे ठीक वैसे ही अत्याचार वशिष्ठ ने सुदास के वंशज और उनके समर्थकों पर किये।” इतना सबकुछ कहने के बाद लवी कुछ देर खामोश रही। उसे उसे यूँ खामोश देखकर मैंने कहा, “फिर क्या हुआ था लवी?”

“फिर अत्याचार की कभी न टूटने वाली शृंखला चल पड़ी।” लवी की आवाज़ मुझे कहीं दूर से आते हुए लग रही थी। “चलो आईस्क्रीम खाते हैं।” लवी अचानक बाहर सड़क पर आईस्क्रीम के ठेले की ओर इशारा करके बोली।

“पर अभी अतीत के पन्ने पूरे नहीं पलटे।” कहते हुए मैंने लवी की ओर देखा।

“वो आईस्क्रीम खाने के बाद भी पलटे जा सकते हैं।”

हम दोनों आईस्क्रीम वाले ठेले के पास पहुँच गये।

“कुणाल आप जानते हो हिन्दू धर्म की मान्यता के अनुसार समय चार युगों में बंटा है?” लवी आईस्क्रीम की चुस्की लेते हुए बोली।

“सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग।” मेरे जवाब देने का अंदाज यूँ था जैसे मैं अपनी छोटी सी जानकारी की ताकत पर लवी के इल्म की बराबरी करना चाहता हूँ।

“और इनमें सबसे अच्छा और सबसे खराब युग आपकी नज़र में कौन सा है?” लवी आईस्क्रीम चूसते हुए वापस पार्क की ओर बढ़ गई। मैं भी उसके साथ चलता रहा।

“सतयुग सबसे अच्छा और कलियुग सबसे खराब।” मैंने वापस अभिमान के साथ अपना ज्ञान बघारा।

“और आज सतयुग होता तो आप यूँ आईस्क्रीम खाते हुए यूँ एक लड़की के साथ इस तरह किसी गार्डन में नहीं घूम पाते।”

लवी की बात सुनकर मैं अपने सीमित ज्ञान की वजह से खामोश हो गया और मेरा खामोशी को तोड़ते हुए लवी ने कहा, “कुणाल आज कलियुग है इसलिये ये जो आप आज़ादी से घूम रहे हैं, वो मुमकिन हो पा रहा है। नहीं तो अब तक राजा के सैनिक हमें पकड़कर ले गये होते और यूँ स्वच्छन्द विचरण के आरोप में तुरन्त सजा दे डालते। खैर इस बारे में कभी और बातें करेंगे अभी हम वापस

सुदास की बात पर आते हैं। उस लड़ाई के बाद वशिष्ठ के हुक्म से सुदास को पददलित कर दिया। पर वशिष्ठ का प्रतिशोध यँ ही शांत नहीं हुआ उन्होंने सुदास के वंशज और उनके कबीले के लोगों के यज्ञोपवीत पर तुरन्त प्रभाव से रोक लगा दी।”

“यज्ञोपवीत मतलब ‘जनेऊ संस्कार’ उसके रोक से वशिष्ठ को क्या मिला हागो?” मैंने खत्म हो चुकी आइस्क्रीम की लकड़ी को पास के कूड़ेदान में फेंकते हुए कहा।

“जिस तरह आजकल बर्थ सर्टीफिकेट के बिना किसी बच्चे को स्कूल में दाखिला मिलना मुश्किल हो जाता है उसी तरह उस समय जिन बच्चों को यज्ञोपवीत नहीं होता था उनकी पढ़ाई के लिये गुरुकुल में दाखिला मिलना पूरी तरह से वर्जित था।” लवी ने भी आइस्क्रीम की लकड़ी फेंक दी और अपनी जींस की जेब से हैंकी निकालकर अपने होंठ साफ किये, फिर उसने वो हैंकी मेरी ओर बढ़ा दिया। मैंने उसके परफ्यूम डाले हैंकी से अपने होंठ से आइस्क्रीम के अवशेष साफ किये और जब हैंकी वापस करने के लिए लवी की ओर बढ़ाया तो वो पत्थर की एक बेंच पर बैठ चुकी थी। उसे हैंकी वापस करके मैं भी वहीं उसी बेंच पर बैठ गया।

“पराजित लोगों को हमेशा से दास बनाने की परम्परा रही है कुणाल। सुदास के वंशज हारने के बाद दास बनाये गये और उनके यज्ञोपवीत पर रोक लगाकर उन्हें शिक्षा से वंचित कर दिया गया। उनके साथ ये व्यवहार पीढ़ी दर पीढ़ी किया गया। और जानते हो कुणाल शिक्षा का अभाव किसी भी व्यक्ति, किसी भी समाज की सकारात्मक सोच की हत्या कर देता है। पीढ़ी दर पीढ़ी अशिक्षा और गुलामी के कारण सुदास के वंशज और फालोवर का जीवन स्तर निम्नतम बिन्दु पर चला गया और उन्हें शूद्र कहा जाने लगा।”

“मतलब हम शूद्र राजा सुदास के वंशज या फालोवर है जो राम की ही तरह एक महान योद्धा थे?” मैंने चौंक कर लवी से पूछा।

“यकीनन। आप सबको जिन्हें आज शूद्र और दलित कहा जाता है वे महान वंश से है। उनका रक्त, सवर्ण जातियों के रक्त के समान ही लाल है। अब मुझे उम्मीद है कुणाल आप अपने दलित होने की हीन भावना से बाहर निकलकर अपने हक के लिये संघर्ष कर सकेंगे।”

“हाँ लवी आज से तुम मेरी प्रेयसी भर नहीं रही। मेरी प्रेरणा, मेरी मार्गदर्शक बन चुकी हो। अब मैं यकीनन संघर्ष करूँगा, बराबरी का हक पाने का

संघर्ष।” मैंने उत्तेजित होकर लवी का हाथ पकड़ा। अपना हाथ से मेरे हाथ पकड़ते हुए लवी बोली, “मुझे अपनी दोस्त, अपनी प्रेयसी ही रहने दो कुणाल। मुझे इससे ज्यादा और कोई जगह आपसे नहीं चाहिये मैं तो बस इतना चाहती हूँ आप खुद को बाकी लोगों के बराबर समझे अपने समाज का उत्थान करें। मैं ये सब इसलिये भी कह रही हूँ क्योंकि वास्तव में दलित या शूद्र किसी वक्त आज के सवर्णों के बराबर रहे थे।”

लवी की बात सुनकर मैं दृढ़ता महसूस कर रहा था। आज मैंने अपना अतीत जाना। एक ऐसा अतीत जो स्वर्णिम था और जिसे प्रतिशोध और जलन की आग ने नर्वस बना दिया। हम न जाने कितने सदियों से खुद को दबा-कुचला मानने की गलती करते रहे, सिर्फ इसलिए कि हमें बताया गया था कि हम ब्रह्मा के पैरों से पैदा हुए इसलिए जन्म के आधार पर ही निम्न हो गये। पर आज लवी मेरे सामने एक सच लाई थी जो सच हमारी हीन भावना को खत्म कर सकता था। लवी इतना सब कुछ जानती है मुझे अंदाजा नहीं था। और मैंने उससे इस बाबत पूछ लिया कि वो जबकि साइंस की स्टूडेंट है. पेंटिंग उसकी हॉबी है तो वो कैसे और क्यों कर अतीत और इतिहास के बारे में इतनी गहराई से जानती है। और फिर तब जबकि वो खुद एक मुस्लिम लड़की है।

मेरी बात सुनकर वो हँस पड़ी। बड़ी अजीब थी उसकी हँसी। मैं नहीं जानता था मैंने उससे ऐसा क्या पूछा लिया जिसके जवाब में वो हँस रही थी। पर सच कहूँ तो उसका हँसना मुझे अच्छा लग रहा था। और वो मुझे हँसती हुई अच्छी लग रही थी। वो लगातार हँसती रही और मैं उसे देखकर आनन्दित होता रहा। हँसते हुए उसने अपनी नज़रे चारों ओर घुमाई और फिर मेरे गाल पर पर एक बोसा लेकर मेरे कंधे पर सिर रखकर बोली, “तेरा गम, मेरा गम एक जैसा सनम। हम दोनों की एक कहानी।”

उसकी आवाज़ में उदासी थी। एक अजब उदासी। मैं तपड़ उठा, उसकी उदासी भांपकर। पत्थर की बेंच पर थोड़ा आगे खिसक कर मैं उसे सामने से पकड़कर उसका सिर और उसके गाल सहलाते हुए बोला, “क्या कह रही हो लवी? ये उदासी क्यों? तुम किस गम, किस कहानी की बात कर रही हो जो तुम्हें अंदर से उदास किये हुए है?”

“जिस तरह आपके पूर्वज हार के बाद दलित बनने पर मजबूर हुए उसी तरह हमें भी मुसलमान बनाया गया।” कहकर लवी खड़ी हो गई और वह काफी देर तक उदास थी।

हम उस रात लखनऊ वापस आ गये थे। विरेश के कमरे में मुझे छोड़कर लुबना अपने घर चली गई। खाना हमने रास्ते में उस ढाबे पर खा लिया था जहाँ कुछ देर के लिये बस रूकी थी। विरेश खाना खाकर अपने टेबल पर बैठकर नशे में लिख रहा था कि 'लवी ने मुझे बताया था विरेश हृदय से कवि है।'

मैं बिस्तर पर चला गया और लवी की प्रेरणा भरी कहानी की दृढ़ता ने मुझे नींद के हवाले कर दिया।

प्रतिशोध की पुनरावृत्ति

सुबह जब मैं बैग में अपने कपड़े रख रहा था तो चाय का कप देते हुए विरेश ने मुझसे पूछा, "कहाँ जा रहे हो कुणाल?"

"गाँव" चाय का कप विरेश से लेते हुए मैंने छोटा सा जवाब दिया।

"क्या इस बारे में लवी को तुमने बताया है?"

"नहीं"

"मुझे लगता है प्रेम की इमारत यकीन की नींव पर बुलन्द होती है। अब जबकि लुबना तुमसे हर बात शेयर करती है, तुम्हारे हर कदम में तुम्हारे साथ है तो तुम्हें भी उससे अपना ये प्रोग्राम शेयर करने चाहिये।"

"तुम कवि हो विरेश इसलिये तुम्हारी सोच भी जाग्रत है क्योंकि कवि अपने विचार से समाज को जाग्रत करने का काम करते हैं। तुम्हारी बात सही है मैं गाँव जाने से पहले लवी से मिलकर उसे जरूर बता दूँगा कि मैं गाँव जा रहा हूँ। मेरी बात सुनकर विरेश मेरे कंधे पर हाथ रखकर बोला, "जानते हो कुणाल! लुबना इतनी कम उम्र में ही बेहद क्रांतिकारी सोच रखती है। वो न सिर्फ सभी मज़हब और जातियों की समानता का ख़ाब देखती है बल्कि समाज में स्त्रियों और पुरुषों के बीच के अन्तर को भी खत्म करना चाहती है।"

"मैं जानता हूँ विरेश, लवी ने जिस राह को चुना है उस राह पर बिरले लोग ही चल पाते हैं। और यकीनन लवी एक दिन महानता का परचम बुलन्द करेगी।"

"और तुम फिर भी उसे बिना बताये जा रहे हो।"

“जा रहा था विरेश पर अब नहीं जाऊंगा।” मैं बैग वहीं एक तरफ रखकर दरवाजा खोलते हुए बोला।

“ओके, फिर अभी कहाँ जा रहे हो?”

“लवी को बताने।”

“ठीक है कमरे की एक चाभी लेते जाओ क्योंकि मैं कॉलेज चला जाऊंगा।” विरेश ने कमरे की एक चाभी मेरी ओर बढ़ाई। मैं विरेश के हाथ से चाभी ले पाता उससे पहले ही कमरे के दरवाजे पर एक कड़कती आवाज़ गूँजी - “तुम में से कुणाल कौन है?”

विरेश जिसका मुँह दरवाजे की ओर था, मैंने देखा इस वक्त पत्ते की तरह कांप रहा है। उसे यूँ भयभीत देखकर मैंने आवाज़ की दिशा में देखा तो मेरा शरीर भी सूखे पत्ते की तरह कांप उठा।

“कौन है कुणाल?” एक बार फिर से आवाज़ कड़की। और ज्यों ही मेरे हकलाते होंठों ने “ऋ.म.मैं।” कहा। त्यों ही आठ बलिष्ठ हाथों ने मुझे दबोच लिया।

उन चारों पुलिस कांस्टेबल ने मुझे किसी अनाज की तरह जीप में फेंक दिया। मैंने कराह कर उठने की कोशिश की तो उन कांस्टेबल के साथ आये इंस्पेक्टर ने अपने हाथ में लिए डण्डा मेरी पीठ पर मारते हुए कहा, “बास्टर्ड चमार”

मैं दर्द से बिलबिला कर रह गया। वो चार कांस्टेबल जीप की दोनों सीटों पर दो-दो करके बैठ गये। उनमें से दो ने अपने पैर मुझ पर रखकर मुझे जीप की फर्श में दबा दिया और इंस्पेक्टर के अगली सीट पर बैठते ही ड्राइवर ने जीप को गियर में डाल दिया। सुबह चढ़कर दोपहर और दोपहर ढल कर शाम हो चुकी थी। पुलिस स्टेशन में मौजूद हर कांस्टेबल, हर दरोगा मेरी पिटाई कर चुका था। न जाने कितनी बेल्ट मेरे शरीर पर अपने निशान बना चुकी थी। शुरू में मैंने चीख-चीख कर पूछा, “मेरा गुनाह क्या है? मुझे यहाँ क्यों लाया गया है?”

फिर शिथिल होकर पिटाई पर सिर्फ चीख और कराहे उबलती रही और अब शाम के इस पहर मैं होशो-हवाश गंवाकर हवालात की नंगी फर्श पर लेटा था।

मैं कितना भी अपने होश में न रहूँ, मैं कितना भी गहरी नींद में रहूँ, मुझे मार के चाहे कितनी भी पीड़ा दी जाये। मैं चाहे मृत्युशय्या पर आखरी श्वांस ही क्यों न ले रहा होऊँ पर मैं उस आवाज़ को पहला शब्द सुनते ही पहचान सकता था।

“पर मुझे ये हक है कि मैं ये जान सकूँ कि आपने किस जुर्म में कुणाल को गिरफ्तार किया है।” लवी की आवाज़ सुनकर मेरी मुर्दा देह में न जाने कहां से इतनी शक्ति आ गई थी कि गरदन उठाकर हवालात की सलाखों के बीच से उस ओर देख सकूँ जहाँ लवी इंस्पेक्टर के सामने बैठ कर मेरी गिरफ्तारी का सबब पूछ रही थी। उसके साथ में विरेश भी था।

“एक सम्भ्रांत और इनोसेंट लेडी का रेप और फिर उसे ब्लैकमेल करके उसका शारीरिक शोषण किया है इस बास्टर्ड ने।”

“व्हाट! ये पॉसिबल नहीं है इंस्पेक्टर साहब, कुणाल ऐसा नहीं कर सकता। जरूर आपको गलतफहमी हुई है।” लवी की आवाज़ अब जरज रही थी।

“हमें कोई गलतफहमी नहीं हुई है मिस लुबना। उस लेडी ने खुद ये रिटेन कम्प्लेन दी है इस बदमाश के अगेन्सा।” इंस्पेक्टर ने एक पेपर लुबना के सामने रखते हुए कहा।

“आप बार-बार उसे बदमाश, बास्टर्ड नहीं कह सकते।” लवी पेपर पर एक नज़र डालकर इंस्पेक्टर से थोड़ा सख्त आवाज़ में मुखातिब हुई जबकि विरेश वो पेपर उठाकर पढ़ने लगा।

“ये कम्प्लेनड झूठी है सर, सच तो ये है कि ये लेडी, ये मिसेज अंजली खुद कुणाल का शोषण करती थी। और एक बार उसे अपने प्राइवेट गुंडों से पिटवा भी चुकी है।” विरेश ने वो पेपर इंस्पेक्टर के सामने हिलाते हुए कहा।

विरेश के मुँह से मिसेज अंजली का नाम सुनकर मैं और लवी चौंक पड़े जबकि कुर्सी पर आराम से बैठा इंस्पेक्टर मुस्करा रहा था।

“तो मिस्टर आप कह रहे हैं कि मिसेज अंजली एक सम्भ्रांत औरत ने एक पुरुष का शारीरिक शोषण किया है। व्हाट अ नॉन सेन्स .. यूँ आकर टाकिंग।” इंस्पेक्टर अपना रूल विरेश की ओर तान कर कहा, “और तुम्हारी इस बैसिर पैर की बात मानेगा कौन?”

“सर ये बैसिर पैर की बात नहीं है, सच तो ये है कि यही सच है कि कुणाल बेहद मानसिक कष्ट में अपने दिन गुजार रहा है। आप मेरी बात यकीन कीजिये।” लवी ने विरेश की बात का समर्थन करते हुए इंस्पेक्टर के सामने मेरा पक्ष रखा।

“अच्छा यही होगा मिस लवी कि आप अपनी यही बात एक वकील के माध्यम से कोर्ट में रखें क्योंकि हमने कानून की तहत किसी प्रतिष्ठित महिला की

शिकायत पर कुणाल को गिरफ्तार किया है और हम इसे कल कोर्ट में पेश करेंगे। अच्छा होगा अब आप यहाँ से जाये।”

“क्या मैं कुणाल से मिल सकती हूँ?” लवी ने पुलिस ऑफिसर से रिक्वेस्ट की। थोड़ी देर सोचकर इंस्पेक्टर बोला, “ओके, ठीक है. पर सिर्फ पांच मिनट।”

मेरा हाल देखकर लवी की आँखें नम हो गईं पर आँसू मेरी आँखों से बहे। लवी को यूँ सामने पाकर, उसे अपने लिए यूँ संघर्ष करते देखकर मेरे आँसू मेरी आँखों का साथ छोड़कर बह चले थे। कोई और वक्त होता तो यूँ मेरे बहते हुए आँसू देखकर यकीनन लवी भी रो पड़ी होती। पर बिगड़े हुए हालातों ने उसे बेहद सख्त बना दिया था। उसने अपने जज्बातों को अपनी इच्छाशक्ति से नियंत्रित कर लिये थे। वह हाथ बढ़ाकर अपने हाथों से मेरी दोनों आँखों के बहते आँसू सोख लिये थे। पुलिस अफसर ने हमारी मुलाकात के लिए केवल पांच मिनट दिये थे और इन पांच मिनट में, मैं पूरी तरह खामोश रहा और लवी मुलाकात के पांचवे मिनट में सिर्फ इतना बोली, “हौसला रखना हम आपके साथ हैं, आप जल्द ही बाहर निकलेंगे। हम जानते हैं कि आप बेगुनाह है। मैं पापा से कहकर वकील का इंतजाम करती हूँ।”

लवी की कही गई सात्वना भरी बातों का मैंने अपनी पलकें झुकाकर सिर्फ खामोश रह कर जवाब दिया। मुझे उनीदी आँखों से देखती हुई लवी विरेश के साथ चली गई और कांस्टेबल ने मुझे वापस हवालात में बन्द कर दिया। पर इस बार उसने थोड़ी रहमदिली का परिचय देते हुए मुझे हवालात की फर्श पर भूसे की बोरी की तरह नहीं फेंका था।

मिसेज अंजली ने मुझपर यौन शोषण के आरोप लगाये थे। कोर्ट में उन्होंने अपने आरोप को बेहद मार्मिक अंदाज़ में अपने पेट पर हाथ रखते हुए कहा, “जज साहब इस मासूम से दिखने वाले शातिर लड़के ने मेरा इतनी बुरी तरह से शारीरिक शोषण किया है कि उसके फलस्वरूप एक अनचाहा बच्चा मेरी कोख में पल रहा है। अब जबकि मेरे पति इस बच्चे के अबार्शन की शर्त पर ही मुझे अपने साथ रखना चाहते हैं पर मेरे अन्दर के एक माँ का नर्म दिल किसी भी कीमत पर इस बच्चे का अबार्शन नहीं करवाना चाहती। जज साहब, एक अजन्में बच्चे को बचाने के लिए मैं अपना वैवाहिक जीवन दांव पर लगाने को

तैयार हूँ तो .।” मिसेज अंजली सांस लेने के लिये रुकी और बोली, “तो इस मासूम चेहरे के पीछे छुपे इस हैवान को कानून इतनी कड़ी सजा दे कि समाज के सामने वो उदाहरण बन जाये। जिससे कोई भी दरिन्दा फिर मुझ जैसे इनोसेन्ट महिला से खेल न सके और उसका जीवन यूँ बरबाद न कर सके।”

मिसेज अंजली के अंदाजे बयान ने मुझे हतप्रभ कर दिया था। ये मुझे बाद में लवी ने बताया था कि मिसेज अंजली के पास एल.एल.बी. की डिग्री है और वो कानून की बारीकियाँ समझती है। और अब मिसेज अंजली अपनी कानून की समझ और कानून की पहुँच से मुझे फंसा रही थी या यूँ कहें वह फंसा चुकी थी। लवी के पापा को मैंने उस दिन पहली बार देखा था अदालत में। उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रखकर कहा, “फिक्र मत करो बेटे, अल्लाह बड़ा कारसाज है वो सब ठीक करेगा।” जब लवी के पापा मेरा हौसला बढ़ा रहे थे तो लवी उनके पास खड़ी थी। वो लवी से बोले “लुबना बेटे तुम केस पर नज़र रखना और वकील साहब से रोज मिलते रहना।” फिर उन्होंने मुझसे कहा, “वकील साहब बड़े काबिल वकील है वो तुम्हें जरूर बेगुनाह साबित कर देंगे।”

मलिक सफदर हयात यकीनन बहुत ही काबिल वकील थे। काबिल होने के साथ-साथ ईमानदार भी। उन्होंने मुझे बचाने की, मुझे बेगुनाह साबित करने की हर मुमकिन कोशिश की। जबकि मैंने अट्टारह साल पूरे नहीं किये। मतलब अभी मैं अवयस्क था, अभी बालिग नहीं था तो मुझे यौन शोषण के केस में रियायत मिल सकती थी। पर उस दिन लवी ने मुझे सच कहा था कि ‘जो एक समाज सदी दर सदी शोषित होता रहा, उसे दलित, शूद्र कहा जाता रहा। वो खुद को दलित, शूद्र मानता रहा तो उसके पीछे जो सबसे बड़ी वजह थी वो थी उसका अशिक्षित होना।’ मैंने उस दिन ही उसकी बात सौ फीसदी सच मान ली थी पर अब मौजूदा हालातों ने भी मेरे सामने लवी की बातों को सही ठहरा दिया था।

आज मेरे पिता जिन्हें मैं दादा कहता था उन्होंने अशिक्षित होने की वजह से अदालत में मुझे तकरीबन बीस साल का घोषित कर दिया। उनके पास अपने बच्चे की जन्मतिथि याद रखने की कोई कारगर विधि नहीं थी। साल दर साल दूसरों की गुलामी दूसरों की तिमारदारी ने उनसे किसी भी चीज को याद रखने का इल्म छीन लिया। मेडिकल टेस्ट में परीक्षित आयु से दो साल ज्यादा या दो साल कम उम्र मानने का प्रावधान कानून में है। अब जबकि मेरे पिता ने अदालत के माननीय जज को मेरी उम्र बीस साल बताई तो मेडिकल परीक्षण में मेरी उम्र अट्टारह साल से कुछ महीने कम आई तो उसे अदालत ने मेरे पिता

के बयान के आधार पर बीस साल मान लिया। मेरे हाई स्कूल के सर्टिफिकेट में दर्ज उम्र तकरीबन बीस के आस-पास थी। मैं जानता था ये मेरे माता-पिता के अनपढ़ होने का परिणाम था। स्कूल में प्रारंभिक दाखिले के वक्त जो उम्र स्कूल के टीचर ने लिख दी वो वास्तविक नहीं था लेकिन वही आज मेरे लिए अभिशाप बन गया। कानूनन बालिग होने की वजह से मुझे कथित यौन शोषण के आरोप से कोई रियायत नहीं मिल सकती थी। मेरे केस के इस मोड़ पर लुबना बेहद चिन्तित हो उठी पर अब तक की मेरी जिंदगी और अदालत की कारवाई ने मुझे थोड़ा सख्त जान बना दिया था।

उस शाम जब लुबना मुझसे मिलने आई तो उसने सलाखों के पार अपना हाथ मेरे हाथ में देकर बोली, “कृणाल अब मैं टूट रही हूँ। मुझे कोई राह नहीं सूझ रही।” और फिर वो सलाखों पर सिर रखकर रोते हुए बोली, “मेरे मौला मेरी मदद करो यूँ फौलादी सलाखों के पीछे कैद मेरे बेगुनाह महबूब को अपने करिश्में से इन सलाखों से आज़ाद कर” कहकर लुबना फूट-फूटकर रोने लगी। उसे यूँ रोता देखकर मेरा दिल भी रो पड़ा पर बीते दिनों लुबना के दिये बेहिसाब हौसलों ने मुझे जीवन की मुश्किलों, जिंदगी की कठिनाइयों से लड़ना सिखा दिया था।

उसके हल्के कर्ली बालों को सलाखों के पार से मैं अपनी उंगुलियों में किसी माले की तरह पिरोते हुए बोला, “लवी यूँ जो तुम हौसला खो दोगी तो यकीन करो तुम मुझे खो दोगी।” मेरी बात सुनकर उसने तड़पकर मेरे होंठों पर अपनी नर्म गुदाज उंगली रख दी। और उसी वक्त सिपाही की कर्कश आवाज़ गूँजी, “चलो, मुलाकात का वक्त खत्म हो गया।”

वकील मलिक सफदर हयात ने अदालत से गुजारिश की, कि मिसेज अंजली के गर्भ में पल रहे बच्चे का और मेरे डी.एन.ए. की जांच की जाये। अगर मेरा डी.एन.ए. मिसेज अंजली के गर्भस्थ शिशु से मैच नहीं करेगा तो ये मेरी बेगुनाही का सबूत होगा। जब कोर्ट ने हमारे डी.एन.ए. जांच की अनुमति दे दी तो वकील मलिक हयात अपनी जीत और मेरी रिहाई को लेकर मुतमुईन हो गये। पर मेरे और लवी के ज़ेहन अभी भी अन्देशे में जी रहे थे। लवी ही नहीं मुझे भी डर था कहीं मिसेज अंजली को गर्भ मेरे सहवास के परिणामस्वरूप न ठहरा हो। लवी को ये भी अन्देशा था कहीं मेरे बेगुनाह साबित होने के डर से केस में संजू

तुफैल साहब के सामने उनकी कही हुई बात के बाद मैंने जबरन मुस्कराने की कोशिश की। जबकि मैं जानता था मेरी मुस्कान नकली है क्योंकि अब मेरी उदासी तब तक मेरा साथ नहीं छोड़ने वाली थी जब तक कि मैं इस घर में रहने के लिये मधु को न ले आऊँ। विधायक पाण्डे के बंगले पर जब मैं और लवी कई बार गये तब हमारी मुलाकात मधु से हो पाई थी। विधायक पाण्डे उस दिन किसी काम से दिल्ली गये थे। नौकर हमें बाहर के कमरे में बिठा के चला गया। मैं और लवी उस वक्त चौंककर खड़े हो गये जब बंटी एक विचित्र मुस्कान से हमें देखती हुई कमरे में आई। वो विधायक पाण्डे की बेटी है मैं जानता था पर अपनी अय्याशी के लिए अलग रहने वाली बंटी अपने पापा के बंगले में होगी ये बात मुझे चौंका रही थी। खैर, मेरा चौंकना बेवजह ही था क्योंकि बंटी इस बंगले के मालिक की बेटी थी और भले ही वो अलग फ्लैट में रहती हो तो भी उसका इस बंगले में आना-जाना लाजिमी था। हमारे लिये पानी और चाय लेकर मधु ही आई थी। यद्यपि उसके चेहरे पर हँसी खेल रही थी फिर भी मैंने उस पर उदासी की छाया महसूस किया। जब मैंने बंटी से कहा, “अब मधु यहाँ नहीं रहेगी। उसे हम अपने साथ ले जा रहे हैं।” तो वो उम्मीद के विपरीत बोली, “अब जबकि हमने तुम्हें जाने से नहीं रोका था तो तुम्हारी बहन को कैसे रोक सकते हैं।”

मैं और लवी मधु को लेकर घर आ गये। मधु को यूँ अपने बीच पाकर दादा और अम्मा खुश हो गये। मधु भी खुश थी। पर वो अक्सर तन्हा चुपचाप बैठी रहती। मैं उससे उसकी उदासी का सबब पूछता तो वो हँसकर कहती, “अरे भैया मैं भला क्यों उदास रहने लगी। और अब तो हम साथ में रह रहे हैं फिर आपको क्यों लगता है कि हम उदास होंगे। हम सच में खुष है।”

मैं उस वक्त मधु की बात सुनकर खामोश हो गया। पर न जाने क्यों मुझे लगता था कि उसकी हँसी खोखली है और उसके कहे शब्दों के पीछे कहीं न कहीं कोई उदासी की परत जरूर है। मेरे लिये ये परत निकालना बेहद जरूरी था। एक शाम मैंने लवी के सामने अपनी चिंता व्यक्त की और लवी ने मुझे आश्वासन दिया कि वो जल्द ही मधु से बात करके उसकी भीतरी उदासी का सबब जानने की कोशिश करेगी।

अभी मैं स्थितियों को सामान्य करने की कोशिश ही कर रहा था कि अम्मा-दादा ने गाँव में वापस जाने की रट लगा दी। मैं उन्हें समझाता रहा, मनाता

रहा पर एक दिन दादा ने आदेशात्मक लहजे ऐलान कर दिया कि वो अम्मा और मधु के साथ गाँव चले जायेंगे। हाँ अगर मैं चाहूँ तो यहाँ रह सकता हूँ।

दादा की कही बात से परेशान होकर मैंने लवी के पापा तुफैल साहब से बात की तो उन्होंने कुछ सोचकर कहा, “अगर वो गाँव जाने की इतनी जिद कर रहे हैं तो उन्हें रोकना नहीं चाहिये।”

जब मैंने दादा-अम्मा और मधु को गाँव जाने वाली बस में बैठाया तो मेरा दिल न जाने क्यों लरज उठा। उन्हें बस में बिठाकर मैं काफी देर तक बेमकसद इधर-उधर घूमने के बाद लवी के घर आ गया। उस वक्त लवी के पापा कहीं जा रहे थे। जब मैंने उनसे कहा, “नमस्ते सर” तो उन्होंने कहा, “कुणाल, तुम सर की जगह मुझे अंकल भी कह सकते हो।”

इतना कहते तुफैल अंकल घर से चले गये। लवी चाय ले आई। चाय पीते हुए मैंने लवी से पूछा कि क्या उसने मधु से बात की थी।

“न..नहीं, टाईम ही नहीं मिला।” कहते वक्त लवी की आँखें नीचे हो गईं। फिर उसने तुरन्त ही किसी और बात का जिक्र छेड़ दिया। वो मेरी पढ़ाई की बात करने लगी और मैं सबकुछ भूलकर लवी के बात करते वक्त गोल होते होंठों के भंवर में खो गया।

उदास मुस्कराहटें

व्यक्ति लाख भूलना चाहे पर वो अपना अतीत नहीं भूल पाता। अब जबकि लवी की मुहब्बत मेरी हमराह बन गई थी। अब जबकि मैं अपने पर लगाई गई मान मर्दन की झूठी तोहमत से बरी हो चुका था। तो भी कभी-कभी तन्हाईयाँ मुझे डसती थी। मेरा ज़मीर कभी-कभी मुझे दोषी ठहराता था। और सच कहूँ तो मैं भी दोषी था। क्योंकि मैंने उस जीवन को सबकुछ जान-समझकर जिया था। भले ही बंटी, संजू ने मुझे बहका कर उस रास्ते पर डाला मगर चला तो मैं खुद भी था उसी रास्ते पर।

‘बंटी और संजू’ मैं जब भी कभी उन दोनों के बारे में सोचता तो जी कसैला हो जाता। मुझे अपने आपसे धिन आने लगती। पर कभी-कभी मैं सोचता कि अगर मैं बहक सकता हूँ, तो मुझे बहकाया भी जा सकता है। तो फिर बंटी और संजू को क्यों नहीं। वो तो मुझसे भी ज्यादा मासूम रही होंगी जब उन्हें बहका

कर इस रास्ते पर लाया गया होगा। फिर मैं सोचता जो उन्हें बहका कर इस रास्ते पर लाया गया होता तो उन्होंने उस चगुल से छूटने की कोशिश क्यों नहीं की जबकि वो दोनों बेहद बड़े घरों से ताल्लुक रखती थी। कहीं उन दोनों को ये जीवन जीने में आनन्द तो नहीं आने लगा। ठीक है उन्हें जो ये जीवन भा गया तो वो जियें पर उन्हें किसी मासूम को इसमें नहीं फंसाना चाहिये। उन्होंने पहले मुझे फंसाया फिर कविता को और हम जैसे और भी कई होंगे।

कविता की सोच ज़ेहन में आते ही एक टीस मेरे पूरे बदन में उठ गई। अभी उसकी उम्र पन्द्रह से ज्यादा तो हरगिज़ नहीं होगी और उसे इस सभ्य कहे जाने वाले समाज के सभ्रांत घर के लोगों ने ऐसे सब्ज बाग दिखाये कि वो लोगों के बिस्तर पर बिछने जैसी नारकीय काम को स्वर्गिक आनन्द समझने लगी। उसने उस दिन रेव पार्टी में कैसे मेरे सामने ही गैर मर्दों से अपने शरीर का मर्दन स्वीकार किया जबकि मैं रिश्ते में उनका दूर का भाई लगता था। शायद इसीलिए अब जबकि लवी ने मुझे अपने बीते दिनों के इन फ़रेबी किरदारों से मिलने से मना किया तो मैंने भी मन ही मन सोच लिया कि मैं कविता से मिलकर उसे सही रास्ते पर लाने की कोशिश जरूर करूँगा।

मेरे ज़ेहन में सिर्फ बंटी, संजू और कविता ही नहीं थी वरन् कुछ और नाम थे जो मेरे स्याह अतीत निकलकर मेरे वर्तमान की हसीन सुबह और शाम को उदास कर देते। मिसेज अंजली और मिसेज रंजना।

मिसेज अंजली एक खूबसूरत महिला जो मेरी देह पाने के लिए इस हद तक जा सकती थी कि वो सरेआम अपनी इज्जत की उड़ी धज्जियाँ कबूल कर सकती थी। उसने अपने पेट में पल रहे बच्चे के बाप के रूप में भरी अदालत में मेरा नाम लिया था। जबकि वो खुद मुझसे तकरीबन पन्द्रह-सोलह साल बड़ी एक शादी शुदा महिला थी। मैंने अंदाज़ा लगाया था कि मिसेज अंजली मनोवैज्ञानिक तौर पर बीमार औरत थी। उसके बीमार मन ने मुझे अपने बिस्तर पर पसंद किया। उसका बीमार ज़ेहन बिस्तर पर पहले अपने साथी पुरुष का मान मर्दन करके और फिर उससे अपना मान-मर्दन करवाने में आनन्दित होता था। वो शायद कई सालों से बिस्तर पर अपने मनपसंद पुरुष की तलाश में थी और उसकी ये तलाश मुझे हासिल कर लेने के बाद समाप्त हुई।

अब जबकि मिसेज अंजली मानसिक रोग के वशीभूत होकर अपनी यौन इच्छा की पूर्ति के लिये अपनी इज्जत सरेआम रूसवा कर चुकी थी तो फिर वो मुझे हासिल करने के लिये कुछ और साजिश भी रच सकती थी। मुझे उनसे

सावधान रहने की बेहद ज्यादा जरूरत थी। मैं अब जहाँ संजू, बंटी और मिसेज अंजली से मिलना नहीं चाहता था तो वहीं न जाने क्यों मैं मिसेज रंजना से मिलना चाहता था। मिसेज रंजना वो जड़ थी जिसकी शाखों पर वो घटिया और धिनौना खेल खेला जा रहा था जिसमें न जाने कितनी मालूस ज़िंदगियाँ बर्बाद हो चुकी थी और न जाने कितनी ज़िंदगियाँ बर्बाद होने वाली थी।

अब जबकि मेरा दिल लवी से बिना कुछ बताये किसी से मिलने का या कहीं जाने का गवाही नहीं देता था तो भी मैंने मन ही मन मिसेज रंजना से मिलने का फैसला किया। अत्याचार और अन्याय का एक पूरा दौर देखने के बाद मेरे दिल में कहीं न कहीं अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने का जज़्बा पल रहा था और इसी जज़्बे ने मुझे मिसेज रंजना के गलीज मकड़जाल को तोड़ने के लिए प्रेरित किया। मैं मिसेज रंजना के धिनौने गंदे खेल को खत्म करना था तो उनसे मिलना भी जरूरी था।

“मुझे लगा तुम जेल से आजाद होने के बाद मिसेज अंजली से मिलने जाओगे।” मिसेज रंजना ने ड्राइंग रूम में प्रवेश करते हुए कहा। और फिर सोफे पर बैठते हुए बोली, “चाय, काफी या रम क्या लेना पसंद करोगे?”

“अगर आप कुछ देना चाहती हैं तो कविता और उसकी जैसी अन्य लड़कियों का जीवन खराब मत करें।” मैंने मिसेज रंजना से सीधे मुद्दे से बात की थी।

“कुणाल शायद तुम नहीं जानते। अदालत से यूँ तुम्हारे सकुशल छूट जाने के पीछे तुम्हारे वकील और खैरख्वाह से ज्यादा हमारा हाथ है। थोड़ा सोचो कुणाल अगर अदालत में बंटी और संजू भी तुम्हारे खिलाफ़ यौन शोषण का आरोप लगा देती तो तुम्हारा क्या हाल होता? तुम सारी उम्र जेल की सलाखों के पीछे एड़िया रगड़ते रहते।”

“मिसेज रंजना, हर कोई मिसेज अंजली की तरह अपने को यूँ सरेआम रूसवा करवाना पसंद नहीं करेगा। हो सकता है बंटी और संजू पर तुमने दबाव बनाया हो मेरे खिलाफ़ गवाही देने को, पर वो इसके लिये तैयार नहीं हुई होगी। शायद उनके ज़मीर ने उन्हें ऐसा करने नहीं दिया होगा।”

“ज़मीर” मिसेज रंजना एक जोरदार ठहाके लगाकर हँस पड़ी और फिर उसी अंदाज़ में हँसते हुए उन्होंने कहा, “कुणाल तुम ज़मीर की बात कर रहे हो तो मैं तुम्हें ज़मीर का एक एकज़ाम्पल दिखाना चाहूँगी। देखोगे?”

मिसेज रंजना मुझे दिखाना चाहती थी वो किस तरह ज़मीर को परिभाषित करती है शायद यही जानने के लिये मेरे होंठों से 'हाँ' निकल गया।

“ओके गुड ठीक है!” कहकर मिसेज रंजना ने एक नौकर को बुलाकर कहा। साहब को ऊपर के कमरे में बिठाओ। ‘ऊपर का कमरा’ ज्यों ही मिसेज रंजना ने ये कहा। मेरे दिमाग में खतरे की घंटिया बज उठी।

“नहीं मिसेज रंजना! अगर आपको गिरे हुए ज़मीर की नुमाइश करनी है तो यहीं कीजिये वरना मैं जाता हूँ।”

“ठीक है रूको मैं पांच मिनट में आई।” कहकर मिसेज रंजना वॉशरूम में चली गई। मुझे लगा शायद वो बिल्कुल फ्रेश होने के बाद ज़मीर के ऊपर अपना नज़रिया पेश करेंगी। मैं इन हालातों में मन ही मन खुद से ही द्वन्द्व करते हुए आँखें बन्द करके सिर झुकाकर बैठ गया। इस वक्त मेरी सोच की जद में कविता थी मैं उसे इस नरक से निकालना चाहता था पर .

वॉशरूम का दरवाजा खुलने की आवाज़ के साथ मेरी आँखें खुली की खुली रह गई। खुली क्या फटी रह गई। वॉशरूम के दरवाजे पर मिसेज रंजना खड़ी थी, बिल्कुल अपनी जन्मजात अवस्था में। मैं उन्हें यूँ फुल नेकेड अपने सामने देखकर कुछ बोल पाता उससे पहले ही मिसेज रंजना ने मेरी ओर अपनी दोनों बाहें फैलाई और कहा, “आओ कुणाल मैं तुम्हें मिसेज अंजली से ज्यादा मज़ा दूंगी और तुम्हें इसके बदले में मेरी जूती से शराब पीने की भी जरूरत नहीं है।”

पहले तो मैं मिसेज रंजना को उसी नग्न अवस्था में अपलक देखता रहा लेकिन फिर खड़े होकर बोला, “मिसेज रंजना मैं तुम्हारे इस ज़मीर की परिभाषा और तुम्हारे ज़मीर को अब अच्छी तरह से जान गया हूँ। तुम्हें इस तरह, इस कदर अश्लील देखकर अब मेरे अन्दर इतना भी शील नहीं रहा कि किसी चादर से तुम्हारी ये नग्नता ढक सकूँ।” फिर मैं बाहर के दरवाजे की ओर बढ़ता हुआ बोला, “आपसे किसी बात की उम्मीद लेकर आना मेरी उन भूलों में से एक है जो मैं अपने जीवन के गुजरे दिनों में कर चुका हूँ।”

“और जाते-जाते ये भी जानते जाओ कुणाल कि तुम इसी तरह से हर बार ना उम्मीद होगे जब भी कभी मेरे राज को गहराई से जानने की कोशिश करोगे। याद रखना कुणाल मेरा शरीर भले ही तुम्हें आकर्षित न कर पाया हो पर मेरे पास ऐसे कई शरीर हैं जिन्हें चाटने के लिये बड़े-बड़े आला अधिकारी और नेता मेरे आगे दुम हिलाते रहते हैं।”

मैंने मिसेज रंजना की फुंफकारती आवाज़ सुनी और बिना कुछ कहे दरवाजा खोलकर बाहर आकर मैंने ठीक उसी तरह से महसूस किया जैसा कोई व्यक्ति गलती से वेश्यालय में पहुँचने के बाद वहाँ से बेदाग निकलकर महसूस करता होगा।

“आप कहाँ गये थे, मैं कब से यहाँ आपका इंतजार कर रही हूँ।” लवी उस वक्त विरेश के कमरे के बाहर ग्राउण्ड में एक पत्थर की बेंच पर बैठी मेरा इंतजार कर रही थी। उसकी आवाज़ में बेहद उतावलापन था और उसके इस उतावलेपन से मैंने अन्दाज़ा लगाया कि वो मेरा इंतजार काफी वक्त से कर रही थी।

“कहीं नहीं बस यूँ ही टहलने निकल गया था।” मैंने लवी से सच छुपाया।

“अच्छा किया थोड़ा बहुत घूमोगे-टहलोगे तो सेहत के लिए अच्छा रहेगा।” लवी बेंच से उठी और फिर मेरा हाथ पकड़कर बोली चलो मेरे साथ चलो मुझे आपको अपनी कुछ पेंटिंग्स दिखानी है।”

हम एक साथ चलते हुये अभी मुख्य सड़क तक ही पहुँचे थे कि सामने से आते हुए विरेश को देखकर वहीं पर रूक गये। “कहीं जा रहे हैं आप लोग?” विरेश ने पूछा।

“लवी की बनाई एक पेंटिंग देखने।” विरेश की बात का जवाब मैंने दिया।

“क्या शाम तक फ्री हो जाओगे?” विरेश के चेहरे पर मुझे परेशानी नज़र आई।

“हाँ हाँ, क्या कोई समस्या है विरेश?” शायद लवी ने भी विरेश के चेहरे की परेशानी को भांप लिया।

“वो कविता . !” विरेश ने बात अधूरी छोड़ी।

“क्या हुआ कविता को? सी इज फाईन न?” कविता का जिक्र सुनते ही मेरी चिन्ता का बढ़ना स्वभाविक था। मगर मेरी बात पर विरेश ख़ामोश रहा। उसे यूँ ख़ामोश देखकर लवी ने विरेश का कंधा हिलाकर पूछा, “विरेश तुम चुप क्यों हो? क्या हुआ है कविता को और ये तुम्हारे चेहरे पर ये परेशानी का हुजूम क्यों नज़र आ रहा है?”

“कविता हॉस्पिटल में है।” विरेश के इस खुलासे से मैं और लवी दोनों के होंठों से सदमें भरे शब्द एक साथ निकले - “लवी हॉस्पिटल में क्यों, क्या हुआ है उसे?”

ये एक प्राइवेट नर्सिंग होम था। इस नर्सिंग होम में अन्य प्राइवेट नर्सिंग होम की तरह चमक-दमक और आधुनिक सुविधाओं का अभाव था। कविता के पास चाची बैठी थी। मुझे और लवी को वहाँ विरेश के साथ देखकर उनकी आँखों में आँसू ढुलक पड़े जिसे उन्होंने साड़ी के पल्लू से साफ करने की कोषिष की। पर उनकी ये कोषिष मेरे साथ आये लवी और विरेश से भी छुप न सकी। लवी, कविता का सिर सहलाकर वहीं चाची के पास बैठ गई। मैं और विरेश खड़े रहे। कविता ने हाथ के इशारे से मुझे और विरेश को बैठने को कहा। हम दोनों भी एक बेंच पर बैठ गये। कविता का चेहरा बेहद थका और पीला लग रहा था। लवी के पूछने पर चाची ने कविता की बीमारी का नाम पीलिया बताया। हम वहाँ तकरीबन आधे घंटे रुके रहे। नर्स ने आकर ऊँची आवाज़ में ज्यादा भीड़ इकट्ठी न करने की हिदायत दी। नर्स की बात सुनकर मैं, लवी और विरेश बाहर आ गये थे। इस आधे घंटे में कविता होंठों से एक बार भी नहीं बोली थी। मैं और विरेश ने तो उससे कोई बात नहीं की जबकि लवी की किसी भी बात का जवाब उसने अपना सिर हिलाकर देने की कोशिश की। बृज काका के लिए कविता की बीमारी में एक प्राइवेट नर्सिंग होम के प्राइवेट वार्ड का खर्चा अफोर्ड करना मेरे गले से नीचे नहीं उतर रहा था। आधे घंटे बाद हम तीनों खामोश होकर नर्सिंग होम परिसर से बाहर आ गये।

“क्या आप दोनों आंटी की बात से सहमत हैं?”

“कौन सी बात?” विरेश के सवाल के जवाब में लवी ने सवाल किया।

“क्या आप लोगों को लगता है कि कविता पीलिया से पीड़ित है?” विरेश ने फिर सवाल ही किया।

“आंटी झूठ क्यों बोलेंगी?” लवी ने खड़े होकर बारी-बारी से मेरा और विरेश का चेहरा देखा। विरेश ने आगे कहा, “अपनी लड़की और घर की इज्जत बचाने के लिये किसी भी माँ का बोला हुआ ये बहुत मामूली झूठ है जो आंटी ने बोला है।”

“विरेश तुम्हारे कहने का मतलब क्या है?” मैं बातचीत में पहली बार शामिल हुआ।

“हाँ विरेश और तुम्हें क्यों लगता है कि कविता को कोई और बीमारी है। और आंटी झूठ बोल रही है।” लवी कहते हुए विरेश की ओर लपकी और उसके पीछे मैं भी।

“क्योंकि यहाँ काम करने वाली एक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी मेरी रिलेटिव है।” कहते हुए वो पास ही एक छोटी सी चाय-नाश्ते की दुकान की ओर बढ़ गया। विरेश की बात सुनकर मैं और लवी दोनों सकते में थे।

२२२२२२२२२२२२

“ये तो जुल्म की इन्तेहां है बस अब और नहीं।” कहकर मैं वहाँ से उठ गया।

“क्या करेंगे आप?” लवी ने मेरा हाथ पकड़ लिया।

“संघर्ष-जुल्म, अन्याय के खिलाफ।” मैंने लवी की आँख में झाँककर कहा। लवी भी मेरी आँखों में देखती रही और फिर खड़े होकर बोली, “इस संघर्ष में मैं आपके साथ हूँ।”

“और मैं भी।” खड़े होकर विरेश ने मेरा दूसरा हाथ पकड़ लिया।

“बच्चा लोगों कहो तो दूसरी चाय बना दे।” चाय वाले का स्वर गूँजा तो हम वापस वहाँ बैठ गये, आँखों और दिल में दृढ़ता लिये हुए।

मैं और विरेश लवी के साथ उसके उस फ्लैट पर आ गये थे जहाँ वह तन्हाई में अपने ख्यालों के रंग अपने नर्म हाथों से तूलिका पकड़कर कैनवास पर भरती थी।

“हमारे संघर्ष की शुरूआत तब तक नहीं हो सकती जब कि कविता खुद इस संघर्ष में शामिल न हो जाये।” लवी अपनी एक अधूरी पेंटिंग पर कूची से रंग भरते हुए बोली।

“जबकि कविता शायद मुझसे बात करना पसंद नहीं करती। वो शायद अब मुझे भी पसंद नहीं करती तो फिर वो क्यों कर मेरे कहने से इस संघर्ष का हिस्सा बनेगी जो मैं उसके लिये करने जा रहा हूँ।” मैंने कभी लवी की ओर तो कभी कैनवास पर रंग उतारती उसकी उंगलियों में फंसी तूलिका को देखते हुए बोला।

“कविता इस संघर्ष में तभी शामिल हो सकती है जब वो खुद सच बयान करे।” लवी उसी तरह पेंटिंग में रंग भरते हुए बोली।

“मुझे नहीं लगता कविता खुद उस नर्क से निकलना चाहेगी। क्योंकि मैंने बहुत पहले ही उसे इस नर्क से निकालना चाहा था तब उसने मुझे दुत्कार कर खुद इस नर्क को क़बूल किया। और अब तो शायद काका और चाची भी अपनी बदनामी की डर से उसको ऐसा करने नहीं देंगे।”

“ये जरूरी तो नहीं कुणाल कि कविता तुम्हारी बात न माने तो किसी और की बात भी न माने।” लवी ने पेंटिंग से अपनी नज़र हटाकर मेरी ओर देखा।

“तो तुम्हारे कहने का अर्थ क्या है लवी?”

“विदेश, क्यों विदेश! क्या तुम कविता को संघर्ष करने के लिए रज़ामंद नहीं कर पाओगे?” कहकर लवी अपने कमर पर हाथ रखकर अर्थपूर्ण निगाहों से विदेश को देखने लगी।

“कोशिश करूँगा।” कहकर विदेश ने जब अपनी पलकें थोड़ा नीचे झुकाया तो मैं लवी की अर्थपूर्ण निगाहों का मतलब जान चुका था।

ये संधियों के टूटने का समय है।

कविता की बीमारी का सबब पीलिया न होकर अबार्शन था। वहीं दूसरी ओर विदेश, कविता के प्रेम में था। ये मेरी आँखें नहीं पढ़ पाई थी पर लवी की आँखों ने पढ़ लिया। मैंने लवी से पूछा कि उसे विदेश के कविता के प्रेम में होने का अंदाजा कैसे लगा। तो लवी ने कहा, “कुणाल आप कविता के रिश्तेदार हो, और मैं उसे पढ़ाई के लिये गाइड करती थी तो भी हमें उसके साथ हुए इस हादसे की खबर नहीं थी। वो हॉस्पिटल में है हम नहीं जानते थे जबकि विदेश के पास ये सब खबर थी। जानते हो कुणाल जब कोई किसी के बारे में इस कदर सोचने लगे तो वो यकीनन उसके प्रेम में होगा।” लवी की बात सुनकर मैं ख़ामोश उसकी आँखें पढ़ता रहा, जहाँ कतरा-कतरा मेरा प्रेम लिखा था। और लवी ने मुझे बताया कि वो जब कविता से मिली तो उसने उसकी आँखों में विदेश के लिए प्रेम को पढ़ा था।

नर्सिंग होम से कविता के डिस्चार्ज होने के बाद विदेश और लवी कई बार उससे मिले। वे उसे किसी पार्क या रेस्तरां ले गये। लवी और विदेश के दिये

गये तमाम हौंसलों के बाद कविता फरेब से उसके साथ किये गये यौन शोषण के खिलाफ FIR दर्ज कराने की बात मान गई। पर बृज काका और चाची ने इसे अपना भाग्य मानकर आगे कोई भी बात करने से सख्ती से मना कर दिया। लवी और विरेश ने जब उन्हें ज्यादा समझाने की कोशिश की तो काका ने गुस्से से उन्हें ये तक कह दिया कि उन्हें अब उनके यहाँ आने की और कविता से मिलने की कोई जरूरत नहीं है।

मैं भी जब बृज काका और चाची से मिला तो उन्होंने मुझे भी इस बाबत कोई भी बात न करने की हिदायत दी। मैं उन्हें वापस कुछ समझा पाता उससे पहले ही बृज काका ने मेरे सिर पर बम फोड़ते हुए कहा, “कुणाल अगर तुम्हें कविता की इतनी ही चिन्ता है और तुम उसकी जिन्दगी के लिए इतने ही फिक्रमन्द हो तो उससे शादी कर लो।”

बृज काका की बात सुनकर दो मिनिट तक मुझे समझ में ही नहीं आया कि मैं उनकी बात का क्या और कैसे जवाब दूँ।” मुझे खामोश देखकर बृज काका वापस बोले, “क्यों कुणाल अब तुम्हारी समाज सेवा और न्याय-अन्याय की बातों का क्या हुआ?”

“काका आप जानते हैं मैं और कविता रिश्ते में भाई-बहन होते हैं और फिर मेरे मन की हमेशा उसके लिये बहन के ही भाव रहे हैं तो फिर ये कैसे मुमकिन है और आप ये बात कह भी किस तरह सकते हैं।”

“कुणाल हमारी परम्पराओं में बहुत से रिश्ते भाई-बहन के होते हैं पर उनमें शादियाँ होना जायज है। कोई भी आदमी अपनी बेटी की शादी अपने बहन के बेटे के साथ कर सकता है जबकि उनका रिश्ता भाई-बहन का होता है। तुम्हारा और कविता का जो भाई-बहन का नाता है तो क्या हुआ? इसे भी पति-पत्नी के नाते में बदला जा सकता है। गुजरी हुई किसी पीढ़ी में हमारे पुरखों ने अपनी लड़की की शादी तुम्हारे किसी पुरखे के साथ की थी। जब अतीत में हमारे घर की लड़की तुम्हारे घर ब्याही जा चुकी है तो फिर कविता का ब्याह अगर तुम्हारे साथ हो तो क्या बुरी है। तुम कविता से ब्याह करके उसका मान-सम्मान बचा सकते हो, उसे एक अच्छी जिन्दगी दे सकते हो।”

“पर काका मैंने कविता को हमेशा अपनी बहन की नज़र से देखा है। अब जो मैं उससे ब्याह करूँ तो ये पाप होगा।”

“पाप! तुम पाप की बात कर रहे हो कुणाल। ठीक है जो तुम कविता को अपनी बहन मानते हो तो फिर तुमने ये कैसे गवांरा किया कि एक नीच जाति का लड़का उसके करीब आये, उसे अपने प्यार में बहलाये-पुफसलाये।”

“नीच जाति! कौन काका? मैं आपकी बात समझ नहीं पा रहा हूँ। अब जबकि हम खुद चमार है जिसे ये समाज सदी दर सदी नीच जाति कहकर प्रताड़ित करता आया है। तो वो किसी को नीच जाति कैसे कह सकता है. क्या हमसे भी नीची कोई जाति है?”

“क्या विरेश भंगी नहीं? क्या वो हमसे नीची जाति का नहीं?”

बृज काका की बात ने मुझे हिला दिया। अब जबकि हमें कोई अछूत, चमार, नीच कहता है तो हम इसे अन्याय कहते हैं पर अब जबकि बृज काका विरेश को नीच जाति कह रहे थे तो मैं इसे क्या कहता। विरेश जो अपने नाम के साथ वाल्मीकि लिखता था, जो एक भंगी था, वो बृज काका की नज़र में छोटी-जाति का था। और बृज काका को अपने से छोटी जाति के लड़के का अपनी लड़की के साथ मेल जोल गंवार नहीं था।

“अब जबकि हम और आप खुद ही समाज प्रयोजित जाति के ऊंच-नीच की घृणित समस्या से आज़ाद नहीं। और जब हम भंगी जाति वालों का सिर्फ इसलिये तिरस्कार करें कि वो भंगी है और हमारे चमार जाति से उनकी जाति नीची है फिर काका उन पण्डितों और ठाकुरों का भी कोई दोष नहीं जो हमें इसलिये तिरस्कार करते हैं कि हम चमार है इसलिये उनकी जाति के बराबर नहीं।”

“देखो कुणाल ये ठीक है कि हम शूद्रों का जन्म उपदेश सुनने के लिये होता है लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि हम तुम्हारा भी उपदेश सुने।”

“काका ये उपदेश नहीं बल्कि समय की मांग है।”

“समय की मांग! तुम्हें क्या लगता है कुणाल तुम कुछ भी कहोगे और हम मान लेंगे। हम गरीब हैं, चमार है. इसका मतलब ये नहीं कि हम अपनी लड़की किसी भंगी के घर ब्याह देंगे।”

“आपको एक भंगी से इसलिये दूरी बनाना चाहते हैं क्योंकि वो आपकी जाति की बराबरी नहीं करता। पर उसी भंगी जाति के लड़के विरेश ने ही कविता के साथ की जा रही ज्यादाती को रोकने की पहल की है।”

“वो बड़े लोग हैं अगर उन्होंने लड़की छुआ भी है तो कौन सा आसमान टूट पड़ा है। अब अगर हम उनके खिलाफ बोलेंगे तो वो और ज्यादा नाराज़ हो सकते हैं।”

“आप क्या कह रहे हैं काका? कविता आपकी बेटी है। उसका दैहिक और मानसिक शोषण हुआ है। मेरी नज़र में तो ये बात किसी पिता के लिये आसमान टूटने से भी ज्यादा बड़ी होनी चाहिये।”

“बस कुणाल अब इस मुद्दे पर और बात नहीं। कविता हमारी बेटी है हम उसे संभाल लेंगे। जरूरत तो ये है कि तुम अपने दोस्त को संभालो और उसे कहो वो कविता से दूर रहे।” ये कहकर बृज काका वहाँ से उठे और मुझे अकेला छोड़कर अपने क्वार्टर से बाहर चले गये।

बृज काका चले गये और मैं किंकर्तव्यविमूढ़ वहीं बैठा रहा। आँख मूंदी। कि तभी एक हल्की सी आवाज़ हुई और मेरी आँख खुल गई। कविता चाय के वो खाली कप उठा रही थी जिनमें मैंने और बृज काका ने चाय पी थी।

“अब भी नाराज़ हो?” कप उठाकर जाती हुई कविता से मैंने पूछा।

“नाराज़गी कैसी? और अगर आप से कभी नाराज़गी रही भी होगी तो अब उस नाराज़गी का कोई मतलब नहीं। अब हम अगर चाहे तो आपसे नाराज़ नहीं रह सकते।” यह कहकर कविता वहीं खड़ी हो गई। उसके हाथ में मेरे और बृज काका के चाय पिये हुए जूठे कप थे। कविता की बात सुनकर मुझे लगा कविता अचानक बहुत बड़ी हो गई है। बिल्कुल परिपक्व। शायद बीते दिनों के हालात ने उसे परिपक्व बना दिया होगा। इस वक्त मुझे कविता एक बहादुर लड़की लग रही थी। आखिर यौन शोषण का शिकार जिसे यौन शोषण करने वालों ने अबार्शन करने तक पर मजबूर किया हो। वो लड़की जिसने अभी दूसरे कमरे से अपने पिता की दकियानूसी कटुता भरी बातें सुनी हो। वो लड़की जो अपने अपराधियों को सजा दिलाना चाहती हो। वो लड़की यकीनन बहादुर होगी।

“कविता उस वक्त मेरे लिये तुम्हारी नाराज़गी जायज थी पर अब उसके लिये अपने मन में कोई बात न रखना। मैं जानता हूँ तुम एक बहादुर लड़की हो और मैं कोशिश करूँगा तुम्हारा सम्मान भंग करने वाले दण्डित हो सके।”

“जी मेरे लिये इतना ही बहुत है। मैंने आपसे कभी जो गलत बातें कहीं थी उनके लिये आपने मुझे माफ़ कर दिया। अब अगर हमारी शादी हुई तो मुझ पर ये बोझ नहीं रहेगा कि मैंने अपने पति को कटु शब्द कहे थे।”

“कविता ये क्या कह रही हो तुम?” कविता की बात सुनकर मैंने उठकर उसका हाथ पकड़कर थोड़े गुस्से से कहा, “कहीं तुम पागल तो नहीं हो गई हो! तुम अच्छी तरह जानती हो कि मैंने हमेशा तुम्हें एक बहन की नज़र से देखा है तो फिर तुमने ये सोच भी कैसे लिया कि हमारी शादी होगी और हम पति-पत्नी बनेंगे।”

मेरे द्वारा कविता का हाथ पकड़ने से उसके हाथ में पकड़े हुए कप कमरे की पक्की फर्श पर जा गिरे। चीनी-मिट्टी के बने कप फर्श से टकराते ही चटाक की आवाज़ के साथ टूट गये और उनके टुकड़े फर्श पर चारों तरफ बिखर गये। कविता झुक कर फर्श पर कप के टूटे हुए टुकड़े उठाते हुए बोली, “अब जबकि आप जानते हैं कि मैंने एक बार आपकी बात अपने मम्मी-पापा से छुपाया और उसकी इतनी बड़ी सजा मैं भुगत रही हूँ। अब मेरे अंदर इतनी भी ताकत नहीं है कि मैं पापा की बात का विरोध कर सकूँ। वो अगर कहेंगे तो आपसे ही शादी करूँगी।”

“कविता तुमने उस वक्त अपने मम्मी-पापा को अंधेरे में रखकर गलती की और अब उनकी बात मानकर गलती करोगी। धर्म इस बात की इजाज़त नहीं देता।” मैं भी फर्श पर बैठकर कप के टूटे हुए टुकड़े उठाने में उसकी मदद करते हुए बोला।

“और मेरा धर्म कहता है कि अब मैं अपने बड़ों की बात मानूँ।” फर्श पर बैठी हुई कविता ने नज़र उठाकर मेरी ओर देखते हुए कहा।

“कौन धर्म?” मैंने उसकी आँखों में झांका।

“हिन्दू, हिन्दू धर्म।” कहकर कविता मेरे हाथ से टूटे हुए टुकड़े लेकर उठी और बिना रुके किचेन की तरफ चली गई। मैं वही खड़ा रहा। पांच-सात मिनट मैं उसका इंतज़ार करता रहा पर जब वो वापस नहीं आई तो मैं किचेन में चला आया। कविता पीछे की ओर खुलने वाली खिड़की पर खड़ी सूनी आँखों से सूनी जगह को निहार रही थी।

“विभीषण, भरत, मीरा ये सब हिन्दू धर्म के ही थे कविता।” मेरी आवाज़ सुनकर उसने सिर घुमाकर मेरी ओर देखा। कुछ देर चुप रहकर मैंने आगे कहा, “कविता विभीषण ने अपने भाई की, भरत ने अपनी माँ की और मीरा ने अपने राजा की बात नहीं मानी थी। जानती हो क्यों?” कविता खामोश खड़ी रही। “इसलिये क्योंकि वे लोग गलत बातें मनवाना चाहते थे। अब फैसला तुम्हारे हाथ

में है कविता, कि तुम क्या निर्णय लेती हो। तुम जैसी कोई और यौन शोषण की लड़की शिकार न होने पाये या फिर वो कथित बड़े लोग अय्याशी करते रहे।”

“मैं जा रहा हूँ कविता। जो भी फैसला करना सोच के करना।” कहकर मैं वहाँ से चला आया और कविता वापस खिड़की पर खड़ी होकर बाहर के जानिब देखने लगी।

हम तीनों काफी देर तक किसी पुलिस ऑफिसर से मिलने का इंतजार करते रहे पर वो शायद कहीं व्यस्त थे। खैर काफी देर इंतजार के बाद भी जब हमारी इंस्पेक्टर से मुलाकात नहीं हो पाई तो विरेश ने एक कांस्टेबल से बात की तो उसने कहा कि इंस्पेक्टर साब आज बेहद व्यस्त है। अच्छा रहेगा आप अपनी शिकायत मुंशी के पास दर्ज करा दे। कांस्टेबल ने उंगली के इषारे से कहा, “जाओ वो मुंशी जी है वहाँ जाकर अपनी शिकायत दर्ज करा दो।” हालांकि इंस्पेक्टर साब अंदर ऑफिस में ही आराम फरमा रहे थे।

कविता ने जब कांपते होंठों से कहा, “उसके साथ हुई ज्यादती की मुख्य जिम्मेदार मिसेज रंजना हैं तो मुंशी ने अजीब नज़रों से हमें घूरकर कहा, “क्या बकते हो! मिसेज रंजना ने ये सब करवाया!! तुम्हारी अक्ल तो ठिकाने पर हैं या गर्धों के साथ चरने गई है।”

मुंशी की कड़क आवाज़ सुनकर कविता सहम गई। मैं मुंशी की बात का प्रतिवाद करता उससे पहले ही इंस्पेक्टर साब जो कहीं जाने के लिये अपने ऑफिस से निकला था ‘मिसेज रंजना’ का नाम सुनकर वहाँ आकर मुंशी से बोला, “धर्मपाल मिसेज रंजना .. और ये सब कौन है? इन्हें क्या दिक्कत है?”

उसकी बात सुनकर मुंशी धर्मपाल ने आँखें नीची करके सारी तफसील बयां कर दी। पूरा वाक्या सुनकर इंस्पेक्टर ने सरसरी निगाहों से हमें देखा। पहले कविता विरेश और फिर मुझ पर आकर उसकी निगाह ठहर गई। मुझे ध्यान से देखते हुए बोला, “अरे तुम तो वही दुष्ट हो जिसने मिसेज अंजली जैसी सम्भ्रांत महिला का जीवन बर्बाद किया है।”

“जीवन मिसेज अंजली का नहीं मेरा बर्बाद किया गया है ऑफिसर। मैं दष्टता से ऑफिसर की बात का प्रतिवाद किया।

“ओह. तो तुम ये कहना चाहते हो मिसेज अंजली जैसी सम्भ्रांत और रईस महिला ने तुम पर झूठे आरोप लगाये थे।”

“हाँ, यकीनना।”

“और तुम्हारी इस बात को मानने के पीछे की गवाही।”

“अदालत। जिसने मुझे निर्दोष ठहराया।” मेरी बात सुनकर इंस्पेक्टर अचकचा गया और फिर मेरे बगल झाँकते हुए वो कविता से मुखातिब होते हुए बोला, “देख लड़की तू सुन रही है ना। जब मिसेज अंजली सी रईस औरत की अदालत ने नहीं सुनी तो तेरी कैसे सुनेगी? मेरी बात मान, घर जा और अपने माँ-बाप से कह कि वो जल्द-जल्द से तेरे हाथ पीले कर दें।”

इंस्पेक्टर की बात सुनकर मैं कविता के पास आकर बोला, “सर आप उसकी कम्प्लेन दर्ज करके अपनी ड्यूटी कीजिये। और जिस लड़की का पूरा शरीर मानसिक और शारीरिक यातनाओं की वजह से पीला पड़ चुका हो उसके हाथ पीले करवाने की जगह उसे न्याय दिलवाने में सहायता कीजिये।” मेरी बात सुनकर इंस्पेक्टर ने एक मिनट मुझे धूर कर देखा और फिर अपने मातहतों से मुखातिब होते हुए बोला, “देखो मैं जरूरी काम से जा रहा हूँ। मैंने इन्हें समझाया है फिर भी अगर ये ना माने तो इन्हें उठाकर पुलिस थाने से बाहर फेंक देना।” कहकर इंस्पेक्टर जाते-जाते रुका और फिर बोला, “हाँ इस लड़की को फेंकवाने के लिये लेडीज़ कांस्टेबल का इंतजाम करना।”

डामर की बनी उखड़ी हुई सड़क पर बेदर्री से फेंके जाने से हमारे शरीर कई जगह से छिल-कट गये थे और उनमें से खून बहने लगा। कांस्टेबलों ने फेंकते वक्त हमें माँ और बहन की भद्दी-भद्दी गालियों से भी नवाज़ा था। यूँ तो हम मानसिक और शारीरिक पीड़ा से गुजर रहे थे। तो वहीं सड़क किनारे एक पेड़ की छाया में ज़मीन पर काफी देर बैठे सोचते रहे।

गश्त मारकर जब वो इंस्पेक्टर वापस आया तो हमें वहाँ देखकर उसने इशारे से ड्राइवर को जीप रोकने को कहा। इंस्पेक्टर की जीप देखकर मेरे मन में एक बार फिर से उम्मीद जगी कि शायद वो हम पर दया करके हमें पुलिस थाने में बुलाकर हमारी शिकायत दर्ज कर ले।

“तो तुम सब यहीं बैठे हो। गये नहीं अब तक?” वो इंस्पेक्टर जीप में बैठे-बैठे ही बोला।

“जी सर, आप हमारी बात एक बार ध्यान से सुन तो लीजिये।” मैं खड़े होते हुए बोला। जबकि विरेश और कविता बैठे रहे या शायद शारीरिक पीड़ा ने उन्हें उठने नहीं दिया था।

“अच्छा रूको! मैं अभी तुम्हें ध्यान-ज्ञान की शिक्षा देता हूँ बस एक मिनट रूको।” कहकर उस इंस्पेक्टर ने जीप में बैठे पुलिस वालों को इशारा किया और वे जीप से उतरकर अपने हाथ में पकड़े डण्डे हम पर बरसाने लगे। हम चीखने-चिल्लाने लगे थे। जब हमारी काफी पिटाई हो चुकी तो इंस्पेक्टर अपने मातहतों को रोकते हुए हमसे बोला, “उम्मीद है मैं अबकी बार जब पुलिस स्टेशन से बाहर निकलूंगा तो तुम सब मुझे यहाँ नहीं दिखाई पड़ोगे।”

उन कांस्टेबल ने न सिर्फ मेरी और विरेश की बेरहमी से पिटाई की थी बल्कि उन्होंने कविता को भी नहीं बख्शा था। शरीर पर पड़े पुलिसिया डण्डों की वजह से हमारे अन्दर के संघर्ष का बुलबुला फूट गया था। हम किसी तरह से बमुश्किल वहाँ से वापस आये थे। लौटने के बाद काफी देर तक हम तीनों विरेश के रूम पर बैठे रहे। पुलिस के डण्डों की पिटाई से हमारे शरीर में जगह-जगह सूजन आ गई थी। मैंने आलमारी से आयोडेक्स की सीसी उठाकर उसे अपने शरीर के उन हिस्सों पर लगाया जहाँ पुलिस की भरपूर पिटाई से सूजन आ गई थी। आयोडेक्स लगाने के बाद मैं रूम से बाहर जाते हुए बोला, “दूध लेकर आता हूँ और फिर चाय बनाकर पीते हुए सोचेंगे आगे क्या करना है।”

जब मैं दूध लेकर वापस आया तो जाने के वक्त मैं जैसे दरवाजा भिड़ाकर बन्द करके गया था वो वैसे ही बन्द था। दरवाजे को खोला तो वो खुल गया। कविता की सलवार दोनों पैरों की घुटनों के ऊपर थी और विरेश उसकी पिंडलियों और घुटनों पर अयोडेक्स मल रहा था। दरवाजा खुलने की आवाज़ से कविता और विरेश हड़बड़ा गये। कविता उठकर एक तरफ सिर झुकाकर खड़ी हो गई। मैंने उसके हाथ में दूध की थैली देते हुए इस अन्दाज़ में चाय बनाने को कहा, जैसे मैंने कुछ देखा ही नहीं। रात का अंधेरा गहरा हो इससे पहले कविता को उसके घर पहुँच जाना चाहिये। हम चाय पीते वक्त इसके अतिरिक्त कुछ भी सोच नहीं पाये थे।

मैं जानता था विरेश के मन में इच्छा होगी कि वो कविता को उसके घर तक छोड़ने जाये इस बहाने उसे, उसके साथ वक्त बिताने का अवसर मिलेगा। मैं ये भी जानता था कविता को भी अच्छा लगेगा जो विरेश उसे उसके घर तक छोड़ने जाये। पर मुझे डर था कहीं बृज काका कविता के साथ विरेश को देखकर कुछ उल्टा-सीधा न बोल दे। इसलिये मैं खुद कविता को उसके घर छोड़ने के लिये निकल गया।

रास्ते में कविता ने मुझे कहा, “अगर आने वाले दिनों में मुझे आपकी पत्नी बनाया गया तो क्या आप मुझे आज की घटना के बाद अपने दिल में स्थान दे पायेंगे?”

“कविता हमारे गाँव में एक पुरानी कहावत है, जिस राह जाना नहीं उसके कोस क्या गिनने।” फिर मैं इस कहावत का मतलब समझाते हुए बोला, “अब जबकि न तुम मुझसे शादी करना चाहती हो और न मैं तुमसे। तो फिर इस पर बातें क्या करना?”

“पर फिर भी डर लगता है। ये हिन्दुस्तान है और मैं एक हिन्दुस्तानी लड़की हूँ अगर पापा ने आखिरी फैसला आपके साथ शादी के लिये ले लिया तो मैं मना नहीं कर पाऊँगी। और फिर आप सारी उम्र ये सोच कर कूढ़ते रहेंगे कि आपकी बीवी के अंगों को कभी किसी गैर मर्द ने छुआ था।”

“क्या आज की घटना के बाद तुम किसी और को अपने दिल में जगह दे पाओगी, जबकि किसी लड़के ने तुम्हारे अंग को छुआ है।” कविता की बात सुनकर मैंने उससे सवाल किया।

“नहीं पर फिर भी .।” कहकर कविता ने मेरी ओर देखा तो मैं झुंझलाकर बोला, “तो फिर मैं साफ मना कर दूँगा कि मैं तुमसे शादी नहीं कर सकता क्योंकि मैं किसी भी कीमत पर लवी से फरेब नहीं कर सकता।”

मेरी बात सुनकर कविता खामोश हो गई थी। वो शायद मेरे अंतर्मन को टटोल रही थी कि कहीं मैं परिस्थितिवश उससे शादी के लिए हाँ न कर दूँ। और इस बात ने शायद उसे मुतमुईन कर दिया था। फिर वो अपने घर पहुँचने तक कुछ न बोली, एकदम खामोश रही। मैंने अन्दाज़ा लगाया, शायद वो विरेश के ख्यालों में होगी।

कविता को उसके घर छोड़कर मैं तुरन्त वहाँ से वापस निकला। बिना पानी और चाय पिये। कैम्पस के मुख्य द्वार पर मुझे संजू मिल गई। मैंने उससे बच कर निकलने की कोशिश की पर उसने आगे बढ़ कर मेरा हाथ पकड़कर बोली, “क्या बात है कुणाल आजकल बिल्कुल दिखाई नहीं देते?”

“संजू बीते दिनों ने मुझे एक बात अच्छे से सिखा दिया है।” मैंने ताकत लगाकर अपना हाथ उसके हाथ से छुड़ाते हुए बोला।

“क्या?” वो अपने स्तनों पर दोनों हाथ बांध कर होंठ गोल करते हुए बोली।

“यही कि बड़े लोगों की न दोस्ती अच्छी है न दुश्मनी।”

“ओए तो आप फिलास्फूर बन चुके हैं।” संजू ने कहा।

“वक्त और तुम जैसे लोगों ने बना दिया।” मैंने कहा।

“मेरे पापा आपके जिले में प्रमोट होकर जिला अधिकारी बन चुके हैं।” संजू ने कहा और फिर मेरी बात सुने बिना ही बोली, “मिसेज रंजना चाहती है तुम कविता के मामले में चुप रहो।”

“ओह तो ये आप धमकी दे रही हैं।” मैंने संजू की आँखों में झांका।

“नहीं सलाह है।” वो बोली।

“मुझे इसकी जरूरत नहीं।” मैंने कहा।

“तुम्हें नहीं लवी को हो सकती है।” जैसे ही संजू की बात पूरी हुई मेरा हाथ हवा में लहराया और ‘चटाक’ की आवाज़ के साथ संजू के गाल से टकराया। मेरे हाथ के प्रहार से संजू लड़खड़ाई पर लड़खड़ा कर गिरती उससे पहले ही उसे किसी ने संभाल लिया। मैंने देखा वो बंटी थी। उसने मेरी ओर जलती निगाहों से देखा।

“तुमने संजू पर हाथ उठाया जबकि यही संजू ने तुम्हें इस शहर में रहने लायक बनाया।” बंटी ने उसी तरह मुझे धूरते हुए बोली।

“और इसी संजू ने कविता को कहीं भी रहने लायक नहीं छोड़ा।” मैंने भी बंटी की जलती आँखों का जवाब जलती आँखों से दिया।

“तुम मिसेज रंजना के रसूख को नहीं जानते। उनसे हम बगावत नहीं कर सकते फिर तुम्हारी क्या हैसियत है।” संजू अब संभल चुकी थी। वो बंटी से बोली, “चल बंटी मैं इसे समझाना चाहती थी और इसे बचाना चाहती थी क्योंकि इसके लिये मेरे मन में कुछ है। पर ये इस लायक नहीं . अब ये भुगतेगा।” कहकर संजू वहाँ से चली गई, उसके साथ बंटी भी। जबकि मैं वहीं खड़ा रहा, आने वाले तूफान का अंदाजा लगाते हुए।

वकील सफदर हयात ने मुंशी के सामने बैठकर कविता की शिकायत दर्ज करवाई। कल संजू और बंटी के तेवर देखकर मुझे अंदाजा था कि कुछ न कुछ मिसेज रंजना जरूर करेंगी जिससे पुलिस स्टेशन में उनके खिलाफ FIR दर्ज न हो पाये। जब मिसेज रंजना के खिलाफ FIR रजिस्टर्ड हो गई तो मैं थोड़ा सुकून में था। पर मैं मन ही मन आने वाले तूफान का इंतजार कर रहा था। और इस तूफान का हल्का सा झटका मैंने तब महसूस किया जब कविता को बप्पू काका ने

थप्पड़ मारते हुए कहा, “कलमुहीं पहले मुँह काला करती रही और अब उसका ढिंढोरा पीट रही है।” फिर मेरी ओर तिरछी निगाहों से देखकर बोले, “पहले ही लोग तुझसे शादी से इंकार कर रहे हैं तो फिर अब कोई कैसे तैयार होगा।” कविता रोते हुए अंदर भाग गई थी। और मैं सिर झुकाये उनके घर से चला आया। बप्पू काका को बिना कुछ समझाये।

मैं जानता था इस समय बृज काका मेरी बात सुनेंगे ही नहीं। वो रात बड़ी बेचैनी में गुजरी थी। बार-बार मेरी नींद टूट जाती। और ज्यों ही करवट बदलकर मेरी आँख लगती। बुरे ख्वाब किसी भूत प्रेत की तरह मुझ पर टूट पड़ते। मैंने महसूस किया, आज की रात अब तक की मेरे पूरे जीवन की सबसे बड़ी रात थी। रात के बाद की सुबह भी मुझे गंदली सी लगी। दिल की धड़कनें बेतरतीब और बैठती हुई महसूस हो रही थी। शिराओं में बहता लहू का वेग पहाड़ों के झरने से गिरते पानी के वेग सा बह रहा था। टांगें कांपकर शरीर का बोझ उठा पाने से इंकार कर रही थी। कॉलेज जाने से पहले विरेश ने शायद मेरी अस्थिरता महसूस की होगी इसलिये उसने कहा, “कुणाल अगर दिल घबराये तो लुबना के घर चले जाना। अकेले रहोगे तो तमाम बातें सोचकर घबराओगे।”

विरेश की बात सुनकर मैंने सिर्फ यूँ ही मुस्करा दिया। होंठों पर लाई गई जबरन मुस्कान की तरह।

विरेश कंधे पर बैग टांगकर कॉलेज चला गया और मैं अपने असंयत मन को संयत करने की गरज से यूँ सड़कों पर बेमकसद टहलने निकल गया। बेध्यानी में टहलते-टहलते मैंने ये महसूस किया कि कोई मेरे साथ टहल रहा है। मुड़कर देखा तो पाया मेरे साथ चलने पाँव मिसेज अंजली के हैं।

जैसे ही मैंने उन्हें देखा उन्होंने सवाल किया, “मैं तो तुम्हें पाने के लिये रुसवा हुई थी पर जो तुम कविता को यूँ रुसवा कर रहे हो तो उसका सबब?”

“मिसेज अंजली हम गरीब लोग कुछ काम यूँ बेसबब भी किया करते हैं।”

“अच्छी बात है कुणाल तुम्हारी इसी अदा की तो मैं मुरीद हूँ। तुमने जो आनन्द मुझे दिया है वो भुलाये नहीं भूलता। और सच कहूँ तो मैं हर रात तुम्हारी कमी महसूस करती हूँ और जो तुम मेरी ये कमी पूरी करने का वादा करो तो मैं तुम्हारे काम आ सकती हूँ।” यह कहकर मिसेज अंजली ने सरे राह मेरा हाथ पकड़ लिया।

उन्होंने ज्यों ही मेरा हाथ पकड़ा मुझे लगा जैसे बिच्छु ने मेरे हाथ में डंक मार दिया हो। मैंने उनका हाथ उसी तरह ही झटक दिया जैसे कोई गलती से हाथ पर चढ़े बिच्छू को झटक देता है। मेरे द्वारा हाथ झटके जाने के बाद भी वो मुस्करा रही थी। उनकी ये मुस्कान मुझे ज़हरीली लग रही थी। उनका ये ज़हर मेरे शरीर में उतर पाता उससे पहले ही मैं उनसे पीछा छुड़ाकर वहाँ से चले जाना चाहता था। मेरा काम मिसेज अंजली ने खुद आसान कर दिया। अपने दोनों हाथों को मोड़ कर अपने सीने पर रखते हुए वो बोली, “अभी तुम अपसेट दिख रहे हो कुणाल। बाद में मिलते हैं।” और वो खुद वहाँ से जाने लगी पर कुछ कदम दूर जाने के बाद वो पलट कर बोली, “बट हनी! मुझे तेरे एक सिप की सख्त जरूरत महसूस हो रही है और खुदा की कहता है प्यासे को पानी पिला देना चाहिये।” कहकर उन्होंने होंठों पर तिरछी हँसी लाकर अपनी बांयी आँख दबाई और फिर कुछ दूर खड़ी अपनी कार की ओर बढ़ गई।

मिसेज अंजली की इस अचानक मुलाकात ने मुझे और अधिक परेशान कर दिया। मैं थका हारा विरेश के रूम पर लौट आया। मैं अब भी उसका रूम शेयर कर रहा था। रूम बाहर से लॉक था और दरवाजे के पास एक युवक सिर झुकाये बैठा था। उससे बचकर मैंने जेब से चाभी निकालकर लॉक खोलने लगा। आवाज़ की आहट से उस युवक ने सिर ऊपर उठाया था। उसके चेहरे पर बदहवासी थी। मुझे देखकर वो खड़ा हुआ और मेरे होंठों से निकला, “रक्ष तुम यहाँ अचानक! क्या किसी काम से लखनऊ आना हुआ है?”

रक्ष चारपाई पर बैठा टूटते शब्दों के साथ अपनी बात कह रहा था मैं उसका हर शब्द सुनने के बाद टूट कर बिखर रहा था। मेरी बहन मधु का गाँव में सामूहिक बलात्कार किया गया था। बलात्कार के बाद उसके कपड़े तक उसे नहीं दिये गये थे। गाँव और आस-पास के दबंगों ने दोपहर को मधु का बलात्कार तब किया जब वो पास के किसी गाँव से अपनी किसी सहेली से मिलकर आ रही थी। जिस अरहर के खेत में तीन लोगों ने उसका बलात्कार किया वो उसी खेत में रात का अंधेरा होने तक रोती-कलपती रही। मेरे दादा ने भी उसकी खोज खबर ये सोचकर नहीं ली कि शायद उसे अपनी सहेली के घर से लौटने में देर हो गई होगी। रात होने पर मधु अपने हाथों से अपने शरीर को ढकने की नाकाम कोशिश करते हुए नोचे गये शरीर से उबलते दर्द के साथ घर पहुँची। उसे इस हाल में देखकर दादा तो काठ के हो गये और अम्मा पछाड़ खाकर बेहोश हो गई। रक्ष उस वक्त किसी काम से मेरे घर गया हुआ था। उसने मेरे अम्मा-दादा को और मधु

को संभाला। दादा और अम्मा ने रक्ष से विनती की थी कि वो मधु के साथ हुए हादसे का कहीं जिक्र न करे। इस घटना के बाद मधु घर के एक कोठरी में दुबक गई। रक्ष ने अम्मा-दादा की बात मानकर इस घटना का जिक्र गाँव में तो किसी से नहीं किया पर मुझ तक ये खबर पहुँचाना उन्होंने अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझी। मेरी बहन ने जो मानसिक और शारीरिक पीड़ा झेली होगी उसके बारे में सोचते ही मेरा रोम-रोम लरज उठा और आँसू-आँख का साथ छोड़कर बह चले। मेरी आँखों से आँसू और गले से हिचकियाँ फूट रही थी। मैं घुटने मोड़ कर फर्ष पर सिर झुकाये अपने बहते आँसुओं के साथ मधु की मानसिक पीड़ा का अनुमान भर लगा पा रहा था। जब मैं शहर पढ़ने के लिये आया था तो आते वक्त मधु ने कैसे मेरे सामने किसी गुड़िया की तरह मचलते हुए कहा था कि “भैया मैं जानती हूँ आप शहर जाकर पढ़ लिखकर एक दिन बहुत बड़े आदमी जरूर बनेंगे। इतने बड़े कि अपने जवार के ठाकुर, ब्राह्मण की लड़कियाँ तक हमारी भाभी बनने की चाहत करेंगी।”

ब्राह्मण, ठाकुर की लड़कियाँ मधु की भाभी तो नहीं बनी पर वो उसके भाई की जिंदगी में ऐसे आई कि उसकी जिंदगी को बहुत बेरहमी से कुचल दिया। हाँ यकीनन मधु मुझसे बदला लेने के लिये कुचली गई थी। मिसेज रंजना बेहद रसूख वाली और अधिकतर पर्दे के पीछे रहने वाली औरत थी। उन्होंने ही ये अमानवीय कृत्य मेरी बहन के साथ करवाया होगा। मधु को असल में मेरे पापों की सजा मिली थी।

“मधु . !” मैं दहशत में कमरे की छत की ओर गला फाड़ के चिल्लाया था। इतना तेज कि कमरे की छत और दीवारें झनझना उठी और रक्ष जो चारपाई पर बैठा था वो फर्श की ओर झुककर मुझे अपनी बाहों में लेते हुए बोला, “कुणाल संभालो अपने आप को। जो तुम बिखर गये तो सब बिखर जायेगा।”

“अब बिखरने को बाकी क्या रह गया है रक्ष! सब कुछ तो बिखर गया है। पहले कविता और अब मधु को मेरे कर्मों की सजा मिली है।” मेरे गले से हिचकियाँ बदस्तूर उबल रही थी।

“कौन से कर्म और कौन से कर्मों की सजा मैं कुछ समझ नहीं रहा हूँ कुणाल।”

रक्ष जो कि मेरे बीते दिनों के बारे में नहीं जानता था। मैं संयत होकर उसे अपने गुजरे दिनों के बारे में बता पाता उससे पहले ही मुझे किसी की आवाज़

सुनाई दी। “कुणाल आप कब तक अपने कर्मों की झूठी दुहाई देकर जुल्मों को अपने कर्मों की सजा मानकर कबूल करते रहेंगे।”

मैंने सिर उठाकर देखा तो वह लवी थी। मैं कातर स्वर में बोला, “तो लवी तुम्हीं कहो मैं क्या करूँ! मैं कैसे अपनी बहन मधु के साथ हुई ज्यादाती का प्रतिकार करूँ”

“कुणाल अब संधियों को तोड़ने का वक्त आ गया है।” लवी अपनी उंगलियों से मेरे सिर के बाल सहलाते हुए बोली।

“कौन सी संधि? कैसी संधि?” मैंने लवी की आँखों में झांका।

“वही जो तुम्हारे पुरखों ने की थी जिसके तहत उन्होंने माना था कि वो कभी अपने हक के लिये आवाज़ नहीं उठायेँगे। कभी खुद को बाकी लोगों के बराबर नहीं समझेंगे। अपनी बहू-बेटियाँ यौन सुख के लिये बिना किसी मलाल के अर्पित करते रहेंगे। कुणाल अब वो सारी संधि तुम्हें तोड़नी है. बोलो कर सकोगे।”

मैंने लवी की आँखों में झांका और फिर उसकी कलाई अपने हाथों से पकड़ कर अपने सीने पर उसका हाथ रखते हुए बोला, “लवी मेरे इस सीने में हमेशा तुम धड़कती हो। किसी देवी की तरह मैं तुम्हारी इबादत करता हूँ। मैं वादा करता हूँ लवी। मैं अब वो सारी संधियाँ तोड़ दूँगा जो जबरन हम पर थोपी गई थी। जो बेवजह हम पर लाद दी गई। वो संधियाँ जिनकी वजह से हमारा जीवन नर्क से बदतर हो गया। वो संधियाँ जिनसे हमारी बहू-बेटियों की इज्जत लूटना जायज बन गया। वो संधियाँ जिन्होंने हम से दो वक्त की रोटी और बदन से कपड़े छीन लिये। वो संधियाँ जिन्होंने जबरन हमें दलित बना दिया।” कहते हुए मैं उठकर खड़ा हो गया। साथ में लवी और रक्ष भी।

मैंने दोनों हाथ कमरे की छत की तरफ उठाये और एक नारा मेरे होंठों ने बुलन्द किया, “ये संधियों के टूटने का समय है।”

प्रतिकार के बदले प्रतिकार

रक्ष के साथ मैं गाँव आ गया था। मेरे साथ विरेष और लवी भी आना चाहते थे। लवी और विरेष दोनों को मैंने यह कहकर अपने साथ आने से मना कर दिया था कि अगर वो दोनों मेरे साथ गाँव गये तो यहाँ शायद मिसेज रंजना

कविता और बृज काका पर अपने प्रभाव से दबाव डलवाकर उनके खिलाफ दर्ज हुई FIR को वापस करवा सकती है या किसी अन्य तरीके से अपने खिलाफ दर्ज शिकायत खत्म करवा सकती है या फिर कविता का कोई अहित करवा सकती है। कुछ भी हो कविता को मैंने अपनी बहन की नज़र से हमेशा देखा था। उसे मैं किसी भी कीमत पर न्याय दिलवाना चाहता था। अब जबकि लवी और विरेश शहर में थे तो उनकी ओर से मैं बेफिक्र हो गया। गाँव पहुँचने तक मैं सारे रास्ते उदासियों में घिरा मधु के बारे में सोचता रहा। सोचता रहा कि मैं किस मुँह से अपनी बहन को दिलासा दे पाऊँगा। किस तरह मैं उसके साथ हुए धिनौने काम से उसकी बिखरी देह और टूटे दिल को सम्भाल पाऊँगा। किस तरह मैं अपने अम्मा और दादा से नज़रें मिला पाऊँगा। जबकि उनकी नज़रें मुझसे सवाल करेंगी, “देखो कुणाल तुमने जो बीज षहर में बोये हैं उनकी कितनी भयावह फसल हम काट रहे हैं।”

मेरी इन उदास भरी सोच का दायरा इतना तंग था कि कब बस का सफ़र खत्म हुआ, कब चौराहे से गाँव तक एक मील की खड़ंजे की सड़क खत्म हुई और कब मैं गाँव की गलियों से गुज़रकर अपने घर पहुँचा। मुझे पता ही नहीं चला। रास्ते में रक्ष मुझसे तब जुदा हो गया जब उसे देख कर एक दस-बारह साल के लड़के ने कहा, “रक्ष भैया तुम कहाँ घूम रहे हो! जल्दी से अपने घर जाओ तुम्हारी सारी बकरियाँ मरी जा रही है।”

उस लड़के की बात सुनकर रक्ष अपने घर की ओर भागा और वो लड़का भी उसके पीछे भागा था। मैंने दोनों को भागते हुए देखा। उस लड़के के शरीर पर एक निकर के सिवा कुछ नहीं था और वो निकर एक नारे के सहारे उसकी कमर पर बंधी थी। उसका खुला शरीर सूर्य की विटामिन डी से तपकर इस उमर में ही काला पड़ चुका था। और उसकी टांगे अपने बेहद कमजोर शरीर का वजन उठाने लायक भी नहीं थी। वास्तव में उन संधियों के कितने प्रतिकूल प्रभाव हम भोगते आ रहे थे जो समाज के प्रबल वर्ग ने जबरन हम पर लादी थी। लवी ने सच ही कहा था कि जब तक ये संधियाँ नहीं तोड़ी जाती तब तक दलित, शोषित मजलूमों के साथ दबंग अमीरों की कहानियाँ परवान चढ़ती रहेंगी।

अब मुझे न सिर्फ लवी से जो कि मेरी प्रेयसी थी उससे किया वादा पूरा करना था। अब न सिर्फ मुझे अपनी बहन मधु और कविता को न्याय दिलाना था। बल्कि मुझे उस दलित शब्द का प्रतिकार करना था जो हमारे भीतर हीन भावना भरता है।

घर के कच्चे आँगन में मुझे देखकर अम्मा चौंक कर बोली, “अरे बउवा, यूँ अचानक कैसे आ गये! क्या तुम्हारे साथ फिर कुछ तो नहीं हुआ शहर में?”

“न अम्मा मुझे कुछ नहीं हुआ पर मैं ठीक नहीं हूँ।” मैंने अम्मा के पैर छूकर घर में इधर-उधर देखकर मधु को तलाश किया।

“क्या हुआ तुझे?” कहकर अम्मा ने एक पल में मेरे पूरे शरीर को अपने हाथों से टटोल डाला।

“मैं मानता हूँ अम्मा मुझसे गलतियाँ हुई हैं पर इसका मतलब ये नहीं कि आप घर में हुए हादसे की खबर भी मुझे न दे।” अपना सिर सहला रहे अम्मा के हाथों को मैंने अपने हाथों में लेकर गाल पर रख लिया।

अम्मा मेरी बात सुनकर हड़बड़ाकर अपने हाथ छुड़ाती हुई बोली, “हादसा! कैसा हादसा? क्या अंट-षंट बोल रहे हो बउवा। चलो हाथ-मुँह धो ले, शहर से आये हो थक गये होंगे। आराम करो मैं कलेवा बनाती हूँ।”

“आप मेरे साथ बैठी अम्मा, कलेवा मधु बना देगी। कहाँ है वो दिखाई नहीं दे रही है?”

“अरे वो थोड़ी बीमार है, आराम कर रही है कोठरी में।” कहते हुए अम्मा की आँखों में आँसू छलक आये जो मेरी आँखों से छुप न सके।

मैं वीरान पड़ी उस कोठरी में चला आया। बिल्कुल अंधेरी कोठरी। इस कोठरी में दिन के वक्त भी अंधेरा ही रहता है। नीम अंधेरा। मैंने देखा बान की बुनी छोटी सी खटिया पर कथरी बिछी थी। कपड़ों को लपेट कर बनाई गई तकिया पर सिर रखे मधु लेटी थी। आँखें बन्द किये हुए, निस्तेज चेहरा। दो मिनट तक मैं अपनी बहन के कुम्हलाये चेहरे से उसके दर्द की ताप लेता रहा और फिर अस्थिरता से खटिया पर बैठ गया। बैठते वक्त मैंने कोशिश की थी कि आवाज़ या आहट न हो जिससे सो रही मधु की नींद टूटे। पर मेरी कोशिश के बाद भी बांस की बनी खटिया ने चर्र से आवाज़ की और इस आवाज़ ने मधु की आँखें खोल दी। सामने मुझे देखकर भी वो वैसे ही पड़ी रही। अपलक और निस्तेज। नहीं तो अब तक ऐसा कोई दौर नहीं गुजरा था जब मेरी प्यारी बहन ने मुझे सामने देखा हो और स्नेह से वो मेरे गले न झूल गई हो। कुछ लम्हें मुझे अपनी पीली पड़ चुकी आँखों से देखने के बाद वह बोली, “भैया यूँ अचानक आ गये?”

मैंने महसूस किया कि उसकी आवाज़ दरक रही थी और वो अब भी अपना दर्द अपने भीतर जब्त करने की कोशिश कर रही थी।

“देख मधु मैं तेरा भाई हूँ, तुझसे बड़ा। तू मुझसे सच कहना।” मैं अपने हाथ से मधु को सहलाते हुए बोला। मेरी इस बात पर मधु ने आँखें बन्द कर ली। मैंने उससे कहा, “मधु देख अब जो तुम चुप रही तो ये उस अन्याय का समर्थन करना होगा जो सदियों से होता आ रहा है और जो हमने इसका पुरजोर विरोध नहीं किया तो यही अन्याय सदियों तक आगे भी होता रहेगा।”

मैं लगातार उसका माथा और सिर सहला रहा था। मेरे हाँसले से उसने अपनी आँखें धीरे-धीरे खोलकर कहना शुरू किया।

“वो भैया .।” मधु अभी इतना ही कह पाई थी कि पीछे से आई अम्मा की आवाज़ सुनकर वो चुप हो गई। अम्मा कह रही थी “अरे कुणाल कुछ नहीं हुआ है उसे बस बुखार और पीलिया हुआ। दवा मंगा दी है जल्द ही ठीक हो जायेगी। तू थका होगा, चल नहाकर रोटी खा ले। इससे आराम से बातें करना।” अम्मा की बात सुनकर मैंने कहा, “आप रोटी ले आव, मैं यही खा लूंगा और साथ ही अपनी बहन से बात भी करता रहूंगा।”

उस वक्त दादा भी घर आ चुके थे। मुझे डांटते हुए बोले, “चार दिन शहर में क्या रहा। ये भी भूल गया कि बाहर से आने के बाद नहा कर रोटी खाई जाती है।” दादा की बात सुनकर मैं चुप हो गया और मधु मेरा हाथ पकड़ते हुए बोली, “भैया आप नहा धोकर रोटी खा लीजिये।”

मधु की बात सुनकर मैंने उसे मुस्कराकर देखते हुए ‘हाँ’ में सिर हिलाया और उठकर खूँटी पर टंगे अंगोछा और आंगन में रखा लोटा-बाल्टी लेकर घर के बाहर के कुएं पर नहाने चला गया। बाल्टी और लोटा एक तरफ रखकर मैं आंगन में बंधी अलगनी पर गीला अंगोछा और अण्डरवियर सूखने के लिये फैला रहा था। तभी घर के दरवाजे के ठीक सामने एक गाड़ी आकर रूकी। सफेद रंग की टाटा सफारी। दरवाजे में लक-दक गाड़ी देखकर दादा जिन्होंने अभी रोटी का पहला कौर तोड़ा ही था, उठकर दरवाजे पर पहुँच गये। गाड़ी के विन्डो खुलने की आवाज़ आई और तभी दादा, “अरे मालिक आप यहाँ?” कहकर घर से बाहर निकल गये।

गाड़ी से हमारे घर कौन आया है? ये जानने की उत्सुकता लिये मैं भी दरवाजे पर आ गया। मैंने देखा उस वक्त दादा विधायक बिन्दर लाल और विधायक पाण्डे के पैर छू रहे थे।

“कैसे हो नोखे लाला?” कहकर विधायक बिन्दर लाल ‘ही-ही’ करके हँस पड़ा। उनके साथ विधायक पाण्डे परमानन्द भी हँसे। पान खाते रहने से उनके

लाल-पीले दांत हँसते समय देखकर मुझे लगा जैसे वो हमारी बेबसी पर अट्टाहस कर रहे हो। तभी सफारी के पीछे की ओर से एक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति उतरा। उसके हाथ में दो नली वाली बन्दूक थी। ड्राइवर के बगल से भी एक व्यक्ति ऐसा ही उतरा। उसके हाथ में एक आटोमैटिक गन थी। वे दोनों विधायकों के पीछे खड़े हो गये। अंगरक्षकों की तरह। जबकि ड्राइवर उतरकर गाड़ी के कांच पर धूल हटाने लगा।

“माई बाप आप हमें ही बुला लेते।” कहकर दादा एक तरफ झुक कर खड़े हो गये। विधायक परमानन्द ने एक नज़र हम पर डालकर दादा से कहा, “अरे नोखे तुम्हारे साहबजादे भी यहीं हैं। बड़ा नाम कर रहे हैं ये आजकल।”

परमानन्द की बात सुनकर दादा चुप रहे। मैं कुछ कहना चाहता था पर अपनी ओर उठी दादा की तिरछी आँखें देखकर चुप रह गया।

“देखो नोखे तुम हमारे आदमी हो इसलिए समझा रहे हैं। अपने लौंडे को समझा दो कि शहर वाली समाज सेवा यहाँ न दोहराने लगे। बस हम इतना ही कहने आये थे। बाकी तुम समझदार हो नोखे। अब हम जाते हैं।” कहकर विधायक बिन्दर लाल टाटा सफारी के बीच वाली सीट पर बैठ गये और मुँह में चबा रहे पान को थूक कर विधायक परमानन्द भी उनके बगल में बैठ गये। वे दोनों हृष्ट-पुष्ट आदमी और यहाँ तक ड्राइवर ने भी मुझे खा जाने वाली नज़रों से देखकर गाड़ी में बैठ गये।

गाड़ी हमारे चेहरों पर धूल फेंकते हुए जा चुकी थी। टाटा सफारी के जाने के बाद मैंने दादा को देखा तो मुझे लगा मानों दादा अचानक ही कि किसी बेहद गम्भीर बीमारी का शिकार हो गये हैं। थके कदमों से दादा घर के भीतर आये और उनके पीछे-पीछे मैं भी।

“वैसे तुमने शहर में हमारी नाक कटवाई है कुणाल। फिर भी मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम आज ही शहर चले जाओ।” कहकर दादा ने अपनी रोटी की थाली उठाकर अम्मा की ओर बढ़ाई।

“का हुआ एक रोटी तो खा लेते।” अम्मा ने कहा।

“नहीं, बाद में खा लूंगा। अभी तुम कुणाल से कहो कि वो तुरंत शहर चला जाये।” दादा की बात सुनकर मैंने कहा, “अब जबकि मधु के साथ इतना कुछ हुआ हो, तो मैं शहर कैसे जा सकता हूँ?”

“क्या हुआ है मधु को! कुछ नहीं हुआ है उसे।” दादा दहाड़ते हुए बोले।

दादा की दहाड़ सुनकर मैं प्रतिवाद के लिये थोड़ा आगे बढ़ा तो अम्मा बीच में आकर बोली, “कुणाल तेरे दादा सही कह रहे हैं. तू शहर वापस चला जा।”

“न अम्मा, अब भैया तब शहर जायेंगे, जब मैंने साथ हुए जुल्म की रिपोर्ट पुलिस थाने में लिख जायेगी।” मेरे साथ-साथ अम्मा और दादा ने भी कोठरी के दरवाजे पर देखा तो वहाँ मधु दिखाई दी। कमजोरी की वजह से वह किवाड़े का सहारा लिये हुए खड़ी थी। मुझे देखकर वो आगे बोली, “हाँ, भैया मुझे बहुत बेरहमी से कुचला गया है और पिछले एक साल से मुझे लगातार कुचला जा रहा है।” कहकर मधु कमजोरी की वजह से गिरने लगी। मैंने भागकर उसे सम्हाल लिया।

मधु की बात सुनकर अम्मा-दादा सिर पकड़ कर धम्म से जमीन पर बैठ गये। जब मैं कविता के साथ हुए यौन शोषण की FIR दर्ज कराने की कोषिष कर रहा था तब मैं बेहद कटु अनुभव से गुजरा था। जब तक वकील मलिक हयात जैसे बड़े वकील पुलिस थाने में नहीं गये कविता की FIR दर्ज नहीं हो पाई थी। मेरा अनुभव कह रहा था, जो मैं मधु को लेकर यूँ ही बिना किसी बड़ी हस्ती के बैंकअप के पुलिस थाने गया तो वहाँ हमारी सुनी नहीं जायेगी। पर मुझे देश के कानून और संविधान में पूरा यकीन था। तो भी जिस तरह से महकमा बड़े लोगों की कठपुतली बना हुआ है, मेरे दिल में लगातार शंका पैदा कर रहा था। यहाँ गाँव या उसके आस-पास ऐसा कोई बड़ा नाम मुझे नज़र नहीं आ रहा था जो हमारी मदद करता। विधायक बिन्दर लाल और विधायक परमानन्द पाण्डे का प्रतिकार करने का साहस यहाँ पर किसी में न था। और अब जबकि वो खुद विधायक परमानन्द पाण्डे के साथ आकर मेरे दादा और मुझे खुली धमकी दे गये तो किसी अन्य से पैरवी की उम्मीद करना बेमानी था। वैसे बिन्दर लाल भी हमारी तरह दलित थे, चमार थे। हर बार चुनाव के वक्त वो इस बिना पर हमसे वोट मांगते थे कि वो हमारे हक के लिये आवाज़ बुलन्द करेंगे। मगर आज उन्हीं से हमें रूसवा होना पड़ रहा है। फिर भी मैं न जाने क्यों उन्हीं से मदद की उम्मीद लिये उनके पास, गाँव में बनी एक विशाल कोठी में उनसे मिलने पहुँच गया। हालांकि उन्होंने मुझे भगाया नहीं और अपने विशेष कमरे में ही बुला लिया। मैं भौचक्का होकर उनके उस लक-दक करते कमरे में एक तरफ खड़ा हो गया। मैंने देखा, सोफे पर पसरे विधायक बिन्दर लाल कांच के गिलास से शराब के घूंट भर रहे थे। मुझे एक तरफ खड़ा देखकर वह बोले, “कहो कुणाल, अब किसलिए आये हो यहाँ?”

“चाचा आपसे एक मदद चाहिये थी।” मैं उन्हें चाचा ही कहता था। बचपन में जब कभी दादा के साथ उनकी कोठी में जाता तो दादा मुझे बार-बार ये कहकर सावधान करते रहते कि ‘अरे कुणालवा वो फूल मत तोड़ वो चाचा का सबसे प्यारा फूल है.’, ‘अरे कुणालवा वो कुर्सी के पास से हट जा उस पर चाचा बैठते हैं.’

“कैसी मदद?” विधायक बिन्दर लाल वैसे ही गिलास से शराब के घूंट भरते रहे।

“चाचा कुछ लोगों ने मधु के साथ बलात्कार किया है। उनके विरुद्ध FIR दर्ज करवाना चाहते हैं।”

मेरी बात सुनकर विधायक बिन्दर लाल जो अभी घूंट भरने के लिये गिलास हॉट तक लेकर गये थे। बिना शराब का घूंट भरे ही गिलास टेबल पर रख दिया और खड़े होकर पीछे की ओर कमर पर हाथ बांधकर मुझसे बोले, “कुणाल तुम शहर में रहकर क्या इतने बेर्शम हो गये हो कि तुम्हें अपनी बहन इज्जत सरेआम निलाम करने में थोड़ा भी संकोच नहीं हो रहा है।”

“चाचा इसमें शर्म या संकोच कैसा। मेरी बहन के साथ जुल्म हुआ है और जुल्म करने वालों को मैं सजा दिलाना चाहता हूँ।”

“और ये जुल्म किसने किया है, जानते हो?”

“नहीं जानता।”

“फिर किसके खिलाफ़ FIR करोगे?”

“अज्ञात लोगों के खिलाफ़। पुलिस कोशिश करेगी तो उन तक पहुँचना कठिन नहीं होगा।”

मेज पर रखा गिलास उठाकर उससे वापस शराब के घूंट भरते हुए विधायक बिन्दर लाल बोले, “तुम कठिन काम की बात करते हो जबकि तुम खुद जानते हो तुम्हारी बहन के साथ जो हुआ उसकी शिकायत पुलिस में दर्ज कराना भी तुम्हारे लिये कठिन काम है। मेरी बात मानो जो मधु के साथ हुआ उसे भूल कर कुछ काम-धाम करो। ये सब छोटी बात है। होती रहती है, होती रहेगी।”

“छोटी बात।” मैं कुछ कदम आगे बढ़कर विधायक बिन्दर लाल के करीब आते हुए बोला, “मेरी बहन एक नरक भोग रही है। उसके मासूम मन और देह को बेदरती से कुचला गया है। उसका मान भंग किया गया है। और आपको ये छोटी बात लगती है।”

“मान भंग !!” शराब को हलक से अपने चर्बी युक्त पेट में उतार कर वह एक अट्टाहस करके बोले, “तुम जैसों का कोई मान भी होता है क्या? जो वो भंग होगा! तुझे तो हम लोगों का एहसान मन्द होना चाहिये जो तुम्हारी बहन को हमने अपनी सेवा का मौका दिया।”

“तुम जैसों से क्या मतलब है तुम्हारा विधायक!” मैंने पहली बार उन्हें आप और चाचा की जगह तुम और विधायक कहा था। “और हाँ, मैंने पहले भी दादा को मना किया था कि वो मधु को तुम्हारे और पांडे जी के यहाँ काम पर मत भेजे। और विधायक जी क्या तुम हम में से नहीं? क्या तुम्हारी जाति हमारी तरह चमार नहीं? क्या तुम हम जैसे दलित नहीं?”

“तुम्हें क्या लगता है कुणाल, एक विधायक दलित होगा। नहीं! जिसको संसार की सब सुख-सुविधायें मयस्सर हो जाये वो दलित नहीं रहता। तुमने वो कहावत तो सुनी होगी ‘कर्म प्रधान विश्व रचि राखा’ तो अब हम दलित नहीं। हमारी जाति भले चमार हो पर तुम्हारी तरह हम चमार नहीं है। सच तो ये है अब हम खुद को चमार होना एक हथियार की तरह इस्तेमाल करते हैं। राजनीति में सफल होने के लिये। तभी तो हम असर और रसूख में परमानन्द पाण्डे बराबर है। मतलब अब हम और परमानन्द एक जाति के है, और दलित केवल तुम हो।” कहकर बिन्दर लाल ने हाथ में पकड़े गिलास की शराब से अपने सूखे गले को तर किया।

उनकी बात सुनकर मैं सकते में खड़ा था। मेरी ओर देखकर वो मुस्कराते हुए बोले, “जानते हो कुणाल! जिन्होंने तुम्हारी बहन को रौंदा उन्हें मैं जानता हूँ।”

“वो कौन लोग है चाचा?” अभी जबकि कुछ देर पहले मैंने उन्हें चाचा की जगह विधायक कहा था पर वो उन दरिन्दों को जानते हैं जिन्होंने मेरी बहन को रौंदा था तो इस उम्मीद से कि वो उन लोगों के बारे में सबकुछ बतायेंगे मैंने उन्हें चाचा कहकर सम्बोधित किया, “चाचा प्लीज, आप मेरे साथ पुलिस स्टेशन में चलकर हमारे साथ हुए इस जुल्म की गवाही दे दीजिये। कृपया आप मुझे उन दरिन्दों के नाम बता दीजिये। मैं और मेरी बहन आपको दुआएं देंगे।” कहते हुए मैंने झुककर बिन्दर लाल के पैर पकड़ लिये।

“मुझे तुम्हारी बहन की या तुम्हारी दुआएं नहीं चाहिये।” विधायक बिन्दर लाल अपनी जगह पर बैठे हुए बोले, “कुणाल तुम्हारी बहन ने मुझे अपने जिस्म की लज्जत से मुझ पर पहले ही काफी दुआएं लुटाई है और अब जबकि

उसका बलात्कार भी हो चुका है तो वो अब मेरे किसी काम की नहीं। जाओ घर जाकर अपने दादा से कहो कि वो चुपचाप कोई लड़का देखकर उसके पल्ले बांध दे। अब ऐसा करने में ही तुम्हारी भलाई है।” बिन्दर लाल की कही बात मेरे शरीर के हर अंग में नशतर की तहर घुस गया। मेरे हाथों ने स्वतः ही उनके पैरों को छोड़ दिया और मैं विधायक बिन्दर की आँखों में आँखें डालते हुए उठ खड़ा हो गया।

“और जबकि मधु आपके नौकर की बेटी थी तो आपकी भी बेटी समान थी। तब भी तुमने उसे अपनी हवस का शिकार बनाया।” मेरी आँखें लाला हो गईं।

“झूठ है ये कुणाल।” मेरी बात काटते हुए विधायक बिन्दर बोला, “मधु तुम्हारी बहन, अपनी मर्जी से मेरे बिस्तर पर आई थी। मुझे वैसे भी रज़ामन्दी में मज़ा आता है। जोर जबरदस्ती में नहीं।”

“झूठ है। तुम झूठ बोल रहे हो विधायक बिन्दर, मधु मेरी बहन है और मैं उसके बारे में अच्छे से जानता हूँ वो मासूम है। वो ऐसा अपनी मर्जी से नहीं कर सकती।”

“कुणाल तुम क्या जानो! तुम्हारी बहन ने सिर्फ मेरे साथ ही नहीं बल्कि विधायक पाण्डे के साथ भी हमबिस्तर हो चुकी है। वो भी अपनी रज़ामन्दी से।” विधायक बिन्दर ने ये बात बड़ी बेफिक्री से कही। मानो ये बात उसके लिये बेहद आम हो। लेकिन उसकी कही हर बात ने मेरे शरीर में चिंगारियाँ उतार दी। विधायक बिन्दर बेफिक्र होकर बोतल से गिलास में शराब उड़ेल रहा था। गिलास से एक और घूंट भरकर उसने मेरी ओर घूमते हुए कहा, “पर तेरी बहन दलित होकर भी बहुत मस्त है। उसको बिस्तर पर ढेरों कलाबाजियों का हुनर आता है।”

विधायक बिन्दर की बात जैसे ही पूरी हुई मैंने उसी वक्त अपने कंधे से दलित होने का लिबास उतार कर फेंकते हुए लपक कर उसके हाथ से गिलास को छीन लिया और ‘यू बास्टर्ड’ कहते हुए मैंने उसे जमीन पर पटक दिया। गिलास छनाक की आवाज़ करते हुए फर्श पर कतरा-कतरा बिखर गया। विधायक बिन्दर की बात सुनकर मेरे सिर पर खून सवार हो गया। मगर जैसे ही विधायक बिन्दर की गर्दन दबोचने के लिये मैंने अपने हाथ उसकी ओर बढ़ाये ही थे कि चार बलिष्ठ भुजाओं ने मुझे दबोच लिया। ये भुजायें विधायक बिन्दर के दो निजी अंगरक्षकों की थीं जो गिलास टूटने की आवाज़ और मेरे मुँह से विधायक बिन्दर के लिये चीखकर अंग्रेजी में दी गई गाली सुनकर कमरे के अन्दर आ गये थे।

“भैया ये क्या हुआ तुम्हें? तुम्हारे कपड़े क्यों फटे हैं और ये निषान कैसे? इनमें से खून क्यों छलक रहा है? बोलो भैया! कैसे हुआ ये सब?” मधु मेरा हाल देखकर फफककर रो पड़ी। मेरे शरीर को टटोल रहे अपनी बहन के हाथ उसकी कलाईयों से पकड़ कर मैंने कहा, “मधु मेरी ये देह के ये जखम उसने ही दिये हैं जिसके बिस्तर पर तुम फूल बन बिछती रही हो।” मेरी कटु बात सुनकर वो मुझसे अपने हाथ छुड़ाकर भागकर खटिया पर लेट के रोने लगी।

उसके रोने से बेपरवाह होकर मैंने कहा, “मधु हम गरीब हैं, हम दलित हैं, हम मेहनत-मजदूरी करते हैं। पर हमारा बहन किसी के बिस्तर पर अपनी मर्जी से बिछकर अपना शरीर नुचवाये, वो भी एक नहीं दो मर्दों से जो उसके बाप के उम्र के हो। ये बात जानकर हम शर्म से मरे जा रहे हैं। तुमने हमें शर्मिंदा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।”

और ‘तड़ाक’ की गूँज के साथ एक झन्नाटेदार झापड़ मेरे गाल से टकराया। मैंने सम्हलकर देखा तो अम्मा थी। चेहरे पर गुस्से की अनगिनत लकीरे लिये हुए। “लज्जित उसने नहीं तुमने किया है कुणाल। जिस बहन पर आज तुम जिस बात के लिए लांछन लगा रहे हो उसी बात की वजह से आज तुम जेल से बाहर हो।”

“क्या अम्मा, क्या कहना चाहती है आप?” मैंने अम्मा से चौंक कर पूछा।

“यही शर्त थी उन लोगों की। जो मधु ये न करती तो वो न जाने कितने वकील और गवाह खड़े करके तुझे जेल में सड़ाते रहते।” कहकर अम्मा बाहर चली गई। शायद वो अपनी बेटी के बारे में इससे ज्यादा नहीं कहना चाहती थी और शायद वो अपने इस नालायक बेटे के सामने भी ज्यादा देर तक खड़े रहना नहीं चाहती थी जिसको बचाने के लिये उसकी बहन ने अपना सबकुछ कुर्बान कर दिया हो और अब वही बेटा अपनी बहन को खरी-खोटी सुना रहा है। पर इस वक्त मेरा दिल तड़प रहा था अपनी बहन के लिये। उसके साथ हुई ज्यादाती के लिये। मेरे लिए उसकी दी गई कुरबानी के लिये। उसके गले से हिचकियाँ उबल रही थी। मैं लरजते कदमों से उसके पास जाकर खड़ा हो गया। अपना कांपता हाथ उसके सिर पर रखते हुए मैं बोला, “मधु, मेरी बहन मुझे माफ कर दे। मैंने तुझे कितना बुरा-भला कहा जबकि तू मेरे लिये घुटती रही।”

“भैय्या वो बहुत जालिम और ताकतवर है। उनसे संघर्ष करना हमारे लिये नामुमकिन है। मैं भी उन्हें सजा दिलाना चाहती थी पर अब नहीं भैय्या। अब जो हो गया उसे बीती बात समझ कर भूल जाना ही मुनासिब है।” मधु ने हिचकियाँ लेते हुए कहा।

“पर क्यों मधु, क्यों? जबकि कल ही तुमने फैसला किया था खुद के साथ हुए अमानवीय व्यवहार करने वालों को सजा दिलाने की।”

मेरी बात सुनकर मधु की जगह अम्मा बोली, जो वापस कोठरी में आ गई थी। “ये अब इसलिये बीती बातें भूल जाने को कह रही है क्योंकि इसे अब भी तेरी फिक्र है।”

“मेरी फिक्र अम्मा।”

“हाँ तेरी फिक्र, देखा तुझे कितना बेदर्दी से मारा है चल तेरे जख्मों पर लेप लाग देती हूँ। चल बेटा मधु जरा हल्दी तो पीसना।”

“जी अम्मा।” कहकर मधु कोठरी से बाहर चली गई। वो अब भी बेहद कमजोर थी और उसके पैर लड़खड़ा रहे थे।

“पर अम्मा आप जो मेरे शरीर के जख्म देख पा रही है तो आप मेरे मन के जख्म क्यों नहीं देख पा रही हैं।”

“क्योंकि हमें ऊपर वाला इसलिये धरती पर भेजता है कि हमें न तो अपने मन की बात कहने का हक़ होता है और न ही मन में कुछ रखने का हक़ होता है। हम दलित हैं बेटा और हमारे शरीर ऊंची जाति वालों के गुस्से से जख्म खाते रहे हैं और यही हमारी नियति है। हम इससे निजात नहीं पा सकते। ये बस हमारे जन्म के साथ ही हमारे मुकद्दर में लिखा होता है।”

“पर अम्मा आज जो मेरी देह पर आप जख्म देख रही हो। पर आप मेरे मन के जख्म को क्यों नहीं देख पा रही हो जो किसी ऊंची जाति वाले ने नहीं बल्कि एक दलित ने ही दिये है। जो हमारी ही तरह चमार जाति का है। वो हैवान विधायक बिन्दर लाल। और अम्मा जो आप ये कह रही हैं कि हम जन्म से ही दलित होने का मुकद्दर लेकर आते हैं वो सिर्फ इसलिए क्योंकि हम खुद दलित रहना चाहते हैं और अपने साथ हो रहे शोषण को होने देते हैं। उसके विरुद्ध कभी आवाज़ नहीं उठाते। वो हमारा शोषण करते रहे और हम चुपचाप शोषण करवाते रहे। ये संधि अब और नहीं चलेगी। अब इन संधियों के टूटने का समय आ गया है।”

“बस-बस, बस कर अपना भाषणा मैं ये सब कुछ नहीं जानती और तुझे उल्टा-सीधा करने भी नहीं दूंगी। चल अब चुपचाप अपने जख्मों पर लेप लगवा ले। ओ मधु! हल्दी पिसी या नहीं।” कहकर अम्मा भी कोठरी से बाहर चली गई और मैं किसी निर्णय पर पहुँचने के लिए कोठरी के नीम अंधेरे में तन्हा खड़ा रहा।

“कुणाल बेटा आ जा लेप तैयार है।” अम्मा की आवाज़ सुनकर मैं कोठरी से बाहर कच्चे आंगन में आ गया। मधु पत्थर की सिल पर पिसी हुई गीली हल्दी एक कटोरी में भरी थी और अम्मा किसी पुराने कपड़े की धोती सी पोटली खोलकर उसमें से कुछ पावडर सा पदार्थ निकाल रही थी। दादा को जड़ी-बूटियों का ज्ञान था और अम्मा जो निकाल रही थी वो यकीनन जख्म भरने वाली कोई जड़ी-बूटी का पावडर होगा। शायद अम्मा दादा ने मधु का इलाज भी जड़ी-बूटियों द्वारा ही किया होगा और मुझे तसल्ली देने के लिए मुझसे कहा होगा कि मधु का इलाज डॉक्टर से करवाया है। घर की इज्जत बचाने के लिये जरूर मधु का इलाज घर पर ही किया होगा।

‘इज्जत’, ‘इज्जत’ शब्द से घृणा हो गई थी अब। ‘इज्जत’ जिसे बचाने के लिये हमें हर रोज, हर घड़ी बेइज्जत होना पड़ता है।

“आजा बेटा आ। खटिया पर बैठ जा तो मैं लेप लाग देती हूँ।” अम्मा ने मुझे गुमसुम खड़ा देखकर आवाज़ दी। मैंने एक नज़र मधु पर डाली जो उठकर हाथ में पिसी हल्दी की कटोरी लिए अम्मा के पास आ गई थी। मैंने अम्मा को देखा। उनके चेहरे पर मेरे लिए बेहद चिंता थी। वो मेरी माँ थी उनका चिंतित होना लाज़िमी था पर मैं एक निर्णय ले चुका था। सदी दर सदी चली आ रही संधि को तोड़ने का निर्णय। अपने इसी निर्णय को मुकम्मल करने की गरज से मैंने कहा, “अम्मा मैं ये लेप अपने जख्मों पर नहीं लगाऊंगा।”

“न बेटा ऐसा मत कह आ लेप लगवा ले वरना कोई जख्म नासूर बन जायेगा।”

“कुछ जख्म तो नासूर बन चुके हैं अम्मा। और उनका अब फूट जाना ही अच्छा है।”

“तू क्या कह रहा है! मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है।”

“यही अम्मा कि मैंने पुलिस स्टेशन जाने का आखिरी फैसला कर लिया है। अब मैं न सिर्फ मधु के साथ हुई ज्यादाती की रिपोर्ट करूँगा बल्कि अपने इन

जखों की FIR भी दर्ज कराऊंगा। और अम्मा ये मेरा आखिरी फैसला है। न बदला जाने वाला, अटल फैसला।”

मेरी दृढ़तापूर्ण बात सुनकर अम्मा के हाथ से हल्दी की कटोरी छूट कर कच्चे आँगन में गिर गई और उसमें से कुछ हल्दी जमीन पर बिखर गई। अम्मा के चेहरे पर चिंता की लकीरें गहरी हो गई, पर उस वक्त मैंने मधु के चेहरे पर एक चमक देखी। गाँव से कोई पांच किलोमीटर दूर स्थिति पुलिस थाने में मैं मधु और रक्ष के साथ गया। थाना इंचार्ज वेद तिवारी अपने ऑफिस में मौजूद थे। कांस्टेबल होरी लाल ने ये जानकर कि हम थाना इंचार्ज से मिलना चाहते हैं और क्यों मिलना चाहते हैं। हमें बहुत समझाया कि हम ऐसा न करें और चुपचाप वापस चले जाये। पर हम अपनी बात पर अड़े रहे। हमारी बातचीत की आवाज़ अन्दर बैठे थाना इंचार्ज तक पहुँच गई। उसने एक कांस्टेबल भेजकर हमें भीतर बुलवाया। वो एक रोबदार चेहरा और चर्बी वाले पेट का इंसान था। हाथ जोड़कर नमस्ते करते वक्त मैंने उसके सीने पर लगी नेमप्लेट में उसका नाम ‘वेद तिवारी’ देखा जिससे ये तय हो गया कि हम सही व्यक्ति के पास पहुँचे हैं। हमारे नाम के साथ सरनेम सुनने के बाद उसने हमें कुर्सियों पर बैठने को नहीं कहा। बल्कि उसने हमें फौरन दो मिनट में अपनी बात रखने को कहा। मैंने उसे अपनी बहन की ओर इशारा करके कहा, “ये पीड़िता मेरी बहन है और बेहद कमजोर है तो क्या ये कुर्सी पर बैठ सकती है।”

मेरी बात सुनकर वो बोला, “जब ये इतनी कमजोर है तो इसे घर पर आराम करना चाहिये था।”

खैर उसने कुछ सोचकर मधु को कुर्सी पर बैठने की इजाज़त दे दी। मैंने संक्षिप्त रूप से मधु के साथ हुए सामूहिक बलात्कार की घटना बयां कर दी। मैं अभी विधायक बिन्दर और विधायक पाण्डे द्वारा मधु के दैहिक शोषण की बात बता पाता उससे पहले उसने अपने हाथ में पकड़े रूल को मेरी ओर दिखाकर चुप रहने को कहा।

“तो तुम्हारे साथ बलात्कार हुआ है।” इंस्पेक्टर वेद तिवारी ने मधु से पूछा। मधु ने सिर्फ इकरार में सिर हिलाया। “कैसे?” इंस्पेक्टर ने फौरन दूसरा सवाल दागा। इंस्पेक्टर के सवाल पर मधु ने सिर झुका लिया।

मधु की विवशता देखर मैंने कहा, “सर ये कैसा सवाल है?”

मेरी बात सुनकर उसने वापस मुझे रूल के इशारे से चुप रहने को कहा।

“ठीक है जो तुम्हें अपने भाई और अपने यार के सामने कहने में शर्म आ रही है तो मैं इन्हें बाहर जाने को कहता हूँ।” वेद तिवारी ने मुस्कराकर रक्ष की ओर देखकर कहा।

“नहीं सर, आपको गलतफहमी हो रही है। ये रक्ष है. हमारे गाँव का लड़का और इसका मेरी बहन से कोई सम्बन्ध नहीं है। आप प्लीज़ मेरी बहन के साथ हुए बलात्कार की FIR लिख लीजिये।” मैंने कहा।

“अच्छा बेटा, तुम्हें क्या लगता है. तुम्हारी बहन लौंडों से चक्कर चलायेगी, वो भी अपने भाई को बताकर।” फिर इंस्पेक्टर वेद तिवारी ने मधु के झुके हुए चेहरे की ठोड़ी पर अपना रूल लगाकर उसे उठाते हुए कहा, “ये साली जितनी भोली दिखती है उतनी ही खाई पी हुई है।”

“इंस्पेक्टर . !” अपनी बहन के के लिए इंस्पेक्टर वेद तिवारी से इस तरह की बात सुनने के बाद मैं चीख पड़ा। मेरी तेज आवाज़ सुनकर इंस्पेक्टर वेद तिवारी अपनी कुर्सी से उठकर मेरे पास आ गया। अपना रूल मेज पर रखकर अपने हाथों से वो मेरी शर्ट के कॉलर को सही करते हुए बोला, “अब जबकि तुमने अभी कहा कि तुम लखनऊ में रहकर पढ़ाई कर रहे हो, तो मुझे लगा तुम थोड़े तो समझदार होगे।” इंस्पेक्टर की बात मेरे समझ में नहीं आई और मेरी ये नासमझी उसने मेरी आँखों में पढ़ते हुए कहा, “तू अपनी बहन को बेहद मासूम समझता है ना. तो मैं तुझे बताऊं इसने अपनी इसी मासूमियत के जाल से विधायक बिन्दर और विधायक पाण्डे को फंसाकर अब उन्हें ब्लैकमेल कर रही है।”

“इंस्पेक्टर को ये बात मालूम है? मेरे दिमाग में तूफान ने करवट ली। जरूर विधायक पाण्डे और विधायक बिन्दर अपनी एप्रोच का इस्तेमाल कर चुके थे।” मुझे चुप देखकर इंस्पेक्टर वेद ने आगे कहा, “बस हो गया या कुछ और सेक्स लीलायें सुनना पसंद करोगे अपनी बहन की।”

“नहीं इंस्पेक्टर साहब ये सब झूठ है मेरी बहन वास्तव में मासूम है वो किसी विधायक पाण्डे और बिन्दर को ब्लैकमेल नहीं कर रही बल्कि उन दोनों ने इसका पिछले एक साल से शोषण किया है।”

“अच्छा बेटा तुम ये कह रहे हो कि ये सब एक साल से चल रहा है। मतलब इसकी योनि एक साल से लिंग के मजे लूट रही है।” कहकर इंस्पेक्टर तिवारी बेहया तरीके से हँस पड़ा। उसे यूँ हँसता देखकर मधु कुर्सी से उठकर बाहर की ओर भागी और मैं उसे ‘मधु-मधु’ पुकारते हुए उसके पीछे भागा। इंस्पेक्टर वेद तिवारी की कही कई अप्लील बातें मधु के सीने घूल सी चुभी। मैं मधु

तक पहुँच पाता उससे पहले ही वो लहराकर थाने की फ़र्श पर जा गिरी। फ़र्श पर उसका चेहरा टकराने से वो फट गया और उससे गीला ताजा खून मटमैली फ़र्श को लाल करने लगा। मैं भागकर मधु के पास पहुँचकर जब उसे सहारा देकर उठाने लगा तो मेरे कानों में ये आवाज़ पड़ी

“बदजात! अपनी मर्जी से सबके बिस्तरों पर लेटती है और यहाँ आकर उधम मचाये हुई है।” मधु का चेहरा अपने हाथों में सम्हाले हुए मैंने आवाज़ की दिशा में देखा तो मैंने वहाँ विधायक परमानन्द पाण्डे को पाया। वो चलते हुए बिल्कुल हमारे बिल्कुल करीब आ गये। विधायक पाण्डे को देखकर मधु भय से मेरे सीने में छुपने का प्रयास करने लगी।

“वैसे कुछ भी कहो। बिस्तर पर खूब मजे देती है ये चमारिन, चाहे तो आप भी इसका स्वाद ले सकते हैं तिवारी जी। बहुत टाइट माल है।” विधायक पाण्डे ने वहीं फ़र्श पर हमारे पास बैठकर इंसपेक्टर तिवारी की ओर देखते हुए धिनौने अंदाज़ में बोला। विधायक पाण्डे ने अपनी बात पूरी करके ज्यों ही मेरी बांहों में दुबकी मधु की ओर देखा मैंने अपने दायें हाथ का घूँसा उसकी नाक पर जड़ दिया। मैंने अपना प्रहार पूरी ताकत से किया था। जिसकी वजह से उसकी नाक से खून बह चला और वो वही फ़र्श पर लुढ़क गया।

“रागा-सागा” विधायक पाण्डे फ़र्श पर लुढ़कते-सम्हलते चिल्लाया। उसकी आवाज़ पर दो लठैत भागते हुए वहीं थाने में आ गये और उन्हें देखकर पाण्डे वापस चिल्लाया, “अब देख क्या रहे हो! मार इन दोनों को लाठी और उतार दे सारी गर्मी इन चमारो की।”

विधायक पाण्डे की बात सुनकर मधु डर कर कांपने लगी। मैंने भी खतरा भांप लिया। मैं जानता था विधायक पाण्डे जो कह रहा है वो करना उसके लिये कोई बड़ी बात नहीं है। डर के मारे कांपती और सहमती मधु को अपनी बांहों में भींच कर मैंने इंसपेक्टर वेद तिवारी से कहा, “सर ये कैसी कानून व्यवस्था है! इस विधायक पाण्डे ने मेरी बहन का शोषण किया है। बलात्कार किया है। और आज ये इस थाने में आपके सामने लाठियों से मारने की बात कर रहा है। क्या आप अब भी इसे गिरफ्तार नहीं करेंगे?”

“गिरफ्तार तो जरूर करूँगा।” वेद तिवारी ने कहा, “पर विधायक पाण्डे जी को नहीं बल्कि तुझे, क्योंकि तूने मेरे पुलिस स्टेशन मेरे सामने विधायक जी पर हाथ उठाया है और इसके इस यार को भी गिरफ्तार करूँगा।” कहकर वेद तिवारी ने रूल से रक्ष की पिटाई चालू कर दी।

कुछ देर में पूरा पुलिस स्टेशन रक्ष की चीखों से उबल पड़ा। रक्ष को यूँ पिटता देख मैंने चिल्लाकर कहा, “इंस्पेक्टर तिवारी! तुम जो खुद को कानून का रखवाला कहते हो तो ये तो लाजिमी नहीं कि तुम अपराधियों को छोड़कर निर्दोषों को पीटो, उन्हें झूठी धाराओं में फंसाओ। मैं आखिरी बार तुमसे रिक्वेस्ट करता हूँ कि इस विधायक को मेरी बहन के शोषण और बलात्कार के जुर्म में गिरफ्तार कीजिये और बेगुनाह रक्ष की पिटाई बन्द कर दीजिये।”

“धुक्ला, अवस्थी जरा इस लड़के की खबर लेना तो। ये चमार अब मुझे, इंस्पेक्टर तिवारी को कानून सिखायेगा।”

मैं अगले ही पल शुक्ला और अवस्थी नामक कांस्टेबलों के षिकजे में था और उन्होंने अपने डण्डों से मुझे रूई की तरह धुनना चालू कर दिया। अब रक्ष की चीखों के साथ मेरी चीखें भी शामिल हो गईं। बेवजह पिटते हुए मैंने देखा कि रागा और सागा नामक हैवान मेरी बहन के कपड़े मेरे सामने ही फाड़ रहे थे। निःसहाय मधु छटपटा कर खुद को छोड़ देने की विनती कर रही थी। वह जानती थी कि उसका भाई और रक्ष उसे इस वक्त बचा नहीं सकते इसलिए वो भागकर विधायक पाण्डे के पैरों में गिरकर उससे रहम की भीख मांगने लगी। विधायक पाण्डे ने हँसते हुए मधु को उसके बालों से उठाते हुए उसके मुँह पर थूकते हुए कहा, “साली चमार अभी से गिड़गिड़ाने लगी। अभी तो तेरी योनि में मिर्ची भरकर तेरे षरीर की सारी गर्मी निकालनी है।”

“पाण्डे जी मेरे बहन को छोड़ दीजिये मैं आपके हाथ जोड़ता हूँ।” पिटते हुए मैं बेबस मधु के लिए पाण्डे से प्रार्थना की।

“ओह अब पाण्डे जी के सामने हाथ जोड़ रहा है। हो गई सारी गर्मी खतम। अरे साले तेरी गर्मी ही तेरी बहन की बदौलत थी। जब तब वो अपनी मर्जी से हमारे बिस्तर गर्म करती थी तो तू ऐश करता था। अब देख, जब से इस चुहिया के पर निकल आये देख, तुम सबका क्या हाल हो रहा है।” कहकर विधायक पाण्डे ने मधु को एक जोर का धक्का दिया।

“मधु .।” उसे फर्श पर गिरता देख मैं चीखा। पर वो फर्श से टकराती उससे पहले ही उसे दो हाथों ने संभाल लिया। मैंने देखा वो कांस्टेबल होरी लाल था। फिर कांस्टेबल होरी लाल ने इंस्पेक्टर वेद और विधायक पाण्डे से ढेरों मिन्नतों की हमें बख्श देने की। हमारी तरफ से उन्होंने गारंटी भी दिया कि अब आगे से ये कुछ नहीं करेंगे। सब उठकर चुपचाप घर चले जायेंगे और कभी भी मधु के यौन शोषण और उसके साथ बलात्कार की FIR दर्ज कराने की बात नहीं करेंगे।

कांस्टेबल होरी लाल ने मुझे भी कहा कि मैं विधायक और इंस्पेक्टर से माफी मांगकर कर कहूँ कि 'अब आगे ऐसा नहीं करूँगा।' क्योंकि मधु को बचाना इस वक्त मेरी प्राथमिकता थी। सो मैंने उनकी बात मान ली। मैंने मधु को इशारे से माफी मांगने की बात कही और रक्ष को भी। हम लोगों की चिरौरी सुनकर विधायक पाण्डे बोले, "अरे इंस्पेक्टर जाने दो इन चमारों को। मुझे ये सब इस तरह चिरौरी करते बहुत अच्छे लगते हैं।"

जब हम वहाँ से जाने लगे तो इंस्पेक्टर तिवारी ने हमें हिदायत देते हुए कहा, "अब चुपचाप घर जाकर अपने काम-काज में लग जाना। अगर अब भी फड़फड़ाने की कोशिश की तो इस मधु के साथ-साथ तुम्हें और तुम्हारे इस दोस्त के घर की सारी औरतों का यही हाल करूँगा, वो भी वहीं तुम्हारे गाँव में और तुम्हारे घर आकर।"

हमने सिर झुकाकर इंस्पेक्टर तिवारी की बात सुनी और लड़खड़ाते हुए कदमों से पुलिस थाने से बाहर निकल आये। बाहर अब तक अंधेरा हो चुका था जिसे देखकर मैंने राहत की सांस ली। अगर उजाला होता तो मधु किस तरह अपने फटे कपड़ों के साथ बाहर लोगों के सामने चल पाती। फिर भी बाहर बल्ब की हल्की रोशनी थी। अमूमन कस्बों में लाइट कम ही रहती है पर आज जलते बल्ब मानों मुझसे कह रहे थे कि एक गरीब दलित की कोई इज्जत नहीं और समाज की सारी व्यवस्था मानों हमारा मखौल उड़ाने के लिये हो। इस वक्त मधु किसी बुत की तरह चल रही थी। मानों वो सबसे बेजार हो गई हो और उसे दीन दुनिया की खबर ही न हो। उसके शरीर के कपड़े चिथड़े की शक्ल में झूल रहे थे। और उसके शरीर के आधे से ज्यादा अंग नुमाया हो रहे थे। मेरी और रक्ष की कमीज भी चिथड़ा बन चुकी थी वरना उन्हें मैं मधु को पहना देता। मैं जानता था किसी लड़की को इस हाल में देखकर बाज़ार के मनचले कैसी-कैसी फब्तियाँ कसेंगे और उन्हें सुनकर मधु के दिल पर कैसे नशतर चलेंगे। यही सोचकर मैंने उसका हाथ पकड़ कर उसे एक पेड़ की आड़ में बिठा दिया। आगे बढ़ने से पहले मैं मधु के लिए किसी कपड़े का बन्दोबस्त करना चाहता था।

विधायक पाण्डे और इंस्पेक्टर तिवारी ने दुशासन बनकर मेरी बहन के शरीर के कपड़े फाड़े थे तो, होरी लाल ने कृष्ण की तरह बिल्कुल आखिरी समय में उसे बचाया भी था। वही होरी लाल अब तेज कदमों से चलते हुए हमारे पास आ गये। उनके हाथ में हाथ में एक साड़ी थी।

“ये मेरी पत्नी की साड़ी है, उसे बिटिया को पहना दो।” मधु को साड़ी देते हुए उन्होंने कहा और फिर तुरन्त वहाँ ये चले गये। मानों उन्हें डर हो कि कहीं हमारी मदद करते देख विधायक पाण्डे उनकी नौकरी न ले ले। या फिर उनके घर की लड़कियों के साथ भी यही न करे।

होरी लाल भले ही पुलिस महकमें में कांस्टेबल थे पर जन्म से वो भी दलित थे और शायद वो एक दलित की सीमाएं समझते होंगे। मधु पेड़ के दूसरी ओर जाकर साड़ी पहनकर आई तो उसे देखकर मैंने कहा, “चल मधु पहले कहीं चाय पीते हैं। फिर घर चलेंगे।”

“नहीं मैं घर नहीं जाऊँगी।” मधु की बात सुनकर मैंने और रक्ष ने एक-दूसरे का मुँह देखा। हमें यूँ चुप देखकर वो बोली, “भैया हम चाय पीकर घर नहीं बल्कि कलेक्टर साब से मिलने जायेंगे।” मधु की बात सुनकर मुझे उसके अपनी बहन होने पर फख हुआ और उसी बीच मुझे लवी की कहीं वो बात याद आई जब उसने मुझसे कहा था कि ‘कृणाल जानते हो, तुम्हारी बहन मधु तुमसे ज्यादा दृढ़प्रतिज्ञ है।’

यू.पी. रोडवेज की बस ने हमें सुबह चार बजे जिला मुख्यालय पर उतार दिया। इस वक्त चारों ओर अँधेरा था। यूँ अँधेरों में हम कहीं नहीं जा सकते थे सो बस स्टैण्ड के पास पूरी रात चलने वाले एक छोटे से रेस्टोरेंट में बैठकर हम दिन निकलने का इंतजार करने लगे। पूछने पर पता चला कि कलेक्टर साहब दस बजे से पहले नहीं आते। हमने पूरी रात कुछ नहीं खाया था और मैं जानता था कि मधु इस तरह भूखी रही तो सुबह दस बजे तक वो चलने लायक नहीं रहेगी। हमारे शरीर पिटाई की वजह से बेहद दुख रहे थे। मधु ने तो बीते दिनों बहुत ज्यादा शारीरिक कष्ट उठाये थे। पर मैं ये समझ नहीं पा रहा था कि उसकी इच्छाशक्ति की हद क्या है? और वो इतनी आत्मशक्ति कहाँ से ला रही थी? कोई और लड़की होती तो कब का टूट कर बिखर चुकी होती।

पारले जी बिस्किट का पैकेट फाड़कर मधु के सामने रखकर मैंने उसके हाथ में गर्म चाय का गिलास पकड़ा दिया। मधु भले ही हृदय से बेहद दृढ़ थी पर वो बेहद दर्द और तनाव से गुजर रही थी। एक दलित लड़की का भाई होना क्या होता है ये मैं अब अच्छी तरह समझ रहा था। मेरे सामने मेरी बहन को लिथाड़ा जा रहा था और मैं कुछ नहीं कर पा रहा था। कितना बेबस और लाचार था मैं। और मेरी ये चिन्ता इस वक्त और बढ़ रही थी।

मैं मधु के कहने पर कलेक्टर साब के पास फरियाद करने आ तो गया पर मैं भीतर ही भीतर बेहद डरा हुआ था। मेरे यूँ डरने की वजह भी थी। कलेक्टर महिपाल सचान, संजना सचान मतलब संजू के पापा थे। संजू .. हाँ, वो संजू ही थी जिसकी मासूम सूरत के छल ने हमारी ज़िंदगी तबाह कर दी। वो संजू ही थी जिसकी सुंदरता के आकर्षण में फंसकर मैं उसके बिस्तर तक पहुँचा और फिर संजू ने मुझे बंटी और मिसेज अंजली के बिस्तर पर पहुँचाया।

जब मैंने उस चक्रव्यूह से निकलने की कोशिश की तब उसने इसका बदला मेरी कज़िन कविता से लिया। जब मेरे लवी और विरेश का हौसला पाकर कविता ने अपने साथ हुए शारीरिक शोषण के खिलाफ़ आवाज़ उठाई तो उसका परिणाम मेरी बहन मधु को भुगतना पड़ा। मतलब हम अपने साथ हुए अन्याय के खिलाफ़ जितनी आवाज़ उठाते हमारे साथ उतना ही अन्याय होता गया। अन्याय के विरुद्ध हमारे प्रतिकार का प्रतिकार अन्याय करके होता गया। संजू ने तो लवी को भी देख लेने की धमकी दी थी। अब जबकि मैं यहाँ गाँव में था तो लवी के साथ संजू कुछ गलत न कर दे, यह सोचकर मैं बेहद चिन्तित हो गया।

मेडिकल स्टोर से खरीदी गई पेनकिलर टैबलेट रक्ष के पास थी। दो-दो बिस्कुट खाने के बाद हमने चाय के साथ एक-एक पेनकिलर टैबलेट भी अपने हलक में उतार ली थी। इसके बावजूद हमें बहुत तेज दर्द हो रहा था।

सुबह के आठ बजते ही हम कलेक्टर ऑफिस पहुँच चुके थे और वहाँ हम कलेक्टर साब के आने का इंतजार करने लगे।

धीरे-धीरे घड़ी की सूइयों ने ग्यारह बजा दिये पर कलेक्टर साब अब तक नहीं आये। हमारी बैचेनी बढ़ने लगी थी। ‘अगर वो आज नहीं आये?’, ‘अगर वो कहीं दौरे पर निकल गये होंगे तो?’ सोच-सोच कर मेरा दिल बैठा जा रहा था। मधु का हाल देखकर मुझे बेइन्तहां रोने का मन कर रहा था पर मैं आँखों में अपने आँसू रोकने के लिये हर सम्भव कोशिश कर रहा था।

“कलेक्टर साहब की तबियत थोड़ी नासाज़ है, वो आज अपने बंगले से ही काम कर रहे हैं।” रक्ष ने किसी चपरासी से पता की गई ये खबर हमें सुनाई। हमारे पास अब कलेक्टर के बंगले पर जाकर उनसे मिलने का ही विकल्प था। हमने वही किया।

जब हम पहुँचे तो वहाँ पर पहले से कुछ फरियादी मौजूद थे। मैंने एक कागज पर नाम, पता, गाँव लिखकर अर्दली को दे दिया। कोई एक घंटे के इंतजार

के बाद कलेक्टर साहब ने अर्दली से कहलाकर हमें भीतर बुलवाया। भीतर सिर्फ मैं और मधु गये थे। रक्ष को अर्दली ने बाहर रोक दिया ये कहकर कि 'शिकायत सुनने के समय कलेक्टर साहब का ज्यादा भीड़-भाड़ पसंद नहीं।'

कलेक्टर एम.पी. सचान ने अपने बंगले का एक कमरा ऑफिसनुमा बनाया हुआ था। वो इस वक्त उसी ऑफिसनुमा कमरे में मौजूद थे। मैं जानता था वो संजू के पापा है पर शायद वो मेरे बारे में नहीं जानते थे। उन्होंने बड़ी शालीनता से वहाँ पड़ी कुर्सियों पर हमें बैठने को कहा। चपरासी को बुलाकर उन्होंने हमें पानी देने को कहा। उनके इतने विनम्र व्यवहार ने मुझे उलझन में डाल दिया। या तो वे अपनी बेटी के विपरीत एक अच्छे इंसान थे या फिर वो ये जानते ही नहीं थे कि सामने बैठी पीड़िता को लगातार पीड़ा देने वाली कोई और नहीं बल्कि उनकी बेटी संजू ही थी।

अपनी शिकायत दर्ज कराने के लिए मैंने ज्यों ही कहा, "सर वो हम .।" तो वो मेरी बात बीच में ही काटकर बोले, "पहले पानी पी लो फिर अपनी प्रॉब्लम बताओ।"

हम पानी पीकर खामोश बैठ गये और वे कुछ फाइल देखने लगे। फाइल देखने के बाद वे बोले, "हाँ, अब बताओ! क्या समस्या है तुम लोगों के साथ?" बदले में मैंने उन्हें मधु के साथ हुई ज्यादाती की पूरी तफसील बयां कर दी। जब मैं उन्हें तफसील बता रहा था तो वे बीच-बीच में मुझे रोक कर मेरी बात की तस्कीद मधु से भी करते जा रहे थे। मैंने उन्हें विधायक बिन्दर से लेकर विधायक पाण्डे तक और बीती रात पुलिस थाने में हुई सारी घटना बताई। मेरी बात सुनकर वे कुछ देर सोचते रहे और फिर बोले, "तुम लोगों की शिकायत काफी बड़े लोगों के खिलाफ है।"

उनकी बात सुनकर मैंने कहा, "सर आप जिलाधिकारी है. आपसे ऊपर तो नहीं हैं ये लोग। और फिर मैं बचपन से सुनता आ रहा हूँ कि कानून सबके लिये बराबर है।" मेरी बात सुनकर वो अपनी कुर्सी से उठकर टहलने लगे। सिगरेट जलाकर उसके कश मारते हुए विचारमग्न। हम सिर झुकाये बैठे थे और वो टहल रहे थे। फिर अचानक वो रुके और मेरे कंधे पर हाथ रखकर बोले, "तुम्हें न्याय मिलना ही चाहिये।" कलेक्टर साहब की बात सुनकर हमारे मुँह जिस्मों में उम्मीद का संचार हो उठा। मैं और मधु उठकर एक साथ खड़े हो गये थे।

"सर हम आपके बहुत एहसानमन्द रहेंगे।" मधु बोली।

“ये तो मेरी ड्यूटी है इसमें एहसान जैसा कुछ नहीं है। पर वे लोग काफी बड़े लोग हैं ..” कलेक्टर एम.पी. सचान ने अपनी बात अधूरी छोड़ दी। उनकी बात सुनकर मैं और मधु दोनों एक-दूसरे को उलझन के भाव से देखने लगे। फिर कुछ देर बाद वो अपनी अधूरी बात पूरी करते हुए बोले, “खैर. वैसे तुमने कहा, कानून सबके लिये बराबर होता है तो उन्हें भी कानून सबक सिखायेगा।” कहकर उन्होंने सिगरेट का आखिरी कश लिया और उसे ऐश-ट्रे में रगड़ कर बुझाते हुए बोले, “एक काम करो। तुम लोग घर वापस लौट जाओ और कल ग्यारह बजे अपने एरिया के पुलिस थाने आ जाना। मैं भी कल वहीं रहूँगा और तुम्हारी शिकायत दर्ज करवा दूँगा।” कलेक्टर एम.पी. सचान की बात हमें सही लगी और हमने उन्हें ‘थैंक्यू सर’ कहकर वहाँ से वापस गाँव की ओर निकल पड़े।

अपना बिस्तर लेकर मैं छत पर सोने के लिये चला गया। कुछ देर टहलने के बाद जब मैं बिस्तर पर जाने लगा तो मुझे प्यास महसूस हुई. “एक गिलास पानी दे देना।” की आवाज़ लगाकर मैं बिस्तर पर लेट गया। मेरे हाथ में पानी का गिलास देकर वो मेरे पास चारपाई पर बैठ गई।

“लुबना जो तुम न होती तो जिंदगी कितनी पहाड़ सी होती।” मैंने पानी पीकर गिलास रखते हुए कहा।

“और जबकि मैं हूँ तो फिर ये जिंदगी कैसी है।” कहकर लुबना मेरा सहारा लेकर अधलेटी अवस्था में लेट गई।

“अब ये जिंदगी इन उड़ती जुल्फों सी रक्स कर रही है।” मैंने हवा में उड़ते लवी के गालों को ढकते उसकी जुल्फों की लटे संवारते हुए बोला।

“ओह जो मैं न होती तो कोई और होती।” लवी बल खाकर अपनी दोनों कोहनी और दोनों घुटनों के सहारे किसी चौपाये की तरह खड़े होकर बोली।

“भला कोई और मुझ जैसे से दिल क्यों लगाता।” मैं भी उसी की तरह चौपाये की तरह खड़े हुए बोला।

“संजू और बंटी!” कहकर वह हँस पड़ी और कुछ देर हँसते देखने के बाद उसे गर्दन से पकड़कर मैंने अपनी गोद में खींच लिया। लवी अब भी हँस रही थी और मैं सोच रहा था मेरी गोद में लेटी ये हँसती-खिलखिलाती लड़की कितनी महान है जिसने मुझ जैसे चरित्रहीन लड़के से प्यार करके उसे चरित्रवान बना

दिया। हँसती हुई लवी के होंठों के करीब मैं अपने होंठ ले जाकर फुसफुसाया, “क्या मेरे बारे में इतना सब जानने के बाद, तुम अब भी मुझसे मुहब्बत करती हो?” मेरी बात सुनकर वो संजीदा होते हुए बोली, “कुणाल हाँ ये मेरी मुहब्बत है कोई तालीम नहीं जो खत्म हो जाये।”

लुबना की बात सुनकर मैं बड़बड़ाया, “तुम प्यास बुझाती भी हो और बढ़ाती भी हो।”

“अभी क्या कर रही हूँ।” वो थोड़ा शोख हुई।

“अभी प्यास बढ़ा रही हो।” मैंने उंगली से उसके होंठ सहलाये।

“हम्मम!” उसने अपने होंठों पर मेरी उंगली टटोली।

“क्या हम्मम! मैं प्यासा हूँ।”

“इतनी ही प्यास लगी थी तो नीचे से पीकर आना चाहिए था। प्यासा हूँ, प्यासा हूँ, क्या बड़बड़ा रहे हो?”

मेरा हाथ झिझोड़ा गया। मैं उठकर बैठ गया। देखा तो सामने अम्मा थी हाथ में पानी का लोटा लिये। अम्मा से नजरें चुराकर मैंने चारपाई पर लवी को देखा तो मोहतरमा नदारद थी। अम्मा के हाथ से पानी का लोटा लेते हुए मैंने मन ही मन मुस्कराते हुए सोचा, “तो लवी से ज्यादा दिन हो गये मिले हुए, तो वो ख्वाब में मिलने आई थी।”

मुझे पानी देकर अम्मा बड़बड़ाते हुए छत से लगी बांस की सीढ़ी से आंगन में उतर गई और मैं पानी का लोटा लिये अब भी ख्वाब में हुई लवी से मुलाकात पर गुदगुदाते हुए मिट्टी और फूस की बनी मुंडेर के पास आकर खड़ा हो गया। पानी पीने से पहले मैंने लोटे से थोड़ा पानी अपनी उंगली में लेकर कुछ छींटे अपनी आँख पर मारे और फिर लोटा ऊपर उठाकर पानी पीना चाहा तो मेरी नज़र दूर कुछ सायों पर टिक गई। आठ-दस साये मुझे सितारों की रोशनी में नज़र आये जो गाँव में चमारन टोला की ओर बढ़ रहे थे। बीते दिनों की कठिनाईयों ने मेरी छठी इन्द्रि को जाग्रत कर दिया और मेरी ये छठी इन्द्रि मुझे किसी होने वाले अनिश्च की दस्तक दे रही थी। बांस की सीढ़ी से उतर कर मैं फौरन नीचे आ गया। अम्मा अभी लेटी नहीं थी, बस लेटने वाली थी। मैंने उनसे कहा, “अम्मा जल्दी से मधु को जगाव हमें यहाँ से निकलना है।” कहकर मैंने दरवाजा खोलकर दरवाजे के पास बने चौतरे पर पड़ी खटिया पर सो रहे दादा को जगा दिया। कहते हैं वक्त की मार इंसान को थोड़ा बहुत होशियार बना देती है। और इसी वक्त की

मार से मेरे घर वाले भी थोड़े से होशियार हो गये थे। मेरे इस तरह हलकान होने का मतलब उन्होंने वहीं लगाया जो मैंने घर की कच्ची अटारी से देखा।

मैं, मधु, अम्मा और दादा घर से निकलकर चुपचाप उस गोंडे में घुस गये जहाँ बकरिया बांधी जाती थी।

“मादर.. बहन.. भौ.. साले! ये साले चमार की औलाद कहाँ गायब हो गये। कहाँ भाग गये ये परनाले की पैदाईश!!” डरे, सहमे हमने ये आवाज़ अपने घर का दरवाजा तोड़ कर घुसे उन असंख्य लठैतों की सुनी थी। साथ में तोड़-फोड़ की आवाज़ भी आ रही थी। वैसे भी हमारे घर में वो चीजें ही कम थी जो तोड़ी जाई पर जो भी थी वो मेरे अम्मा-दादा के खून पसीने की कमाई थी और वो चीजें हमारे दैनिक जीवन के लिए बहुत अनिवार्य थी। अचानक मैंने देखा कि हमारे घर से आग की लपट निकल रही थी। मेरे साथ मधु और अम्मा-दादा के कलेजे लरज गये। हमारा वो छोटा सा मिट्टी का घर अगले ही पल धूँ-धूँ करके जल रहे थे। वे लोग हमारे मुहल्ले के दूसरों घरों के दरवाजे भी झिंझोड़ रहे थे। हमें बुरी तरह से ढूँहा जा रहा था। मुझे, मधु और अम्मा-दादा पर बेहिसाब गालियां बरसाइ जा रही थी। मैं जानता था देर-सबेर हमें ढूँढते हुए अताताइयों का ये जत्था इस गोंडे में भी आ धमकेगा। इसलिये समय रहते हमारे लिये वहाँ से निकल जाना ही बेहतर था। न केवल घर से बल्कि गाँव छोड़ देना ही मुनासिब लगा।

“मधु जल्दी से ये सब बकरियों की रस्सी खोल दो।” कहकर मैं गोंडे के पीछे की दीवार जो मिट्टी की बनी थी और एक जगह से थोड़ी गिरी हुई थी, उसे उस जगह से तोड़ने की कोशिश करने लगा। मैंने देखा अम्मा बकरियों की रस्सी खोलने में मधु की मदद कर रही थी और दादा दीवार गिराने में मेरी। जल्द ही दीवार टूट गई और हम गोंडे से निकलकर बरगद के बड़े के पास पहुँच कर खड़े हो गये।

“तुमने बकरियों की रस्सियां खुलवा दी इस तरह से तो वो सब भाग जायेगी।” चन्द्रमा की रोशनी में मैंने अम्मा के चेहरे पर सघन चिंता देखी।

“आग में जलने से तो उनका भाग जाना ही बेहतर है ऐसे उनकी जान तो बचेगी।” अम्मा की बात का जवाब मधु ने दिया। फिर वो मुझसे बोली, “भैया हमें तुरंत यहाँ से निकलना होगा।”

मैंने मधु के चेहरे पर एक अजब सा डर, एक अजब सी चिंता देखी। उसकी ये चिंता वाजिब भी थी क्योंकि वे दबंग लठैत चमारन टोला के एक-एक

घर का दरवाजा खुलवाकर हमें तलाश रहे थे। जिन घरों के दरवाजे खुलने में समय ले रहे थे उन पर कुल्हाड़े बरसा कर तोड़ा जा रहा था। सबसे अजब बात तो ये थी कि जहाँ गाँव के एक हिस्से पर आफत बरस रही थी वहीं गाँव के बाकी हिस्से से कोई भी हमें बचाने के लिये नहीं आ रहा था। बल्कि सब अपनी-अपनी छतों पर खड़े होकर तमाशा देख रहे थे। मैं जानता था हमारे मुहल्ले के अलावा बाकी गाँव सवर्ण था और जबकि वे सब हमारी बरबादी का तमाशा देख रहे थे तो फिर उनसे किसी भी मदद की उम्मीद करना बेमानी थी। हमें अपनी हिफाज़त खुद करनी थी और अब मुझे मधु की बात सही लग रही थी। हमें यहाँ से तुरंत निकल जाना चाहिये। हब हमारी हिफाज़त तभी हो सकती थी जब हम ये गाँव ख़ामोशी से छोड़ दे।

रात का नीम अंधेरा हमारा सहायक बना। हम अंधेरे में धीरे-धीरे ख़ामोशी से अपने गाँव से दूर हो रहे थे। हमें दी जा रही गालियों की आवाज़ अब धीमी हो चली थी। किसी राह पर मुड़ने से पहले मैंने गाँव पर आखिरी नज़र डाली तो अपने घर के साथ गोंडे को भी जलता हुआ पाया।

नई संधि, नये समझौते का प्रयास

“अब आपको माननीय मुख्यमंत्री जी से मिलकर अपनी शिकायत बतानी होगी।” लुबना मधु के जख़्मों पर कोई एन्टिसेप्टिक क्रीम लगाते हुए बोली।

बीती रात जब हमारा घर धूँ-धूँ करके जल रहा था और हम अपनी जान बचाते हुए शहर की ओर भाग रहे थे तो एक जिप्सी हमारे पास आकर रूकी। यूँ किसी जिप्सी के अपने पास रूकने से हमारे भीतर दहशत भर गई थी। हमारे दिल घबराहट से बुरी तरह धड़क रहे थे। ड्राइवर सीट पर एक अनजान शख़्स को देखकर हमारी साँसें रूक गईं पर तभी दूसरी सीट का दरवाजा खुला और उसने सबसे बेपरवाह होकर मेरे गले लगते हुए मेरे शरीर का अंग टटोल कर मुझसे न जाने कितनी बार बेताबी से पूछा, “कृणाल आप ठीक तो हो न?”

अपने सामने यूँ लवी को पाकर दिल में एक उम्मीद जगी। अम्मा, दादा, मधु और एक अनजान शख्स की मौजूदगी से बेपरवाह होकर मैंने भी लवी को, अपनी प्रेयसी को अपने सीने में भींच लिया।

“भाभी आप यहाँ?” मधु के इस सम्बोधन पर लवी शर्माकर मुझसे अलग हो गई और जब उसकी नज़र मेरे अम्मा, दादा पर पड़ी तो वो बिल्कुल ही लाज से गड़ गई। थोड़ी देर में वो सम्हलते हुए बोली, “चलो सब लोग गाड़ी में बैठो जल्दी से।”

लवी की बात सुनकर गाड़ी में बैठते हुए मैंने ड्राइविंग सीट पर बैठे शख्स को देखकर लवी की ओर सवालिया नज़रों से देखा। चांद-तारों की नीम रोशनी में लवी मेरी परेशानी समझते हुए बोली, “आप फ़राज़ है, एक पत्रकार। सफ़दर अंकल के दोस्त के बेटे।”

लवी की बात से मुतमुईन होकर मैं फ़राज़ को अभिवादन करके गाड़ी में बैठ गया। और मेरे साथ बाकी के सब लोग भी। जब फ़राज़ ने गाड़ी स्टार्ट की तो मैंने अपने बगल में बैठी लवी से पूछा, “लुबना तुम्हें कैसे पला चला आज यहाँ ये हादसा हमारे साथ होने वाला है।”

वो मेरे अम्मा-दादा की ओर देखकर बोली, “कृणाल पहले घर चलो वहाँ चलकर सब बताती हूँ।” लवी की बात को काटना मेरे बस में नहीं था। मैं ख़ामोश हो गया।

लवी, मधु को मरहम लगाते हुए कनखियों से मुझे देख रही थी। मैं उठकर वहाँ से लवी के कमरे में आ गया। मैं पहले भी लवी के कमरे में आ चुका था। खिड़की से परदा सरका कर मैं खड़ा हो गया।

“नाराज हो मुझसे?” लवी की आवाज़ सुनकर मैंने पलटकर उसे देखा। वह हाथ में चाय का कप लिये थी। मुझे ख़ामोश देखकर वो बोली अकरम चाचा ने चाचा-चाची के लिये चाय बनाई थी जो मुझे लगा आपको भी शायद चाय की जरूरत हो।” लवी ने चाय का कप मेरी ओर बढ़ा दिया। अकरम चाचा, लुबना के घर पर खानसामा थे और लवी ने चाचा-चाची का सम्बोधन मेरे अम्मा-दादा के लिये किया था।

“नाराज़ और तुमसे लवी। तुम ये ख्याल भी अपने जेहन में कैसे ला सकती हो लवी।” मैंने लुबना के हाथ से चाय का कप लेकर कहा।

“मैंने आपसे रात गाड़ी में अपने वहाँ पहुँचने की वजह जो नहीं बताई।” लवी घूमकर मेरी पीछे पहुँच कर मेरी पीठ पर सिर टिकाते हुए बोली।

मैंने चाय का कप खिड़की के संगमरमर पर रखकर लवी की बांह पकड़ उसे अपने सामने लाकर उसकी आँखों में झाँक कर कहा, “और जो तुम सात जनम तक मुझसे कोई बात बताने के लिये मना करो तो भी मेरी तुमसे नाराज होने की ये वजह नहीं हो सकती।”

“मुझसे संजू मिली थी।” कहकर लवी ने खिड़की पर रखी मेरी पी हुई झूठी चाय का एक घूंट भरा और वापस उसे वहीं रख दिया।

“क्या कहा उसने?” मैंने उत्तेजित होकर पूछा।

“वही जो बीती रात हुआ।”

“मतलब?”

“मतलब उसने कहा था कि जो आप उससे दूर हैं, उसके नहीं हो सकते तो वो आपको मिटा देगी। और जबकि आप जानते हो कुणाल! संजू अपनी दी गई धमकी पूरी जरूर करती है। हमने कविता के मामले में भी यही देखा था। इसलिये मैंने फ़राज़ से बात की और वो चलने को तैयार हो गया।”

“और तुम वहाँ आ गई जहाँ दबंग तांडव कर रहे थे। अगर वहाँ तुम्हें कुछ हो जाता तो?”

“और जो आपको कुछ हो जाता?” कहकर लवी मेरे सीने पर अपना सिर रखकर सिसक पड़ी। मैं उसका सिर और पीठ सहलाता रहा। मेरे स्पर्श से उसका रोना रुक गया पर वो अब भी मेरे सीने में अपना सिर छुपाये खड़ी थी।

‘टक-टक-टक’ दरवाजे पर हुई नॉक की आवाज़ सुनकर हम चौंक पड़े। दरवाजे पर लवी की अम्मी खड़ी थी। उन्हें देखकर हम दोनों तुरंत एक-दूसरे से अलग होकर खड़े हो गये।

“हमें तुम्हारी दोस्ती से कोई ऐतराज नहीं।” लवी की अम्मी ने हमारे करीब आकर कहा। उन्हें देखकर मैंने सिर झुका लिया और लवी ने भी।

“पर हमारे यहाँ दोस्ती की हदें तय हैं। यहाँ सब कुछ दोस्ती में जायज नहीं।” मैंने लवी की अम्मी की बात में सख़्ती महसूस की। अपनी अम्मी की बात सुनकर लवी बोली, “वो अम्मी पर हम ..।” लवी की बात पूरी होने से पहले ही आंटी बोल पड़ी, “लुबना अभी मेरी बात पूरी नहीं हुई है। तुम अपने तर्क मेरी पूरी बात सुनने के बाद रखना।”

आंटी की डांट भरी बात सुनकर लवी की आँखें डबडबा गईं। उसकी आँखों में आँसू देखकर मैं तड़प उठा और मैंने तड़पकर कहा, “आंटी, इसमें लुबना की कोई ख़ता नहीं।”

“कुणाल जब मैंने अपनी अधूरी बात पर लुबना को कुछ बोलने से मना किया तो इसका मतलब ये भी है कि मैंने तुम्हें भी मना किया है।” आंटी की बात सुनकर मैं सहम गया। कुछ देर ख़ामोश रह कर आंटी बोली “ये सब दोस्ती में भले ही जायज न हो पर मियां-बीबी के लिये जायज है। निकाह के बाद ‘इसे’ बुराई की नज़र से नहीं देखा जाता।”

उनकी बात सुनकर मैं बहुत खुश हुआ पर चुप रहा। पर लवी आगे बढ़कर अपनी अम्मी का हाथ पकड़कर बोली, “अम्मी हमें समझने की लिये थैक्यू वेरी मचा।”

“अभी भी मेरी बात पूरी नहीं हुई है।” आंटी लवी से हाथ छुड़ाकर बोली, “तुम ये तो जानती होगी लुबना कि ‘निकाह’ के लिए जरूरी है कि दोनों ही तरफ के लोग इस्लाम मानने वाले हों। उन्हीं के बीच यह रिश्ता मुमकिन है। कुणाल को इस्लाम क़बूल करना होगा।”

“बट अम्मी ये गलत है। हर इंसान को अपने तौर-तरीके से जीने का हक़ है अब जबकि मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि कुणाल किस धर्म से है, कौन जाति से है तो फिर आप क्यों उसे इस्लाम क़बूल करने को क्यों कह रही है।” अपनी अम्मी की बात सुनकर लवी ने बड़ी तेजी से उनकी बात का विरोध किया।

“लुबना कुणाल किस मज़हब, किस जाति से है. मुझे भी इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता।” आंटी बोली।

“और जब आपको भी कोई फ़र्क नहीं पड़ता तो फिर आप हमारे सामने शर्त क्यों रख रही हैं।” लवी की आवाज़ अब थोड़ी तेज हो चली थी ओर तेज आवाज़ सुनकर मैं उसे सावधान करते हुए बोला, “लवी, अपनी अम्मी से तेज आवाज़ में बात करना बेअदबी की निषानी है।”

“सॉरी कुणाल, सॉरी अम्मी, बेअदबी के लिये लेकिन इस वक्त आपकी बात जायज नहीं है।”

“देखो लुबना बेटा हमें ना तुम दोनों की दोस्ती से ऐतराज है और न ही तुम्हारे निकाह करके मियां-बीबी बनने से। हमें कुणाल के गैर-मुसलमान होने से भी ऐतराज नहीं है। पर हमें इसी समाज में रहना है और समाज की रवायते भी माननी है। इस्लाम में एक मुस्लिम की किसी गैर-मुस्लिम से षादी नाजायज़

मानी जाती है और मैं तुम दोनों के किसी बचकाने कदम से पूरे परिवार पर कोई मुसीबत की दावत नहीं आने दे सकती।” यह कहकर आंटी खिड़की पर रखा कप उठाकर वहाँ से जाने लगी और फिर दरवाजे पर रूककर बोली, “हमें उम्मीद है तुम दोनों को मेरी बात मानने में कोई बुराई नज़र नहीं आयेगी।” यह कहकर आंटी चली गई और लवी एक लम्बी सांस लेकर धम्म से बेड पर बैठते हुए बोली, “सच कहा है किसी ने मुसीबते ताउम्र पीछा नहीं छोड़ती।”

“पर लवी मुझे आंटी की बात में कोई मुसीबत नज़र नहीं आई।” मैंने हाथ से उसके सिर के बाल उलझाये। मेरा हाथ खींचकर अपने बगल में बिठाते हुए लवी बोली, “सच कह रहे हो कुणाल। आपने इतनी मुसीबते झेली है कि अब आपको ये बातें मुसीबत नहीं लगती।” फिर थोड़ी देर रूककर वो बोली, “कुणाल चलो तैयार हो जाओ हमें सी.एम. से मिलने जाना है।” उसकी बात सुनकर मैंने उसके कंधे पर सिर टिका दिया और वो धीरे-धीरे मेरा सिर सहलाने लगी।

अब जबकि पुलिस स्टेशन में हमारी शिकायत दर्ज होना किसी किले को फतह करने के बराबर था। अब जबकि जिला कलेक्टर से मिलने के बाद हमारे घर जला दिये गये तो फिर हम सी.एम. से सरलता से मिल पायेंगे, हमारा ये सोचना किसी बच्चे का हाथ बढ़ाकर चांद पकड़ने की सोच के बराबर था।

ये दूसरा दिन था जब हम मुख्यमंत्री जी से मिलने में असफल रहे। मुख्यमंत्री से मिलना तो दूर हमारी मुलाकात किसी सचिव से भी नहीं हो पाई थी। अम्मा और दादा वहीं सचिवालय के सामने एक पेड़ की छांव में थककर बैठ गये थे। इतनी दौड़-धूप शायद उनकी कृशकाय शरीर से मुमकिन नहीं था। पर वो फिर भी अपनी बेटी को इन्साफ दिलाने के लिये संघर्ष कर रहे थे। हम एक चाय की छोटी दुकान पर आ गये। मधु कांच के दो गिलास में चाय अम्मा-दादा को चाय दे आई। लवी ने एक-एक गिलास चाय मुझे और मधु को देकर खुद भी चाय पीते हुए वहाँ दुकान पर रखे अखबार के पन्ने पलटने लगी।

“कुणाल सप्तपुर तुम्हारे गाँव का नाम है?” लवी ने अपनी कोहनी मेरे शरीर में टच करके पूछा।

“हाँ लवी क्यों?” मैं थोड़ा बेजारी से बोला।

“अखबार में तुम्हारे गाँव की खबर छपी है।” लवी ने अखबार का वो पेज मेरी ओर बढ़ाया जो वो पढ़ रही थी।

“अखबार में मेरे गाँव की खबर!” कहकर मैंने अखबार पर आँखें गड़ा दी। पेज के एक कोने में छोटी सी खबर छपी थी जिसकी हेड लाईन थी - ‘गाँव सप्तपुर के हरिजन टोले में लगी आग से कुछ घर जल कर खाक’

मैंने जल्द से खबर पढ़ी पर उसमें आग लगने की वजह अज्ञात बताई गई। न ही किसी के हताहत होने की खबर, न ही दबंग विधायक पाण्डे जिसने ये अग्निकांड करवाया था उसका कोई जिक्र। न ही उस अग्निकांड के बाद गाँव से गायब हुए मेरे परिवार की कोई चर्चा।

“ये कैसी खबर है?” मैंने निराशा से कहा।

“ये बात मेरे दिमाग में पहले क्यों नहीं आई।” लवी अपने होंठों में बुदबुदा कर खड़ी हो गई।

“कौन सी बात?” मैं भी लवी के साथ खड़ा हो गया था।

“सत्याग्रह और मीडिया।” कहकर लवी आगे बढ़ गई। लवी की भाव-भंगिमा देखकर मैं समझ गया था कि उसने कोई ठोस निर्णय लिया है। लवी का कहना था चीजें बदलेंगी, इंफैक्ट उसके हिसाब से चीजें बदल रही थी। पर मुझे उसकी बात पर यकीन करना थोड़ा कठिन लगा।

अब जबकि लवी की हर बात पर मैं सौ फीसदी यकीन करता आया था तो फिर उसकी बदलाव वाली बात पर यकीन न आने की वजह इतनी भर थी कि न जाने कितनी सदियों में हम दलितों में ऐसा कुछ बदलाव नहीं आया था जिससे हमारा जीवन जरा सा भी सुखमय बना हो।

आज दूसरा दिन था - मैं, मधु और अम्मा-दादा के साथ सचिवालय के सामने धरने पर बैठा था। हमारी मांग बस इतनी भर थी कि मधु के साथ जो भी हुआ उसका न्याय हो। उन पुलिस अफसरों पर कार्यवाई हो जो दोषी थे। हमने बैनर और तख्ती पर विधायक पाण्डे और विधायक बिन्दर लाल का नाम अपराधियों के रूप में लिख रखा था। लवी की कोशिशों से आज हमारे साथ कविता और उसके मम्मी-पापा भी धरने पर शामिल हो गये। तमाम कोशिशों के बाद कविता की FIR दर्ज तो हुई पर अब तक पुलिस ने मिसेज रंजना पर कोई कार्यवाई नहीं की थी। फ़राज़ ने हमारे साथ हुई ज्यादती को अपने अखबार में

छापा था। लवी अखबार अपने साथ लाई थी। पूरी खबर पढ़ने के बाद मैंने कहा, “फ़राज़ ईमानदार पत्रकार है, उसने बड़ी बहादुरी का परिचय दिया है हम मजलूमों का सच छाप के।”

मेरी बात सुनकर लवी मुस्कराकर बोली, “और मैं कहूंगी आप भी बहादुर है, मजलूम नहीं।”

लवी की बातें हमेशा मुझे स्फूर्ति देती आई थी। सच तो यह है कि लवी हमारे लिये जो कर रही थी उसके लिये मुझे उसकी फिक्र होने लगी।

मैं संजू, बंटी, मिसेज अंजली, मिसेज रंजना, विधायक बिन्दर और विधायक पाण्डे की बदनियति से पूरी तरह वाकिफ़ हो गया था।

आज फ़राज़ लवी के साथ नहीं आया था। यूँ लवी को तन्हा भागदौड़ करते देख मेरा फिक्रमन्द होना लाज़िमी था। “फ़राज़ कहाँ है?” मेरे पूछने पर लवी ने बताया वो मेरे गाँव सप्तपुर गया है. वहाँ का सच सबके सामने लाने के लिये। फ़राज़ वास्तव में बेख़ौफ़ पत्रकार था।

उसने सप्तपुर गाँव का सच अपने अखबार के माध्यम से सबके सामने रखा। उसकी ये मुहिम रंग लाई। सप्तपुर गाँव के सारे दलित अब हमारे साथ सचिवालय के सामने धरने पर थे। उस रात न सिर्फ़ मेरा घर जलाया गया था बल्कि रक्ष समेत कई लोगों के घर उस अग्निकांड में स्वाहा हो गये थे। उस रात न सिर्फ़ दलितों के घर जलाये गये बल्कि लड़कियों और औरतों के साथ दुर्व्यवहार भी किया गया। मेरा साथ देने के लिए सजा के तौर पर रक्ष के सामने ही उसकी बहन सोनम के साथ दबंगों ने उस रात बलात्कार किया।

फ़राज़ ने रक्ष को और बाकी के गाँव वालों को न्याय दिलाने के लिये मोटीवेट किया और वे सब अपने हक़ और न्याय पाने के लिये हमारे साथ सचिवालय के सामने आ जुड़े थे। यूँ इस तरह अब सचिवालय के सामने बैठे हम दलितों की संख्या साठ के पार हो गई थी। धरने पर बैठने वालों में बूढ़े भी थे, जवान भी, औरतें और बच्चें भी थे। हमारी संख्या और फ़राज़ के हमारे लिये लिखे गये लेखों का असर हुआ था। अब हमारी बात जानने दूसरे अखबार के पत्रकार भी आ रहे थे। कुछ नेता भी आये थे।

अब लवी की कही ‘बदलाव’ वाली बात पर मुझे यकीन हो चला था। पर आज की सुबह काफी सूरज चढ़ने के बाद भी लवी और फ़राज़ नहीं आये थे। नहीं

तो वो सुबह-सवेरे ही हमारी खबर लेने वे दोनों हमारे पास आ जाते थे, वो अखबार साथ में लिये हुए जिसमें हमारे बारे में खबर होती थी। जब काफी इंतजार के बाद भी लवी या फ़राज़ में से कोई नहीं आया तो मेरी बेचैनी बढ़ने लगी। मैं बेचैनी के आलम में टहलते हुए थोड़ी दूर तक एक स्टाल से शहर का सबसे प्रतिष्ठित अखबार खरीद लाया इस उम्मीद से, शायद उसमें हमारी मांगों को लेकर कुछ छपा हो। अखबार के मुख्य पृष्ठ पर छपी खबर को देखकर मैं कांप गया। मेरे पाँव तले की ज़मीन मानों किसी भयंकर भूकंप के वजह से हिल उठी हो। मुझे न सिर्फ अपना शरीर कांपता महसूस हुआ बल्कि मुझे अपने आस-पास की हर चीज कांपती हुई लगी।

‘मशहूर रेस्तरां लुबना गज़ल पर छापा और खाने में बीफ़ के सैम्पल जब्त’ .. हेडलाइन पढ़ने के बाद मेरे कांपते हाथ अखबार को संभाल न सके और वो छिटक कर दूर जा गिरा। गिरते अखबार के साथ मैं भी अपने कांपते पाँव के साथ लड़खड़ाकर गिर पड़ा। रक्ष जो षायद मुझे वहाँ देखकर मेरे पीछे आया होगा। उसने मुझे गिरने से संभालते हुए कहा, “क्या हुआ कुणाल! अखबार में क्या छपा है?”

मेरे चुप रहने पर उसने ज़मीन पर पड़े फड़फड़ा रहे अखबार को उठाकर उसके मुख्यपृष्ठ पर छपी खबर को पढ़ने लगा। बीते दिनों में रक्ष मेरे और लवी के अफेयर के बारे में जान चुका था। वो ये भी जानता था लवी का ही नाम लुबना है और वो ‘लुबना गज़ल’ रेस्तरां के मालिक की बेटी है।

“तो क्या लुबना के रेस्तरां में बीफ़ परोसा जाता था?” रक्ष ने सवाल किया।

“नहीं, कभी नहीं। जिस किसी भी चीज से समाज के किसी भी व्यक्ति की भावनायें आहत हो उसे लुबना और उसके घर वाले हरगिज़ नहीं कर सकते।” मैंने कांपती अवस्था में भी दृढ़ता से कहा।

“तो! अब हम क्या करेंगे?” रक्ष ने वो सवाल किया जिसका जवाब मेरे पास था ही नहीं। पर अब जवाब देना अनिवार्य था इसलिये मैं खड़े होते हुए बोला, “अब हम क्या करेंगे मैं नहीं जानता रक्ष, पर हम कुछ न कुछ करेंगे जरूर।” यह कहकर मैं वहाँ से जाने लगा तो रक्ष ने पीछे से आवाज़ दी, “कुणाल कहाँ जा रहे हो?”

“लवी से मिलने।” कहकर मैंने अपनी चाल की रफ्तार बढ़ा दी।

लवी के घर के बाहर लोगों का हुजूम था और ये हुजूम गन्दी गालियों के साथ 'लुबना गज़ल रेस्टोरेंट' के मालिक के विरुद्ध नारेबाजी कर रहे थे। खाने में बीफ़ की बात को लेकर ये भीड़ आक्रोशित थी और इसी आक्रोश के चलते लवी के घर के कई कांच फेंके गये पत्थरों की वजह से टूट चुके थे। लवी न सिर्फ़ मेरी प्रेयसी थी बल्कि वो मेरी मार्गदर्शक भी थी। मैं जानता था वो घर के भीतर होगी और इस वक्त बेहद मुसीबत में होगी। इतनी भीड़ में मैं सामने से घर के अन्दर नहीं जा सकता था और न ही इतनी आक्रोशित भीड़ के सामने घर का दरवाजा खुलवाना बुद्धिमाना का काम था। लवी के घर से मैं पूर्णतया परिचित था और इसलिए मैं चुपके से पीछे गली में खुलने वाले घर के दरवाजे की ओर बढ़ गया। मैंने जैसे ही सूनसान और गन्दी गली में कदम रखा वैसे ही किसी ने पीछे से आकर सख्ती से मेरा हाथ पकड़ लिया। मैंने सिहरते रोयों के साथ देखा तो वो एक बुर्काबन्द लड़की थी।

“क. क. कौ. कौन?” मैं हकलाया।

“आप यहाँ क्या कर रहे है कुणाल?” मैंने उस बुर्का पहने लड़की की आवाज़ पहचान ली। वो लवी थी।

“लवी तुम इस ड्रेस में?” मैंने पहली बार लवी को बुर्के वाली ड्रेस में देखा था। लवी ने अपने चेहरे से हिजाब हटाकर कहा, “कुणाल आप वापस धरने पर जाइये। ये सब आपकी लड़ाई को कमजोर करने के लिये है।”

“पर लवी, अंकल-आंटी और तुम यहाँ इस घर में सुरक्षित नहीं हो?”

“हम सब सुरक्षित है। अम्मी-पापा मेरे पेंटिंग वर्कशॉप वाले फ्लैट पर है और उसका पता किसी को नहीं है। और मैं जल्द ही इस झूठ का पर्दाफ़ाश कर दूंगी। बस आप अपनी लड़ाई कमजोर मत होने देना।”

“पर लवी तुम यहाँ, बुर्के में। अगर भीड़ ने तुम्हें पहचान लिया तो?”

“कुणाल मेरी छवि एक बेहद माडर्न लड़की की है। कोई भी उम्मीद नहीं करेगा कि मैं बुर्के में भी हो सकती हूँ।” कहकर लवी मेरा हाथ पकड़कर मुझे गली के दूसरे छोर की तरफ ले गई।

“पर लवी मुझे लगता है इस वक्त तुम्हें, मेरी जरूरत है।”

“मैं जानती थी कि आप ये खबर जानकर बेहद परेशान हो जायेंगे। इसलिए मैं आपसे मिलने सचिवालय के सामने पहुँची तो वहाँ रक्ष ने बताया आप अखबार की खबर पढ़ कर मुझसे मिलने गये हैं। इसलिये मैं यहाँ तुरन्त चली

आई। अब आप धरने पर जाईये मैं जल्द आकर आपसे मिलुंगी। अभी मैं वकील अंकल के पास जा रही हूँ।”

अब तक हम गली के दूसरे छोर पर आ गये थे। ये छोर एक बड़ी सड़क पर खुलता था। मैं लवी से कुछ कह पाता तब तक वो “बाय कुणाल, टेक केयर” कहकर एक कार में आगे बैठ गई। मैं जानता था हम जिनके विरुद्ध आवाज़ उठा रहे हैं वो बेहद ताकतवर हैं। वो हमें रोकने के लिए और हमेशा दलित बनाये रखने के लिए अपनी ताकत का इस्तेमाल भी कर रहे थे। हमारे धरने को निष्फल करने की कोशिश उन्होंने अब बैंक डोर से की थी। ये उनके ही रसूख का असर था कि ठीक सचिवालय के सामने अपने आप पर हुए जुल्मों को बयां करने के लिए बैठे हम लोगों के पास उन्होंने जल्दी से किसी न्यूज़ पेपर के पत्रकार को नहीं आने दिया। पर जब धीरे-धीरे मीडिया हमें तवज्जो देने लगी तो हमें चुप कराने के लिए उन्होंने अपना सबसे घातक वार हम पर किया। पर लवी एक बहादुर लड़की थी और उसके पापा भी एक रसूख वाले व्यक्ति थे। मलिक सफ़दर हयात जैसे प्रतिष्ठित वकील से उनके आत्मीय सम्बन्ध थे। पर जिस मामले के तहत उनका रेस्टोरेंट बन्द किया गया था वो बेहद ही संवेदनशील और धार्मिक मामला था। खाने में बीफ़ के पाये जाने को साम्प्रदायिक रंग देकर लुबना और उसके परिवार के साथ कुछ भी किया जा सकता था। हालांकि लुबना गज़ल रेस्तरा में वेज और नॉनवेज दोनों ही भोजन परोसा जाता था। पर मैं जानता था लुबना गज़ल रेस्तरा में बीफ़ का भोजन के रूप में हरगिज़ इस्तेमाल नहीं होता था। या तो जिसे बीफ़ का गोश्त बताया गया था वो किसी बकरे आदि का गोश्त रहा होगा या फिर किसी ने साजिशन वहाँ बीफ़ का गोश्त प्लांट किया होगा। हालांकि लवी ने मुझे ढ़ेरो तसल्लियां देकर मुतमईन करने की कोशिश की। कि वो इस मुसीबत से पार पा लेगी। पर मैं जानता था ये सब लवी के लिये इतना आसान नहीं रहेगा क्योंकि एक तो यह धार्मिक मामला बन गया था, दूसरे हमारे विरोधी अत्यंत शक्तिशाली और ऊँची पहुँच वाले थे।

लवी और उसकी फैमली पर आई इस मुसीबत का सबब यकीनन मैं था। मेरी ही मदद के एवज में मिसेज रंजना और विधायक पाण्डे जैसे मक्कार लोगों ने लुबना और उसके परिवार के विरुद्ध यह साजिश रची थी। मैं इस वक्त खुद को धिक्कार रहा था। सच मैं कितना मनहूस था मेरे किये कर्मों की वजह का दुष्परिणाम पहले कविता, फिर मधु और सोनम ने भोगे थे। और अब उनकी आंच लवी पर पड़ रही थी।

हमारे अनशन वाले पंडाल के पास दो-तीन गाड़ियों के रूकने से मेरी सोच का क्रम टूट गया। अचानक गाड़ी से उतर कर विधायक पाण्डे हमारी ओर आने लगे। उन्हें देखकर मैं भावभ्रम बना रहा पर मेरा गला कसैला हो गया था। उनके साथ बाकी गाड़ियों में उनके समर्थक थे और कुछ उनके फेंके पैसों पर पलने वाले पत्रकार भी। मधु पर एक विचित्र मुस्कान डालकर वो मेरे पास नीचे बिछी धूल भरी फटी दरी पर बैठ गये। मेरा जी किया कि मैं मुक्का मार के उनके वे होठ फाड़ दूँ जिससे मुस्कराकर उसने अभी मधु को देखा था। पर मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। मेरे ऐसा कुछ न करने की वजह ये भी था कि लवी ने मुझे हिदायत दी थी कि मैं किसी भी तरह रोष में आकर अपने इस धरने को हिंसक न बनने दूँ और मैं एक बार खुदा का कहा ठुकरा सकता था पर लवी की नहीं। मैं न सिर्फ लवी से मुहब्बत करता था बल्कि वो मेरी इबादत में भी शामिल थी।

“अगर तुम चाहो तो तुम्हारी सारी समस्याओं का हल निकल सकता है। इसके लिए इस धरने प्रदर्शन की जरूरत क्या है। और सच कहूँ तो इससे कुछ भी हासिल नहीं होगा।” विधायक पाण्डे फुसफुसाकर बोला।

“और वो हल क्या होगा विधायक पाण्डे जी?” मैं थोड़ा संभलकर बैठते हुए बोला, “क्या उस हल के लिए मुझे मेरी बहन का अपनी आँखों के सामने बलात्कार देखना होगा?”

“नही कुणाल, बल्कि हम तुम्हें इस दलित नाम के कलंक से छुटकारा दिलाना चाहते हैं। तुम्हें और तुम्हारे परिवार को सम्मान दिलाना चाहते हैं।” विधायक पाण्डे भावुकता से बोला हालांकि मैं ये भली भांति जानता था उसकी ये भावुकता बनावटी है।

“जो आप इतना सम्मान हमें देना चाहते हैं तो बदले में हमसे भी कुछ चाहते होंगे विधायक जी?”

“हाँ, तुम अपना धरना भी समाप्त कर दो।”

“और जो नहीं किया तो .।” मैंने अपनी बात अधूरी छोड़ी।

“तो तुम्हारी प्रेमिका लुबना और उसका परिवार इस मुसीबत से बाहर न आ सकेगा।” मक्कार विधायक पाण्डे से लुबना का जिक्र सुनते ही मेरा खून खौल उठा। हालांकि मैं जानता था कि इस वक्त मेरी थोड़ी सी भी नासमझी, थोड़ी भी जल्दबाजी, लवी की मुसीबतें बढ़ा सकती है। इसलिये मैंने धैर्य रखते हुए कहा,

“विधायक जी! पर हमारे धरने को खत्म कर देने भर से हमारा सम्मान हमें कैसे मिल सकता है?”

“मैं तुम्हारे साथ अपनी बेटी बंटी का विवाह कर दूँगा। एक ब्राह्मण विधायक की लड़की से शादी करते ही तुम्हें अपना खोया सारा सम्मान वापस मिल जायेगा।” विधायक पाण्डे के इस अप्रत्याशित प्रस्ताव की गहराई समझने के लिए मैं अभी चुप था तभी विधायक पाण्डे ने खड़े होकर एक मंझे हुए नेता की तरह बोले, “भाईयों और बहनों अब जबकि तुम सब दलित हो और मैं ब्राह्मण तो भी मैं अपनी बेटी की शादी इस दलित लड़के से करने का ऐलान करता हूँ। मुझे लगता है मेरी इस पहल से दलितों को समाज में बराबरी का दर्जा और सम्मान प्राप्त होगा।” विधायक पाण्डे की बात सुनकर उनके साथ आये समर्थक तालियां बजाने लगे और पत्रकार उनके इस क्रांतिकारी कदम के बारे में सवाल करने लगे। मुझे उम्मीद थी कि पत्रकार मुझसे भी सवाल करेंगे और उस वक्त मैं शायद उन्हें विधायक पाण्डे की बात का कोई माकूल जवाब दे पाऊँगा। पर कोई भी पत्रकार मेरे पास नहीं आया। शायद उन्हें विधायक पाण्डे ने पहले से मुझसे कोई सवाल न करने की हिदायत दे रखी होगी। जाते वक्त विधायक पाण्डे मेरे पास आये और लोगों को दिखाने के लिए पीठ सहलाते हुए धीमी आवाज़ में बोले, “मैं तुम्हें कल तक सोचने का समय देता हूँ मुझे उम्मीद है तुम लुबना और उसके परिवार को बचाने तथा अपना सम्मान पाने की राह पर ही आगे बढ़ोगे। यह कहकर विधायक पाण्डे अपने लाव-लश्कर के साथ चले गये और मैं हताश होकर धूल भरी दरी पर धम्म से बैठ गया।

क्या सिर्फ अपने लिये, अपने हक के लिये धरना, प्रदर्शन न्यायोचित था? अब जबकि लवी मेरी वजह से परिवार सहित घोर सकंट में थी तो लाज़िमी था कि मैं उसके लिये कुछ करता। भले ही उसने मुझे सिर्फ अपनी लड़ाई पर ध्यान देने को कहा था। पर मैं लवी से प्यार करता था, उसे अपनी सहचरी बनाना मेरे जीवन का पहला उद्देश्य था। लेकिन इस वक्त मेरे दिमाग में कुछ और ही चल रहा था। ये इसी ‘कुछ और’ का असर था जो मैं विधायक पाण्डे के बंगले पर गया था।

इस बंगले पर मैं पहले भी आ चुका था मधु को उनकी ‘सेवा’ से निकालने के लिये। ये बात और थी उस रोज मेरे साथ लवी थी और आज मैं यहाँ लवी के बिना आया था। पर आया लवी के लिये ही था। बाहर की बैठक में जब

मैं लवी के ख्यालों में खोया था तभी “मैं जानता था कि तुम आओगे।” की आवाज़ ने मुझे ख्यालों से बाहर खींच लिया था।

ये आवाज़ विधायक पाण्डे की थी। पहले जब भी मैं विधायक पाण्डे से मिलता था मैंने उन्हें राम-जुहार जरूर करता था पर आज मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। यहाँ तक उन्हें देखकर मैं उठा भी नहीं जबकि मैं उनके बंगले में, उनके ड्राइंगरूम में बैठा था।

“हाँ मैं यहाँ आया जरूर हूँ विधायक जी। पर आपको ये बताने आया हूँ कि मैं आपकी बातों से सहमत नहीं हूँ।”

“अच्छा एक बात बताओ कुणाल . अगर तुम्हारे सामने एक मारुती 800 की नई गाड़ी हो और एक सेकेण्ड हैंड मर्सडीज़ तो तुम उपहार स्वरूप किसे लेना चाहोगे?”

“मेरे बाबा कहा करते हैं कि जिस राह जाना नहीं उसे मील क्या गिनना।”

“मतलब मैं समझा नहीं?” विधायक पाण्डे ने सोफे पर करवट बदली।

“मतलब ये विधायक जी कि हमारी किस्मत अब तक सायकिल से आगे नहीं बढ़ पाई फिर मारुती 800 और मर्सडीज़ की बात करना ही बेमानी है।”

“ठीक है पर अगर किस्मत से ऐसा हुआ तो क्या करोगे तुम?”

“तो मैं नई मारुती 800 की जगह सेकेण्ड हैंड मर्सडीज़ चुनूंगा।” मैंने अपनी बाईं जांघ पर दाईं जांघ रखकर रिलेक्स होकर कहा।

“मेरी बात से असहमति की कोई वजह ही नहीं है।” विधायक पाण्डे की बात का जवाब मैं देना ही चाहता था तभी मैंने ड्राइंगरूम में बंदी को आते हुए देखा। हाथ में ट्रे और ट्रे में लाल रंग के शर्बत के तीन गिलास। बंदी ट्रे लेकर मेरे सामने आई तो विधायक पाण्डे बोले, “लो कुणाल शर्बत पियो।”

“शराब की जगह शरबत का चलन कब से शुरू कर दिया।” बंदी का चेहरा देखकर मैंने ट्रे से शर्बत का गिलास उठा लिया। मुस्कराकर मुझे देखकर बंदी शर्बत का ट्रे लेकर अपने पापा यानी विधायक पाण्डे की ओर बढ़ी। उस वक्त मेरी नज़र बंदी के पेट पर पड़ी। उभरा हुआ पेट।

“वैसे तो मैंने बंदी से तन्हाई में कई बार बात की है पर विधायक जी, अगर आपकी इजाज़त हो तो क्या मैं बंदी से तन्हाई में बात कर सकता हूँ। हाँ, इसके लिये बंदी की रज़ामंदी भी जरूरी है।” मैंने शर्बत के घूंट भरते हुए बंदी के पास पहुँच कर कहा।

“ओह हाँ .. क्यों नहीं!” कहकर विधायक पाण्डे शर्बत के घूंट भरते वहाँ से चले गये और उनके जाते ही मैंने बंटी के पेट की ओर इशारा करके सीधा सवाल किया, “किसकी वजह से?”

बंटी कुछ देर चुपचाप मुझे खड़ी होकर देखती रही और फिर सोफे पर उस जगह जहाँ से अभी विधायक पाण्डे गये थे वहाँ पर बैठ गई। शर्बत के तीन-चार छोटे-छोटे घूंट भरकर वो बोली, “अभी जब मैं यहाँ आ ही रही थी तो तुमने पापा से कहा कि तुम्हें नई मारुति 800 की जगह सेकेण्ड हैण्ड मर्सडीज़ में इन्ट्रेस्ट है।” थोड़ा रूककर अपने पेट की ओर इशारा करके उसने अपनी बात पूरी की, “तो फिर इसकी वजह क्यों पूछ रहे हो?”

“बंटी उस वक्त तुम्हारे यहाँ आ जाने की वजह से मैं अपनी बात पूरी नहीं कर सका था।” कहकर मैं वापस उसी जगह बैठ गया जहाँ अब तक बैठा था। मेरी बात सुनकर बंटी ने शर्बत का एक और घूंट भरते हुए मुझे अपनी बात पूरी करने का इशारा किया। “गाड़ी और पत्नी चुनने में मेरी च्वाइस का टेस्ट अलग है।”

“सोच लो कुणाल।” शर्बत का गिलास मेज पर रखकर बंटी मेरे पास आकर मेरे गले में बाँहें डालकर बोली, “कहीं ऐसा न हो, न खुदा ही मिले न विसाले सनमा।”

“मतलबा।” मैंने मक्कारी से भरी बंटी की आँखों में देखकर कहा।

“यही कि मुझे मना करके कहीं ऐसा न हो न मैं ही मिलू न ही लवी।” कहकर बंटी ने अपनी बाँहों का घेरा मेरे गले पर थोड़ा तंग कर दिया। बंटी के होंठों से लवी का जिक्र सुनकर मुझे लवी का ख्याल आया। यकीनन बंटी मुझे धमका रही थी और इस धमकी की जद में मेरे साथ लवी थी। मुझे लवी पर कोई और मुसीबत नहीं आने देनी थी और इसके लिये मुझे वक्त चाहिये था। इसलिये मैंने कहा, “बंटी मैं तुमसे विवाह करने तो तैयार हूँ। और इस नाते मुझे ये जानने का हक है कि शादी के बाद मेरी पत्नी किसके बच्चे को जन्म देगी।” मेरी बात सुनकर बंटी खिलखिलाकर हँस पड़ी। और फिर खुद ही अपनी हँसी को काबू में करके बोली “शादी के बाद पति के हक से पूछोगे तब बता दूंगी।”

“ठीक है तभी पूछूंगा।” कहकर मैं वहाँ से जाने के लिये मुड़ा। कि तभी बंटी ने पीछे से मेरा कंधा पकड़ कर कहा, “तो बात पक्की समझू?”

“समझ सकती हो।” मैंने बिना मुड़े, बिना बंटी को देखे कहा और वहाँ से निकल गया।

संधि वर्सेस संधि

‘बंटी’ जिसके पेट में एक और जान थी। ‘बंटी’ जो कभी मेरी शय्या सहचरी थी। ‘बंटी’ जिसने संजू के साथ मिलकर मेरे खिलाफ साजिशें रची थी। आज वही ‘बंटी’ एक दलित से शादी करने की बात कर रही थी और बड़ी बात ये थी कि बंटी मुझसे शादी करे, ये प्रस्ताव खुद उसके पिता विधायक पाण्डे ने भरी मजलिस के सामने रखा था।

वही विधायक पाण्डे जिन्होंने मेरी बहन का शारीरिक शोषण किया। वही विधायक पाण्डे जिनके इषारे पर मेरी बहन मधु का गैंगरेप किया गया। वही विधायक पाण्डे जिन्होंने हमारे गाँव के सारे दलित टोले को आग से झुलसा दिया। वही विधायक पाण्डे जिनके भेजे लठैतों ने मेरे दोस्त रक्ष की बहन के साथ सामूहिक बलात्कार किया। अब वही विधायक पाण्डे जो अपनी प्रेगनेंट बेटी बंटी की शादी मुझसे करना चाहते थे तो मुझे इसमें साजिश की बू आ रही थी। ये शादी अगर हो जाती तो ये बंटी मेरे जीवन को और भी नरक बना देगी। अगरचे मैं इस शादी के लिए किसी तरह रज़ामंद नहीं हो सकता था। पर लवी का सवाल भी मेरे लिये बेहद अहमियत रखता था। उसकी जिंदगी का हर लम्हा मेरे लिये बेशकीमती था और मैं किसी भी कीमत पर लवी को मुसीबतों से दूर रखना चाहता था। मैंने अब तक अपनी उम्र में इतनी साजिशें देख ली थी कि साजिशों के रंग मैं बाखूबी पहचानने लगा था।

अब मैंने फैसला कर लिया था इन साजिशों के रंग पर एक और रंग चढ़ा देने का। मैंने भी फैसला कर लिया था इन साजिशों से निकलने के लिये दांव खेलने का। मैं जानता था खूबसूरत मिसेज अंजली जो मेरे शरीर की दीवानी है जिसके यौनांग की हसरत मेरे सहवास से ही शांत होती है। इसलिए मैंने अपने दांव खेलने की शुरुआत मिसेज अंजली से ही की। मेरी उम्मीद सच साबित हुई।

मिसेज अंजली अपने घर पर तन्हा थी। उनके हसबैंड मिस्टर सिंह हमेशा की तरह व्यवसाय के सिलसिले में घर से बाहर किसी दूसरे शहर में थे। मैंने देखा मिसेज अंजली का चेहरा तनिक निस्तेज पड़ चुका है। पर वो अब भी उतनी ही खूबसूरत लग रही थी। मुझे देखते ही वो मेरे गले से झूल कर मेरे अंग का मर्दन करने लगीं। उन्हें यूँ इस तरह बेसब्र देखकर मैंने सोचा क्या कोई औरत

को किसी मर्द के जिस्म की भूख ऐसी भी हो सकती है। ये मिसेज अंजली ही थी जिन्होंने अपनी इज्जत को रूसवा किया था और कोर्ट में भी मुझे खींचा था।

“क्या अब तक भी आपको कोई हमसफ़र नहीं मिला?” मैंने मिसेज अंजली को अपने से थोड़ा परे करके कहा।

“न.. न.. ना।” कहकर वो फिर से मेरे गले से झूल गई। मैंने उन्हें अपने गले से झूलते देखा और फिर उनके गुलाबी होंठों पर एक गाढ़ा बोसा लेकर कहा, “मुझे भी कोई तुमसा नहीं मिला।”

मेरी बात सुनकर वो पंजों पर उचक के अपनी गरदन लम्बी करते हुए अपने होंठ मेरी ठोड़ी पर रगड़ते हुए बोली, “फिर भी तुम बंटी से शादी करना चाहते हो।”

“हाँ बंटी से शादी कर रहा हूँ मैं, पर सिर्फ इसलिए क्योंकि शादी करना भी एक सामाजिक रीति है। लेकिन जो सुख बिस्तर पर तुमने मुझे दिया उसके बाद मुझे किसी अन्य स्त्री के साथ सुख अनुभव नहीं हुआ। मैं जानता हूँ कि बंटी मेरे बिस्तर को न सुखमय बना सकती है और न ही मेरे जीवन को। सच तो ये है मिसेज अंजली, मैं बंटी से नहीं लवी से शादी करना चाहता हूँ।”

“तुम बंटी से शादी करते हो या लवी से, क्या फ़र्क पड़ता है।” यह कहकर मिसेज अंजली मोरनी सी चाल से चलकर नर्म मुलायम गद्दो वाले बेड पर मोटे तकियों के सहारे अधलेटी अवस्था में होकर बोली, “कुणाल मेरी देह तो यूँ ही तड़पती रहेगी ना।”

“नहीं मिसेज अंजली। जबकि तुम जानती हो, मेरी शादी अगर बंटी से हुई तो फिर न तुम मेरा जिस्मानी सुख कभी ले पाओगी न मैं तुम्हारा। क्योंकि बंटी जैसी लड़की कभी नहीं चाहेगी कि दूसरी औरत उसके जीवन में दखल दे।”

“और जो तुमने लवी से शादी की तो भी सूरते हाल तो यही होगा।” कहकर मिसेज अंजली ने अधलेटी अवस्था में अपनी एक जांघ को दूसरी जांघ पर रखा।

“नहीं मिसेज अंजली आप तो जानती है कि लवी पहले भी सबकुछ जानते हुए चुप रही थी और फिर जब उसे पता चलेगा आपने उसकी सहायता मुझसे शादी के लिये किया है तो वो पूरे जीवन इस एहसान के तले दबी कुछ कह न सकेगी।”

मेरी बात सुनकर मिसेज अंजली कुछ देर सोचने की मुद्रा में चुप रही। और फिर अपनी गोरी मरमरी बाँहें मेरी ओर फैलाकर मुस्कुराते हुए बोली, “ओह कुणाल मेरे प्यारे कुणाल कम एण्ड फक मी।”

मैं बेड की पुश्त लगाये बैठा था और मिसेज अंजली मेरी नग्न जांघ पर अपना गाल रखे लेटी थी। आँखें बन्द किये हुए। सहवास के बाद मिसेज अंजली ने मेरे सीने में किसी बच्चे की तरह दुबकते हुए कहा, “कुणाल अब जबकि तुम सारी उम्र मेरे साथ यूँ ही हमबिस्तरी करने को रजामंद हो तो फिर तुम्हारे लिए इतना तो कर ही सकती हूँ जो बात मैंने तुम्हें बताया वो मैं प्रेस कान्फ्रेंस करके बात दूंगी। बस कुणाल एक वादा करो कि तुम यूँ ही मेरे पास आते रहोगे।” और जब मैंने कहा “वादा रहा’ तो वो मेरी नग्न जांघों पर अपने गाल और होठ रगड़ते हुए बोली, ‘थैंक्स कुणाल।’ और फिर मैंने जब कहा, “मिसेज अंजली अब मुझे जाना होगा।” तो वो बोली, “जाने से पहले एक बार और कुणाल।” और एक बार फिर हमने सहवास किया।

निकलते वक्त मैंने महसूस किया कि आज जो मैंने अपने मन के विपरीत जाकर मिसेज अंजली के बिस्तर को अपनाया है तो इसके बदले में अपनी जिंदगी से बंटी को जरूर दूर रख पाऊँगा। मैं सिर्फ मिसेज अंजली से ही नहीं मिला था। मैं संजू से भी मिला। मेरी और बंटी की शादी की बात सुनकर जब वो काफ़ी देर खामोश रही तो मैंने कहा, “संजू मैं भी तुम्हारी जिंदगी में रहा और बंटी भी तुम्हारी सहेली है तो इस लिहाज से तुम शादी की मुबारकबाद तो दे ही सकती हो। क्योंकि बंटी शादी करना चाहती है मुझसे। और मुझ जैसे दलित गरीब लड़के के साथ एक ब्राह्मण विधायक की लड़की शादी करे ये भी तो किस्मत की बात है संजू। वैसे बंटी तो तुम्हें शादी में जरूर बुलायेगी। आना जरूर।” यह कहकर मैं वहाँ से जाने लगा तो संजू ने कहा, “कुणाल अब जबकि तुम बंटी से शादी कर रहे हो तो फिर कभी मुझसे मिलने की कोशिश मत करना।”

उसकी बात सुनकर मैंने घूमकर अपनी सवालिया आँखें उस पर गढ़ा दी। “बंटी और मैं सहेलिया जरूर है पर हम में हमेशा एक कम्पटीशन रहा है। अब जबकि तुम बंटी से पहले मेरी जिंदगी में आये तो तुम्हें बंटी से शादी करते नहीं देख सकती।”

“तो क्या तुम मुझसे शादी करना चाहती हो?”

“नहीं तुम जैसे लड़के से शादी करने का ख्याल भी हम जैसी लड़कियां नहीं रखती।” उसने बेपरवाही से कहा, “जिसे तुम हकीकत समझ रहे हो कुणाल ख्यालों का बुलबुला साबित होगा।”

“मतलब?”

“मतलब तुम्हारी शादी बंटी से नहीं होगी।”

“ओह, वो तो फिक्स हो चुकी है अब किसी तरह न रुकेगी।”

“अच्छा तो इतना जान लो कुणाल तुम्हारी सामने संजू खड़ी है और तुम जानते हो मैं जो सोच लेती हूँ वही करती हूँ। अब मैं किसी तरह तुम्हारी शादी बंटी से न होने दूंगी।”

“और संजू तुम भी जान लो तुम्हारे सामने ये जो कुणाल खड़ा है वो अब पहले वाला कुणाल नहीं रहा।”

“ओह, तो चींटी के पर आ ही गये।”

“हाँ, और अब इन्हीं परों से उड़कर हनीमून पर जाऊंगा बंटी के साथ।” कहकर मैं हँस पड़ा।

मुझे यूँ हँसता देख उसका चेहरा गुस्से से लाल होता चला गया और फिर वो गरदन की नसों के खिंचाव के साथ बोली, “गेट आऊट फ्राम हियर”

संघर्ष और जिजीविषा के परिणाम देर-सवेर सुखकर होते हैं। मिसेज अंजली एक धनाढ्य और रसूख वाली महिला थी। उनके लिए प्रेस कांफ्रेंस बुलाना कोई बड़ी बात नहीं थी। बड़ी बेपरवाही से उन्होंने प्रेस कांफ्रेंस में बहुत कुछ बोला था। अदालत में मुझ पर झूठा केस लगाने से लेकर मिसेज रंजना के सेक्स रैकेट तक की उन्होंने बात की। इस रैकेट में शामिल तमाम अजीमोशान हस्तियों के उन्होंने नाम लिए। इन हस्तियों में विधायक पाण्डे, विधायक बिन्दर और कलेक्टर एम.पी. सचान जैसी हस्तियों के नाम भी शुमार थे। मिसेज अंजली सिंह जितनी खूबसूरत और धनाढ्य थी, उतनी ही होषियार भी थी। या फिर मेरे खिलाफ़ कोर्ट में मिली शिकस्त ने उन्हें सिखाया होगा इसलिये उन्होंने प्रेस कांफ्रेंस से पहले ही कुछ ईमानदार मंत्री और अधिकारियों को वो बातें और ठिकाने बात दिये थे, जहाँ से मिसेज रंजना और विधायक पाण्डे जैसे लोगों के काले कारनामे सही तरह बेपर्दा हो सके। प्रेस कांफ्रेंस में जो सबसे अहम बात मिसेज अंजली ने बताई वो थी, लुबना गज़ल रेस्तंरा में बीफ़ के खाने को प्लांट किया जाना। ये काम किया था मिस्टर बाबर ने। मिस्टर बाबर को मैं जानता था वो कई बार मिसेज रंजना

के फार्म हाउस पर हुई रेव पार्टियों में मेरे साथ था। मुझे ये बाद में ये भी पता चला कि वो लुबना के दूर के रिश्ते में भी था।

मिसेज अंजली के इतने बड़े खुलासे के बाद पूरे प्रांत में हड़कम्प मच गया। जगह-जगह छापेमारी हुई। मिसेज रंजना, विधायक पाण्डे, विधायक बिन्दर, आदि न सिर्फ सेक्स रैकेट चलाते थे बल्कि वो तस्करी, ड्रग्स, मानव तस्करी, गैर कानूनी हथियार के धंधे में भी संलिप्त पाये गये। विधायक पाण्डे और बिन्दर को उनकी पार्टियों ने तुरन्त बर्खास्त कर दिया और मिसेज रंजना के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर गाँव सप्तपुर में हुए अग्निकांड की धाराये भी पुलिस ने लगाई। मधु और कविता और इन जैसी तमाम लड़कियों के यौन शोषण के मामले की चार्जशीट बनाई गई। मिसेज अंजली के खुलासे ने इन भ्रष्ट अपराधियों पर लगाम कसने का काम किया। जब इधर ये सब कारवाई चल रही थी तो उधर मैं आभार व्यक्त करने के लिये उनके घर पहुँचा तो उन्होंने हँस कर मेरा स्वागत करते हुए कहा, “कुणाल मुझे यही उम्मीद थी। अब जबकि मैंने तुम्हारे कहने पर सच बोला है तो तुम भी ताउम्र अपना वादा निभाते रहोगे।”

“मिसेज अंजली क्या इस वक्त मेरा आपके पास आना ये सिद्ध नहीं करता कि मुझे अपना वादा याद है।”

मेरी बात सुनकर उन्होंने मुस्कराकर मेरी ओर अपना दायाँ पैर उठा दिया। और मैंने उनके दुधिया पाँव से जूती उतार कर किसी फूल की तरह उन्हें उठा लिया। मैं अभी अपने वादे की पहली किस्त अदा करके सुस्ता ही रहा था तभी डोर बेल बज उठी। मेरे पहलू में लेटी हुई मिसेज अंजली ने अलसाते हुए कहा, “कुणाल जरा देखो न, ये बेवक्त कौन आया है।”

दरवाजे पर एक पैतालिस से पचास साल की उम्र का एक व्यक्ति था जो सूट-बूट और टाई में। हम दोनों ने एक-दूसरे को प्रश्नवाचक निगाहों से देखा। मैं उससे पूछने वाला ही था कि वो कौन है तभी मेरे पीछे से मिसेज अंजली अपनी देह पर गाऊन संभालते हुए आई। और उसके गाल पर किस करके उसे भीतर लाते हुए बोली, “हाय हनी, आप इतनी जल्दी आ गये। आप तो नेक्स वीक आने वाले थे?”

“हाँ न्यूज़ पेपर में तुम्हारे चर्चे सुनकर रहा नहीं गया। तो प्रोग्राम रद्द करके आ गया।” वो सूटेड-बूटेड आदमी सोफे पर पसरते हुए बोला। फिर उसने अपनी गर्दन से टाई की नॉट ढीली करते हुए मेरी ओर इषारा करके मिसेज अंजली से पूछा, “डियर अगर मैं गलत नहीं हूँ तो यही कुणाल है?”

“ओह हाँ, सॉरी मैं आप लोगों को इन्द्रोड्यूज़ करवाना भूल ही गई। हाँ यह कुणाल ही है।” कहकर मिसेज अंजली मेरी ओर देखकर बोली, “और कुणाल ये है मेरे हसबैंड मिस्टर विजय सिंह।” जो मैं गुजरे वक्त में खड़ा होता तो यूँ एक गैर मर्द जिसके साथ अभी-अभी किसी औरत ने सेक्स किया हो उसे यूँ इतनी बेबाकी से अपने पति से मिलवाने पर मैं चौंक पड़ा होता। पर वक्त की गर्दिश ने मुझे ऐसे न जाने कितने अचम्भे दिखाये थे जिनके आगे ये अचम्भा थोड़ा कम हैसियत रखता था।

मिस्टर सिंह ने उठकर गर्मजोशी से मुझसे हाथ मिलाया और मुझे सोफे पर बैठने को कहा। मिसेज अंजली, मिस्टर सिंह के कहने पर किचन में चाय बनाने चली गई। पति की इतनी बात तो मानना तो शायद लाज़िमी ही था। सोफे पर बैठे-बैठे ही मिस्टर सिंह ने अपनी टाई उतारी और फिर कोट उतारते हुए बोले, “मिस्टर कुणाल आप अपने संघर्ष में कामयाब हो रहे हैं। बड़े चर्चे हैं आजकल आपके, बाधाई हो!”

मैं मुस्कराकर उनका अभिवादन करते हुए बोला, “जी बहुत आभार मिस्टर सिंह” फिर मैंने थोड़ा रूककर कहा, “मिस्टर सिंह वैसे बधाई के पात्र तो आप भी है।”

“वो कैसे?”

“मिसेज अंजली जैसी वाइफ के साथ इतनी खुश-मिज़ाजी से रहना भी एक कला है। और इस लिहाज से आप बधाई के पात्र बनते हैं।” मैंने उनकी ओर थोड़ा झुकते होंठों पर भेद भरी मुस्कान लाकर कहा। मेरी बात सुनकर मिस्टर सिंह थोड़ी देर तक मुझे घूरते रहे, और फिर वो अचानक हँस पड़े। कहकहा वाली हँसी। वो इतना तेज हँस रहे थे कि उसकी आवाज़ किचन में चाय बनाती मिसेज अंजली के कानों तक पहुँची और उन्होंने वहीं से पूछा, “अरे क्या हुआ डियर, क्यों इतना खुश हुआ जा रहा है?”

हँसी को काबू में करते हुए मिस्टर सिंह ने तेज आवाज़ में कहा, “नर्थिंग डार्लिंग, वी आर वेटिंग फॉर टी।”

“ओके. वेट ओनली फाइव मिनट्स” किचन से आवाज़ आई। पर इस वक्त मुझे मिसेज अंजली से ज्यादा मिस्टर सिंह में इन्ट्रेस्ट पैदा हो गया और मैं लगातार उन्हें सवालिया आँखों से देख रहा था।

“कुणाल खुश रहने के हजार तरीके है।” कहकर वो मेरे और करीब आकर बोले, “जानते हो कुणाल, मैं मिसेज अंजली के साथ जब होता हूँ तो क्या सोचता हूँ।”

“क्या?”

“यही कि वो किसी और की पत्नी है और जो मुझे अपनी मर्जी से शारीरिक सुख दे रही है। इसलिये तो मैं हमेशा खुश रहता हूँ।” मिस्टर सिंह ने मुझे मुतमुईन कर दिया था। उनकी बात में दम था। उन्हें दुख तो तब होता जब वो ये सोचते कि मिसेज अंजली उनकी वाइफ है और गैर मर्दों के नीचे बिछती है। और तब उनका जीवन जीना बहुत मुश्किल हो जाता। मिसेज अंजली चाय लेकर आ गई। मिस्टर सिंह को चाय देकर उन्होंने मेरी ओर कप बढ़ाया तो मेरी सोच का क्रम भंग हुआ। एक कप लेकर अब वो हमारे सामने वाले सोफे पर बैठ गई, जहाँ कुछ देर पहले मिस्टर सिंह बैठे हुए थे। चाय पीते हुए मेरे बगल में बैठे मिस्टर सिंह यूँ ही ठहाके लगा रहे थे। मिसेज अंजली, कभी मुझे देख रही थी तो कभी उन्हें। इस वक्त मुझे लगा कि मिसेज अंजली एक खूबसूरत कामुक चींटी है। और उनके सामने बैठे हम दोनों प्लेब्याया। पर अब मैं इन सबसे इतर अब अपनी की गई संधियों से थोड़ा निश्चित था।

परम्पराओं का विखण्डन

अब जब सब कुछ सही हो रहा था तो मैं फौरन लवी से मिलना चाहता था। मैं उसके पेंटिंग वर्कशॉप वाले फ्लैट पहुँचा। लवी वहाँ तन्हा एक पेंटिंग को पूरा करने में मसगूल थी। लवी को यूँ अपनी आर्ट में मसगूल देखकर मेरे दिमाग में कुछ खटका। पहली यह कि इस वक्त लवी की मम्मी-पापा कहाँ हैं? और दूसरी यह कि इतनी परेशानी के दौर में भी वो कोई पेंटिंग बनाने के लिए इतनी एकाग्र कैसे हो सकती है। मैं उससे अपनी इन जिज्ञासाओं के बारे में जब पूछना चाहा तो वो “प्लीज कुणाल दस मिनट रुको फिर बात करते हैं” कहकर वापस अपनी पेंटिंग में उलझ गई। अगर लवी मुझसे पूरे जीवन रुकने की बात कहती तो भी मैं मानने को तैयार था फिर ये तो बात केवल दस मिनट की थी।

लवी यकीनन मेरे दिल की बातें जान लेने का हुनर रखती थी। शायद इसीलिए उसने मेरी ठोड़ी अपनी रंग लगी उंगलियों से छूते हुए बोली, “मम्मी-पापा

घर गये है, उन्हें लुबना गज़ल की रीओपनिंग की तैयारी करनी है। वकील मलिक अंकल जल्द ही कोर्ट से बाकी अड़चनें दूर करवा लेंगे। और कुणाल अब जबकि आप सदियों की संधियाँ तोड़कर दलित होने की दासता से आज़ाद हो गये तो क्या तुम्हारी होने वाली पत्नी बेफिक्री से अपनी पेंटिंग नहीं बना सकती। देखो और बतावो ज़रा कैसी बन पड़ी है ये पेंटिंग।” यह कहकर लवी ने मेरा हाथ पकड़कर अपनी अभी ताजा बनाई पेंटिंग के सामने ले गई। उसने मुझे रंगों में उतार दिया था। ये पेंटिंग मेरी थी और साथ में लवी दुल्हन के लिबास में। न जाने कितनी देर तक मैं उस पेंटिंग में खोया रहा जिसमें मैं और लवी साथ-साथ थे।

लवी मेरा हाथ पकड़े खड़ी थी। सच कहूँ तो उस पेंटिंग की खूबसूरती बताता मेरे बस के बाहर की बात थी और इसीलिए मैंने लुबना से कहा, “लवी अब इतना समझ लो कि मैं तुम्हारी बनाई इस पेंटिंग की खूबसूरती का वर्णन करने में निःशब्द हूँ क्योंकि इतनी लगन और तन्मयता से बनाई गई पेंटिंग की खूबसूरती का बखान करने के शब्द मेरे पास है ही नहीं।”

लवी मेरी बात सुनकर, मेरे बगल से मेरे सामने आकर बोली, “पेंटिंग आपको पसंद आई ये आपकी आँखें कह रही है।” और फिर वो मेरे और करीब आकर मेरी शर्ट के बटन अपनी उंगलियों से पकड़ते हुए बोली, “क्या आप इस पेंटिंग की तरह ही मुझे अपनी जिंदगी में शरीके हयात के तौर पर कबूल करेंगे?” यह सुनकर मैंने धीरे से उसकी आँखों में झाँककर कहा, “यकीनन” और फिर थोड़ा मुस्कराते हुए बोला, “जो बंटी से बच पाया तो।”

मेरा मज़ाक शायद लुबना समझ गई इसीलिए वो थोड़ा शोख होते हुए बोली, “उससे तो आपकी पहली प्रेमिका संजू ही बचा लेगी आपको। अगर सारी चीजों के पर्दाफ़ाश होने के बाद भी बंटी ऐसी कोई ख़्वाहिश रखती है तो संजू ऐसा होने न देगी। जबकि मैं ये अच्छी तरह से जानती हूँ बंटी सिर्फ अपने पापा को मुसीबतों से बचाने के लिए ही आपसे शादी को तैयार हुई होगी वरना वह इस तरह की ख़्वाहिशमन्द नहीं हो सकती।”

“और मोहतरमा ये कैसे जानती है कि संजू बंटी को रोकेगी।”

“क्योंकि ऐसा मोहतरमा ने अपनी बातों में उसे उलझा कर करने के लिये उकसाया है।” लवी अब और भी षोख थी।

“और मोहतरम की संजू से इस मुलाकात की खबर मोहतरमा तक कैसे पहुँची?” मैंने भी शोखी से शोख लवी के गाल पर हल्की सी चिमटी लेते हुए कहा।

“विशेष से।”

“ओह तो जनाब अब तक जिन्दा है।” मैंने लवी के होठों से विरेश का नाम सुनकर कहा। वरना बीते दिनों कई दिनों से वो मुझे नज़र ही नहीं आया था।

“हाँ वो मेरा संवाददाता है।” लवी कहकर हँसते हुए वापस बोली “और तुम्हारा होने वाला रिश्तेदार।”

“मुझे कोई ऐतराज नहीं पर बृज काका को मनाना थोड़ा कठिन है।”

“जो मिसेज अंजली को वश में करके अपने और अपनी प्रेमिका के लिए न्याय अर्जित कर सकता हो उसके लिये ये कौन सी बड़ी बात होगी।” लवी ने यह कहते हुए मेरा हाथ पकड़ के मुझे सोफे पर बिठा दिया और खुद भी मेरे बगल में बैठ गई। लवी की बात सुनकर मैं थोड़ा संजीदा हो गया। मेरी संजीदगी भांपकर वो मेरे गाल और मेरा सिर सहलाते हुए बोली, “क्या सोचने लगे कुणाल?”

“यही कि विश्वास नहीं होता कि चीजें इतनी जल्द सुलझ जायेंगी। वो न्याय की देवी जो सदी दर सदी हमसे रूठी रही वो यूँ इस कदर हमारे लिये अपने दरवाजे खोल देगी। मिसेज अंजली सी मगरूर मुझ जैसे एक साधारण दलित लड़के के लिये अपने लोगों से बगावत कर देगी। न सिर्फ बगावत करेंगी बल्कि उन्हें उनके किये की सजा दिलाने में सबसे बड़ी सहायक सिद्ध होगी। सच कहूँ लवी तो ये सब मेरे लिये ख़्वाब सा है। बिल्कुल ही अकल्पनीय।” मेरी बात सुनकर लवी कुछ देर तक मुझे तकती रही और फिर मेरा सिर अपनी गोद में रखते हुए बोली, “कुणाल अगर आप ये सोच रहे हो कि चीजें जल्दी सुलझ गई तो ये याद रखो कि इन्हें सुलझाने के लिये सदियों से संघर्ष किया जा रहा था। जानते हो कुणाल कभी-कभी हमें लगता है, हमें सफलता आसानी से मिल गई बल्कि होता ये है कि उस वक्त हमें ये याद नहीं रहता कि इस जीत के लिए न जाने कितने लोगों ने अपना खून-पसीना एक किया है। इसलिए हमेशा याद रखो कि ये सिर्फ सफलता की शुरूआत है और हमें लगातार संघर्ष करते रहना है। और रही बात मिसेज अंजली की तो उन्होंने कोई बगावत नहीं की है बल्कि वो अपने दिल और शरीर की कामुकमता के आगे विवश है।”

लवी की प्यार भरी बात सुनकर मैं उसकी गोद से सिर उठकर उसे देखते हुए बोला, “अब तुम सच जानो लवी मुझे मिसेज अंजली का ख्याल भर ही डरा देता है। ये सोच कर मेरी रूह तक कांप जाती है कि आने वाले दिनों के लिए मैं तुम्हारा हिस्सा उन्हें देने का वादा कर चुका हूँ।” मेरी बात सुनकर लवी कुछ देर मुझे संजीदगी देखती रही और फिर हँस पड़ी। उन्मुक्त हँसी। वो हँसे जा रही थी और मैं उसको किसी पागल की मानिन्द देखे जा रहा था। जब उसने

हँसना बन्द न किया तो उसका चेहरा अपनी हथेलियों से पकड़ते हुए बोला, “लवी यहाँ मेरा दिल मिसेज अंजली के बारे में सोच-सोच के लरजता है और तुम हो जो बेपरवाह हँसे जा रही हो।”

“कुणाल अब तो तुम संधियां तोड़ने की कला सीखने लगे हो तो फिर मिसेज अंजली से की संधि के भी मायने क्या है।” लुबना अपनी हँसी रोक कर बोली।

“मतलब?”

“मतलब ये कुणाल कि भूल जाओ, आपने मिसेज अंजली से कोई वादा किया था।”

“ओह .. ठीक है।” मैं उसकी बात समझते हुए बोला, “मतलब शादी के बाद हमारे बीच कोई और नहीं। तो क्या हमें शादी तैयारी शुरू कर देनी चाहिये।”

“हाँ-हाँ बिल्कुल, क्यों नहीं! पर उससे भी पहले हमें कुछ और तैयारी कुछ और काम करने हैं।”

“वो कौन से?”

“आपको लेकर चल रहे धरना प्रदर्शन को विराम देना है और मुझे ‘लुबना गज़ल’ को रीस्टार्ट करना है।” कहकर लवी सोफे से उठ गई। लवी का ये प्लैट अब सीक्रेट नहीं रहा जिसका पता कोई नहीं जानता हो। हमारे बाहर निकलते ही कुछ पत्रकारों ने हमें घेर लिया। उनमें से कुछ अखबार के तो कुछ टीवी के थे।

तमाम सवालियों और संघर्ष की बातों के बाद एक पत्रकार ने लुबना से सवाल किया, “मैडम एक खबर ये भी है कि आप और कुणाल शादी करना चाहते हैं।”

“हाँ बिल्कुल” लवी बेहिचक बोली।

“पर क्या आपके मजहब वाले इसे कबूल करेंगे?” उस पत्रकार के इस अगले सवाल पर लुबना थोड़ा झिझकी तो मैंने जवाब देते हुए कहा, “इसके लिये मैं इस्लाम कबूल करूँगा।” मेरा जवाब सुनकर वो पत्रकार के होंठ से स्वर फूट पड़े, “ओह, प्यार कुछ न कुछ बलिदान तो मांगता है।” तभी लवी ने उनींदी आँखों से मुझे देखा और मेरा हाथ पकड़ के उन पत्रकारों के घेरे से निकलकर मुख्य सड़क पर आ गई। वो पत्रकार जब तक हमारे पास पहुँचते लवी ने सड़क से गुजर

रहे ऑटो को एक हाथ से रूकने को कहा। हमारे ऑटो में बैठते ही वो चल पड़ा। लवी अभी भी मेरा हाथ पकड़े हुए थी।

मैं जब सचिवालय के सामने अपने धरने वाले पंडाल में पहुँचा तो देखा, बृज काका जोर-जोर से कुछ चिल्ला रहे हैं और उनके सामने विरेश सिर झुकाये बैठा है। वहीं कविता सहमी सी बैठी कभी अपने पिता बृज काका और कभी अपने प्रेमी विरेश को देख रही थी। मैं उनके पास निःशब्द बैठ गया था। मुझे देखते ही बृज काका बोले, “कुणाल बाकी सब ठीक है पर मुझे ये मंजूर नहीं।”

“क्या, आपको क्या मंजूर नहीं बप्पू काका?” मैंने बारी-बारी से कविता और विरेश पर नज़र डाल कर बृज काका की धंसी आँखों पर आँखें गड़ाते हुए कहा।

“मैं अपनी बेटी की शादी किसी मेहतर से नहीं कर सकता।” बृज काका ने अपनी बात बेबाकी से कही। ये जाने बिना कि उनकी बात सुनकर विरेश को कितना बड़ा धक्का लगेगा। विरेश को धक्का लगा भी। मैंने उसका चेहरा देखकर महसूस किया।

“फिर हममें और ब्राह्मन में क्या फ़र्क रह जायेगा काका?”

“पर हममें और मेहतर-भंगी में भी तो फ़र्क है।”

“पर विरेश और कविता एक दूसरे को चाहते हैं।”

“तो तुम क्या चाहते हो मेरी बेटी किसी मेहतर भंगी के घर जाकर गू-मूत साफ करे .. न हमारी बिटिया ये न करेगी। तुम चाहो तो ये काम की खातिर अपनी बहन को भेज दो।” बृज काका की बात सुनकर विरेश वहाँ से उठकर जाने लगा तो मैंने उसका हाथ पकड़ लिया। उसने पलटकर मुझे देखते हुए कहा, “कुणाल मैं कविता को चाहता हूँ उससे शादी भी करना चाहता हूँ। पर ये जातिसूचक अपमानजनक बातें अब सही नहीं जाती। ब्राह्मन, ठाकुर, बनिया की गालियाँ क्या कम थी जो अब चमार भी हमें गारियाने लगे।” विरेश का दर्द सुनकर मैं उसके कंधे दबाते हुए बोला, “तुम्हारा दर्द जानता हूँ मेरे भाई। और हमें यही संघर्ष तो करना है। धैर्य रखो मित्र हम यकीनन अपने संघर्ष में कामयाब होंगे। और देखो हमारी कामयाबी की राह खुलने भी लगी है।”

मैंने हाथ पकड़ के विरेश को बिठा दिया वो मेरी आँखों में अपने लिये सम्मान और मित्रता का भाव देखकर बैठ गया। कुछ देर रूककर मैंने वहाँ मौजूद

सभी लोगों को देखा। अम्मा-दादा, मधु, रक्ष, विरेश, कविता मेरे गाँव के तमाम दलित और फिर बृज काका पर अपनी नजरें ठहरा कर मैंने कहा, “अब जबकि हमें भंगी, मेहतर और **धानुकों** को जातिसूचक गाली देने में कोई परहेज नहीं तो फिर हमें सवर्णों की गालियां सुनने में भी कोई परहेज नहीं करना चाहिये। अब जबकि हम भंगी मेहतर आदि से जाति के नाम पर विवाह सम्बंध नहीं बना सकते तो हमें सवर्णों को इस बात के लिये कोसना नहीं चाहिये। हम जबकि खुद ही जाति की जहिलता के गुलाम हैं तो फिर हमें सदियों से सवर्णों द्वारा गुलाम बनाये रखने पर कोई गिला-शिकवा नहीं करना चाहिये। ..और बृज काका जब हमसे जबरन सवर्णों ने अपना गू-मूत उठवाया तो फिर जरूरत पड़ने पर अपने घर में गू-मूत उठाने में भी कोई बुराई नहीं है। और अब सच जानो तो गू-मूत उठाने की बात मुहवारों में ही रह गई है।” मैंने थोड़ा रूककर अपने आँखों की दिशा बृज काका से हटाकर कविता की ओर करते हुए कहा, “और फिर भी मैं इस शादी का समर्थन तब करूँगा जब कविता और विरेश दोनों इसके लिये रजामंद हो क्योंकि शादी होने की मेरी नज़र में ये पहली शर्त है। क्यों कविता तुम तैयार हो विरेश से शादी करने को?” मेरी बात सुनकर कविता अपनी जगह पर खड़े होकर धीरे से बोली, “हाँ, पर पापा के कहे बिना नहीं।”

कविता की बात सुनकर बृज काका थोड़ी देर हम सबको देखते रहे चुपचाप। फिर वो बोले, “शायद हमारे उत्थान के लिये ये भी है। मुझे ये मंजूर है।” बृज काका की बात सुनकर न सिर्फ कविता विरेश के चेहरे चमक गये बल्कि हम सब खुशी से झूम उठे।

कविता ने जब मेरे पास आकर धीरे से लरजते हुए कहा, “भाई मुझे माफ कर दीजिये।” तो मैंने उसका सिर सहलाकर उसका हाथ विरेश के हाथ में दे दिया। जब कविता और विरेश, बृज काका और चाची से आशीश ले रहे थे तब मैंने देखा आन्दोलन में मौजूद हमारे साथी खुशी से लड्डू खा रहे थे। ये लड्डू वहाँ पहुँचे मंत्री दिव्यप्रकाश शाक्य द्वारा बंटवाये जा रहे थे। मुझ देखकर वो मेरे पास आ गये। मैंने जैसे ही हाथ जोड़कर उनका अभिवादन किया तो मेरा हाथ पकड़कर वो बोले, “कुणाल अब आप सबका सत्याग्रह समाप्त हो चुका है और अपराधियों को बहुत जल्द अदालत सजा सुनायेगी तो फिर हम चाहते हैं कि आप सब ये आन्दोलन वापस ले लें। हमने आप सबके पुर्नवास की व्यवस्था कर दी है।” फिर दिव्यप्रकाश जी मेरे मम्मी-पापा से मिले। और मधु का सिर सहलाकर मेरे पापा से बोले, “भईया अब जबकि कुणाल सड़ चुकी परम्पराओं को तोड़ने का काम शुरू

कर दिया है तो फिर मैं आप सबसे हाथ जोड़ के मधु का हाथ अपने बेटे के लिये मांगता हूँ।”

मेरे पापा को तो कभी ये उम्मीद भी नहीं हो सकती थी कि राज्य का मंत्री उनकी शोषित बेटी का हाथ भी मांग सकता है। उन्होंने अचकचाकर मेरी ओर देखा तो मैं बोल पड़ा, “मंत्री जी ये तो हमारे लिए बेहद सौभाग्य की बात होगी पर इसमें मधु की रजामंदी भी जरूरी है।”

“हाँ जरूर” कहकर जब दिव्यप्रकाश जी मधु की ओर देखा तो वो हया से आँखें झुकाये खड़ी थी। और जब हम अपना पंडाल समेट रहे थे तब वहाँ दो कार आकर रूकी। एक से वकील सफ़दर अंकल और फ़राज़ उतरे तो दूसरे से लुबना अपने अम्मी-अब्बू के साथ। मैंने सफ़दर अंकल, तुफ़ैल अंकल और आंटी के पाँव छुए। लुबना की अम्मी ने मेरा माथा चूमकर कहा, “कुणाल बेटा मैं गलत थी। तुम्हें लुबना से शादी के लिए मज़हब बदलने की जरूरत नहीं। तुम खुद अपने आपमें एक मज़हब बन गये हो।” उनकी बात सुनकर मैंने कहा, “आंटी जी मेरे लिये मज़हब से बड़ी इंसानियत, वसूल और मुहब्बत है। और आप सबकी मुहब्बत और आशीष के बाद मेरे लिये मज़हब के मायने ही बदल गये हैं। अब मैं हिन्दू रहूँ या मुसलमान रहूँ या कुछ और.. क्या फ़र्क पड़ता है।” मेरी बात सुनकर उन्होंने वापस मेरा माथा चूम लिया।

मैंने देखा लुबना मधु और कविता से मिल रही थी। मैं उसके पास चला आया। मुझे देखकर लवी बोली, “कामयाबी मुबारक हो कुणाल!”

“तुम्हें भी लवी।” मेरी बात पूरी होते ही लवी ने फ़राज़ को बुला लिया जो गाँव वालों से बात कर रहा था। उसके पास आने पर वो बोली, “फ़राज़ कल के अखबार में कुणाल के मज़हब बदलने वाली बात का खण्डन छाप देना।”

“हाँ-हाँ बिल्कुल!” फ़राज़ ने कहा। तो मैंने विषय को बदलते हुए कहा, “पर लवी तुम तो ‘लुबना गज़ल’ की ओपनिंग करने जा रही थी। फिर यहाँ क्यों आई?”

“वो अम्मी-अब्बू बोले कि आपको भी साथ होना चाहिये।”

“लेकिन मैं न आ सकूंगा, मुझे कहीं और जाना है।”

“कहाँ?”

“विधायक बिन्दर वाले फ्लैट पर..” मैंने गंभीर होने का नाटक करते हुए कहा।

“वहाँ क्यों?” वो उतावलेपन से बोली।

“स्वीट सिक्सटीन का लेटर ढूँढ़ने।” मैं हँस पड़ा। मेरी बात पर वो मुँह फुलाकर बोली, “कोई जरूरत नहीं वहाँ जाने की।”

“पर शायद वहाँ स्वीट सिक्सटीन ने मेरे लिए कोई लेटर छोड़ा हो।” मैंने शरारत की।

“हाँ छोड़ा था पर मैं ले आई।” कहकर उसने अपनी जींस की जेब से एक लिफ़ाफ़ा निकाल कर मुझे दे दिया।

मैंने देखा उस पर शुरूआत में लिखा था - To . कुणाल

और आखिर में - From . स्वीट Sixteen ‘शिवानी’

“अब शिवानी कौन है?” मैं हड़बड़ाया।

“वही जो आपके साथ नैनीताल के होटल में पत्नी की तरह रही।

“ओह लवी तुम।” मैंने कहकर उसका हाथ पकड़ा।

“हाँ कुणाल, जब आप इन सारी समस्याओं का ज़हर पीकर नीलकंठ बन रहे हैं तो आपकी पत्नी शिवानी ही होगी।” कहकर उसने जब मेरी आँखों में झांका तो मुझे मेरे सामने मेरा सम्पूर्ण जीवन बदल देने वाली देवी खड़ी दिखाई पड़ी।

मैंने ‘शिवानी’ कहकर उसे हल्के से गले लगा लिया। तभी सफ़दर के कैमरे की क्लिक गूँजी और हम एक-दूसरे को देखते हुए लजा कर अलग हो गये।
